ECCE

उड़ान

हस्तपुस्तिका

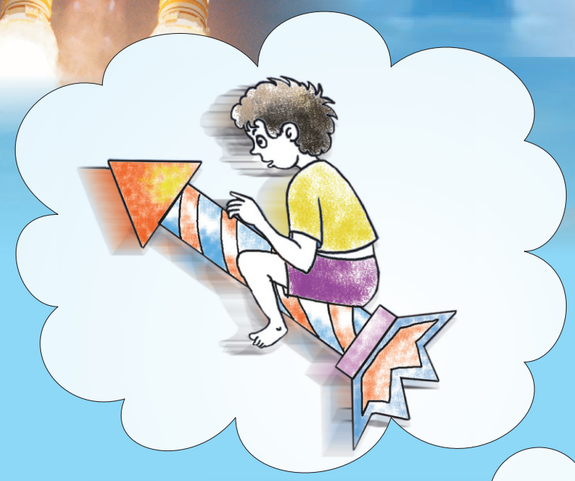

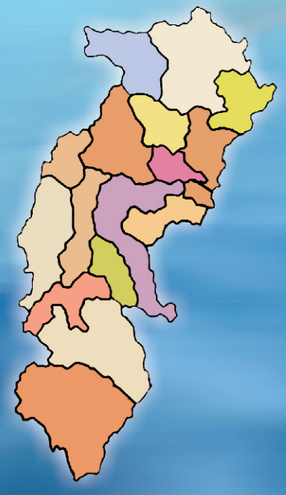

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् शंकर नगर, रायपुर, छत्तीसगढ़

State Council of
Educational Research & Training,
Chhattisgarh, Raipur (C.G.)

मिशन स्टेटमेन्ट

हर प्रशिक्षण प्रभावी प्रशिक्षण

विजन 2017

राज्य के सभी बच्चों का गुणवत्तायुक्त शिक्षा के माध्यम से सर्वांगीण विकास। सभी विद्यालयों एवं सहयोगी संस्थाओं को अपने क्षेत्र की शैक्षिक समस्याओं को हल करने हेतु सक्षम बनाना शिक्षक प्रशिक्षकों को कर्तव्यनिष्ठ, स्वप्रेरित प्रेरणास्रोत तथा बच्चों के प्रति संवेदनशील एवं व्यवहारिक समझ के साथ विषयवस्तु के आनंददायी व प्रभावी प्रस्तुतीकरण के समन्वय स्थापित करना, जिससे विद्यालय एक सामुदायिक केन्द्र के रूप में विकसित हो।

--o--
Office of the Director, State Council of Educational Research & Training,
Chhattisgarh, Raipur (C.G.)

आभार

शिशु शिक्षा एवं देखभाल कार्यक्रम में निर्मित सामग्री एवं हस्त पुस्तिका के संशोधन में महिला एवं बाल विकास विभाग व अन्य विभाग के अधिकारियों के सहयोग, सुझाव एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुए, जिनका परिषद् अत्यंत आभारी है।

- श्री नंद कुमार (आई.ए.एस.), महाराष्ट्र
- श्री के.आर. पिस्दा (आई.ए.एस.), कलेक्टर, कांकेर/मिशन संचालक रायपुर
- श्री वेंकटेश मालूर, यूनीसेफ दिल्ली
- श्रीमती अर्चना राणा, संचालक एस.आर.सी. रायपुर
- श्री ऋषभ हेमाणी, यूनीसेफ रायपुर
- श्रीमती पी.सलाम, उपसंचलाक, संचालनालय, महिला बाल विकास
- श्री आंनद प्रकाश क्रिस्पोट्टा, उपसंचालक, राज्य संसाधन केन्द्र, रायपुर
- श्री समीर पांडे, सहा.संचालक, राज्य संसाधन केन्द्र, रायपुर
- सुश्री गुरप्रीत कौर हुरा, सहा.संचालक, संचालनालय, महिला बाल विकास, रायपुर
- श्री एस.के.चौबे, जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला बाल विकास, रायपुर
- सुश्री प्रियंका ठाकुर, जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला बाल विकास, दुर्ग
- श्रीमती हेमलता मिश्रा, जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला बाल विकास, कोरबा
- श्री आर.जे. कुशवाहा, उपसंचालक, क्षेत्रीय महिला प्रशिक्षण संस्थान, बिलासपुर
- श्रीमती मृदुला ऋषि, परियोजना अधिकारी, कोरबा
- श्रीमती पी.लकड़ा, परि.अधि. महिला बाल विकास, कोरिया
- श्री सी.एल. भूआर्य, परि.अधि. महिला बाल विकास, कांकेर
- श्रीमती गीता मुंडेजा, प्राचार्य, आँगनबाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र, माना कैम्प
- सुश्री डी.सिंह, एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर

ECCE उड़ान

शिशु शिक्षा एवं देखभाल

(आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के लिए)

हस्त पुस्तिका

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
शंकर नगर, रायपुर

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

सुधीर अग्रवाल (आई.एफ.एस.)
विशेष सचिव, स्कूल शिक्षा, छ.ग.शासन,
संचालक एस.सी.ई.आर.टी. रायपुर

सचिव
महिला एवं बाल विकास विभाग
छ.ग.शासन रायपुर

सहयोग

एन.पी.कौशिक
संयुक्त संचालक
एस.सी.ई.आर.टी, रायपुर

श्री शेषागिरी
शिक्षा अधिकारी
यूनीसेफ, रायपुर

समन्वय

अनुपमा नलगुंडवार
प्रकोष्ठ प्रभारी
SCERT, Raipur

सुनील मिश्रा
(राज्य स्त्रोत व्यक्ति), रायपुर
SCERT Raipur

सामग्री निर्माण एवं लेखन समूह

मधु दानी, तारकेश्वर देवांगन, पुरूषोत्तम सोनी, योगिता साहू, डिम्पल कश्यप, आशा जाधव, सृष्टि शेट्ये, विनीता श्रीवास्तव, ममता तोमर, कविता धनकर, सुधा वर्मा, चंचल ठाकुर, मालती साहू, कुंती साहू, देविका रानी साहू, चित्रभान साहू, फागेश्वरी साहू

डिज़ाईनिंग, ले–आउट एवं टंकण

कुमार पटेल, राजकुमार चन्द्राकर

प्राक्कथन

शिशु का विकास एवं सीखना साथ–साथ होता है। विकास के सभी पहलू संज्ञानात्मक, व्यक्तिगत सामाजिक एवं संवेगात्मक, शारीरिक, भाषायी एवं सृजनात्मक विकास एक दूसरे से संबंधित हैं। इनका विकास भी साथ साथ होता है। विकास का प्रत्येक पहलू एक दूसरे के लिए पूरक होता है। यदि गीत से बच्चे की भाषा विकसित होती है तो गीत के पदों से संज्ञानात्मक विकास भी होता है। यह सारी गतिविधियाँ हम पारम्परिक तरीके से करते हैं। इन्हीं गतिविधियों को यदि वैज्ञानिकता का पुट दे दिया जाए तो बच्चों का समुचित शारीरिक, शैक्षिक और मानसिक विकास किया जा सकता है।

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने शिशुओं की बाल सहज गति–विधियों को वैज्ञानिकता का पुट प्रदान करने हेतु शिशु शिक्षा एवं देखभाल के अंतर्गत पाठ्यक्रम का विकास किया है। विकसित पाठ्यक्रम के लिए गतिविधि आधारित पाठ्यसामग्री का विकास भी किया है। विकसित सामग्री को थीम आधारित बनाया गया है। थीम या विषय का चुनाव बच्चों के क्रियाकलापों एवं उनके परिवश के आधार पर किया गया है। थीम को इस तरह व्यवस्थित किया गया है, जिससे बच्चों की समझ को गति प्रदान की जा सके। ऐसी कुछ थीम के समूह बनाये गए हैं, उन्हें थीम वेब का नाम दिया गया है। थीम वेब के आधार पर सीखने–सिखाने की प्रक्रिया को ज्यादा मजबूत किया जा सकता है।

थीम के आधार पर बच्चों की आवश्यकता एवं रूचि के अनुरूप चित्रात्मक कार्डों का विकास किया गया है। बहुरंगी कार्डों से आँगनबाडी कार्यकर्ता के साथ–साथ बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित होगी। कार्यकर्ताओं को गतिविधियाँ कराने में आसानी होगी। कार्ड अवलोकन, खेल, अभिनय, कहानी आदि पर आधारित हैं। जिससे बच्चे खेल–खेल में आसानी से सीख जायेंगे। इन कार्डों के प्रयोग से बच्चों में तर्क विवेचन, कल्पना–शीलता, सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता का विकास होगा। इन कार्डों के माध्यम से कार्यकर्ता बच्चों को स्वयं सीखने के लिए प्रेरित कर सकेंगी। जिससे बच्चों का आत्मविश्वास बढ़ेगा। यही आत्मविश्वास बच्चों के सर्वांगीण विकास में मदद कर उन्हें देश के सामाजिक और आर्थिक विकास में योगदान देने के लिए तैयार करेगा।

विभिन्न शोधों से ज्ञात हुआ है कि गर्भावस्था से तीन वर्ष की आयु तक बच्चों के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत हिस्सा विकसित हो जाता है। मस्तिष्क का उचित उपयोग होने पर ज्ञानतंतु पूर्ण विकसित होते हैं और सक्रिय रहते हैं, अन्यथा ज्ञानतंतु टूटते जाते हैं और निष्क्रिय हो जाते हैं। इस महत्वपूर्ण समय में बच्चों को संस्थागत मदद नहीं मिल पाती। इसी कारण से किशोर–किशोरियों को विवाह पूर्व शिशु शिक्षा एवं देखभाल संबंधी प्रशिक्षण पर भी बल दिया जा रहा है। जनजागरण द्वारा पालकों को प्रशिक्षित करने का प्रयास भी किया जा रहा है।

ताकि बच्चों के विकास के लिए पालकों को जागृत किया जा सके। अच्छे माता–पिता बनने के लिए श्रेष्ठ पालकत्व पर भी ध्यान दिया गया है। इस तरह शिशु शिक्षा एवं देखभाल के लिए सभी स्तरों पर सघन एवं सुनियोजित प्रयास किया गया है।

बच्चों के विकास में कार्यकर्ता, समाज और माता–पिता की भूमिका को ध्यान में रखते हुए परिषद् ने एक संपूर्ण पैकेज का विकास किया है। जिसे **उड़ान** नाम दिया गया है। उड़ान, कार्यकर्ता तथा माता–पिता को अपने बच्चों के विकास में अपनी भूमिका समझने में उनकी मदद करेगी। इससे कार्यकर्ताओं में आत्मविश्वास और आवश्यक कुशलताओं का निर्माण भी होगा। बच्चों के समुचित विकास के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करने, सुनियोजित वैज्ञानिक वातावरण देकर बच्चों में आत्मविश्वास जगाने के लिए उड़ान में संपूर्ण संभावनाएँ मौजूद है।

परिषद् द्वारा तैयार थीम बेस्ड सामग्री की 30 आँगनबाड़ी केन्द्रों में पॉयलेटिंग की गई है। मॉनीटरिंग और समीक्षा के उपरातं फीड बैक के आधार पर कार्डों में संशोधन एवं परिवर्धन किया गया। संशोधित सामग्री को प्रदेश के 40 विकास खंडों के 10,000 आँगनबाड़ी केन्द्रों में लागू किया जा रहा है।

सामग्री के विकास में यूनीसेफ रायपुर एवं महिला बाल विकास विभाग के सहयोग के प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ। पद्धति, प्रक्रिया, सामग्री के निर्माण में संबंधित व्यक्तियों की भूमिका, सहयोग तथा सहायता निरंतर वांछनीय है। इतने अनुभवों पर आधारित **उड़ान** निश्चित ही अपने उद्देश्यों में सफल होगी, ऐसा मेरा विश्वास है।

सामग्री के संशोधन एवं परिवर्धन हेतु प्राप्त सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा ।

संचालक

अनुक्रमणिका

क्र.	विषयवस्तु	पृष्ठ क्रमांक
1.	ई.सी.सी.ई. का परिचय	1–4
2.	आँगनबाड़ी केन्द्र का वर्तमान परिदृश्य	5–7
3.	पाठ्यक्रम	8–10
4.	शिशु के विकास की प्रक्रिया	11–20
5.	विकास के क्षेत्रः– संज्ञानात्मक विकास	21–34
6.	शारीरिक विकास	35–36
7.	भाषायी विकास	37–40
8.	व्यक्तिगत, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास	41–43
9.	सृजनात्मक विकास	44–46
10.	शिशु शिक्षा का स्वरूप	47–51
11.	थीम	52–70
12.	थीम वेब	71–76
13.	सामग्री प्रबंधन एवं रखरखाव	77–81
14.	जन्मतिथि चार्ट	82–83

15.	उपस्थिति चार्ट	84–86
16.	दिन, माह, वर्ष चार्ट	87
17.	मौसम चार्ट	88
18.	शिक्षण विधियाँ	89–93
19.	श्रेष्ठ पालकत्व	94–96
20.	पालकत्वः– वर्तमान परिदृश्य	97–105
21.	व्यक्तिगत विभिन्नताएँ	106–107
22.	सामुदायिक सहभागिता	108–112
23.	विवाहपूर्व शिक्षण	113–119
25.	खेल	120–126
26.	अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें	127–133
27.	जीवन विद्या	134–135
28.	हमारी विकास यात्रा	136–138
29.	कविता–कहानी	139–166
30.	गीत	167–168

ई.सी.सी.ई. का परिचय

शिशु शिक्षा एवं देखभाल

(EARLY CHILDHOOD CARE AND EDUCATION)

ई.सी.सी.ई. का शाब्दिक अर्थ है शिशु शिक्षा एवं देखभाल। शिशु शिक्षा का तात्पर्य विभिन्न खेल पद्धतियों के माध्यम से शिशुओं का स्वाभाविक रूप से शैक्षिक विकास करने से है। शिशु शिक्षा से शिशुओं का संज्ञानात्मक, व्यक्तिगत सामाजिक एवं संवेगात्मक, शारीरिक, भाषायी एवं सृजनात्मक विकास होगा। देखभाल का तात्पर्य बच्चों के उचित पोषण से है।

बच्चों के जीवन का नक्शा 5 साल तक बन जाता है। वह उसी नक्शे के आधार पर अपना जीवन चलाता है। ठीक उसी प्रकार जैसे कि मकान बनाने के पहले नींव बनाई जाती है। नींव मजबूत होगी तो मकान अच्छा बनेगा। उसी प्रकार बच्चे को अच्छा बनाना है तो उसके प्रारंभिक 5 वर्षों में जो उसके जीवन की नींव हैं, में उसे सीखने का समुचित अवसर उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

शैशवावस्था का समय महत्वपूर्ण है। हमें शिशुओं को विभिन्न प्रकार के अवसर, उपलब्ध करने चाहिए। शिशुओं की स्वतः स्फूर्त क्षमता, तीव्र अवलोकन क्षमता को विकसित करने के लिए कई गतिविधियाँ कराना चाहिए। शिशु शिक्षा संपूर्ण जीवन की नींव है।

शिशु शिक्षा एवं देखभाल क्या है ? आइए देखें।

- शिशु शिक्षा खेल की पद्धति है, जिसमें देखभाल के साथ गतिविधियों के द्वारा शिशुओं के संज्ञानात्मक, व्यक्तिगत सामाजिक एवं संवेगात्मक, शारीरिक, भाषायी एवं सृजनात्मक विकास को परिपुष्ट किया जाता है। खेल पद्धति से तात्पर्य है कि खेलने के समय ही शिशुओं को विभिन्न सूचनाओं/जानकारी से अवगत कराना। इस अवस्था में शिशुओं के शरीर एवं माँसपेशियों का विकास तेजी से होता है। अतः शिक्षा को इस तरह के क्रियाकलापों के साथ जोड़कर गतिविधि/खेल कराएँ तो उनकी शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति, जिज्ञासा की संतुष्टि और मनोरंजन भी साथ–साथ होता है। जैसे– बिल्लस से शारीरिक विकास के साथ–साथ अंकों का ज्ञान भी होता है।
- शिशु शिक्षा शिशुओं में वैज्ञानिक चिंतन द्वारा व्यावहारिक ज्ञान के विस्तार की प्रक्रिया है। शिशु मनोविज्ञान से पता चलता है इस अवस्था में शिशुओं में अवलोकन एवं अनुकरण की क्षमता तीव्र होती है। अतः शिशुओं को जितना व्यवहारिक ज्ञान दिया जाए उससे मस्तिष्क में निहित ज्ञान का क्षेत्र अधिक विकसित होता है। जैसे– बिना

गिराये एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी डालना चौड़े मुँह के बर्तन से सँकरे मुँह के बर्तन में पानी डालना। इससे उन्हें स्थान घेरने संबंधी, ज्यामितिय ज्ञान होगा।

- शिशु शिक्षा मूलतः खेल ही है, जो बच्चों की कल्पनाशीलता, तार्किक क्षमता, रचनात्मकता एवं सकारात्मक सोच को विकसित करते हैं। शिशुओं की कल्पना शक्ति, तर्क शक्ति या विकास करना शिक्षा के अंतर्गत आता है। हम ऐसे अवसर देता चाहते हैं। जिससे शिशु तर्क करें, कल्पना की उड़ान भरें। साथ ही उनमें निर्णय लेने की क्षमता विकसित हो तथा सही गलत की पहचान करने की शिक्षा प्राप्त हो। जैसे– अगर पेड़ चलते तो क्या होता?
  - यदि सभी जगह का कचरा साफ हो तो क्या होगा।
  - यदि सभी जगह पानी ही पानी हो तो क्या होगा?

इसमें शिशुओं की रचनात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने हेतु अनेक तरह की गतिविधियाँ हैं – जैसे– अंगूठे से छापना, पत्तियों से चित्रकारी, विभिन्न आकृतियों से चित्र निर्माण।

- शिशु शिक्षा व्यवहारिक ज्ञान से औपचारिक शिक्षा की ओर ले जाने की प्रक्रिया है। वास्तव में हम शिशुओं को उनके अनुभवों के आधार पर व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं। ऐसा करते हुए हमारा उद्देश्य उन्हें धीरे–धीरे औपचारिक शिक्षा की ओर ले जाना रहता है। वे इन दो तीन वर्षों में या छः वर्ष के होते तक औपचारिक शिक्षा जो हमारे प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम में है उसकी पूर्व तैयारी करते हैं।

- शिशु शिक्षा, प्राथमिक शिक्षा हेतु आधार प्रदान करती है। शिशु शिक्षा में संख्या पूर्व अवधारणा जैसे– कम–ज्यादा, छोटा–बड़ा से संख्या संबंधी अवधारणा की समझ बनाना तथा चित्र से शब्द चित्र और शब्द चित्र से वर्ण पहचानने की प्रक्रिया ही प्राथमिक शिक्षा का आधार तैयार करती है। शिशु शिक्षा सामग्री में ऐसी अनेक गतिविधियाँ शामिल हैं जो शिशुओं को प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने हेतु कुशल बनाती है।

आइए, इन तथ्यों को विस्तार से जानें :–

1. देखभाल

देखभाल का तात्पर्य पोषण के साथ शिशु के शारीरिक विकास एवं संवेगात्मक विकास से है। इस प्रकार होने वाले परिवर्तन पर उचित दृष्टि रखना एवं उसकी सही दिशा में विकास

सुनिश्चित करना देखभाल के अंतर्गत आता है। आँगनबाड़ी कार्यकर्ता का दायित्व है कि शिशु में होने वाले विकास का वैज्ञानिक विधि से देखभाल करें।

देखभाल के अंतर्गत निम्नलिखित क्षेत्र हो सकते हैं :–

1. पूरक पोषण आहार
2. टीकाकरण
3. स्वास्थ्य जाँच
4. संदर्भ सेवा
5. वृद्धि निगरानी, प्रोत्साहन एवं स्वास्थ्य पोषण
6. शाला पूर्व शिक्षा

2. शिशु शिक्षा

वास्तव में शिशु जब माँ के गर्भ में होता है तभी से उसके ज्ञान तन्तुओं का विकास होने लगता है। अतः इन ज्ञान तंतुओं को सक्रिय रखने हेतु शारीरिक कसरत के साथ–साथ मानसिक कसरत की भी आवश्यकता होती है। अतः हम कह सकते हैं कि शिशुओं की शिक्षा यही से प्रारंभ हो जाती है। (तीन वर्ष के होते तक) शिशुओं के मस्तिष्क का विकास लगभग 80 प्रतिशत हो जाता है। अतः शिशु शिक्षा गर्भ से ही प्रारंभ हो जानी चाहिए, जिससे शिशुओं का बौद्धिक विकास उचित एवं सही दिशा में हो सके। शिक्षा के अभाव में शिशुओं के मस्तिष्क के ज्ञान तंतु निष्क्रिय हो जाते हैं। जिसमें वे अपनी मानसिक क्षमताओं का पूर्ण प्रदर्शन नहीं कर पाते। अतः आँगनबाड़ी केन्द्र में शिशु शिक्षा की उचित व्यवस्था की जानी चाहिये।

शिशु शिक्षा को विकास के दृष्टिकोण से निम्नलिखित पाँच क्षेत्रों में बाँटा गया है :–

1. संज्ञानात्मक विकास
2. व्यक्तिगत, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास
3. शारीरिक विकास 4. भाषायी विकास 5. सृजनात्मक विकास

''शैशवास्था संपूर्ण जीवन के विकास का आधार है,
जिसमें समस्त संभावनाओं के द्वार खुलते हैं।''

सचिव स्कूल शिक्षा

आइए इन चित्रों का अवलोकन करें :–

उपरोक्त चित्रों के बारे में सोचें। शिशु के लिए जितनी देखभाल की आवश्यकता है उतनी ही शिक्षा की भी है।

शिशु शिक्षा के उद्देश्य

1. शिक्षा एवं देखभाल में संतुलन स्थापित करना।
2. शिशुओं का संज्ञानात्मक, व्यक्तिगत, सामाजिक एवं संवेगात्मक, शारीरिक, भाषायी, एवं सृजनात्मक विकास करना।
3. शिशुओं की ज्ञानेन्द्रियों का विकास करना।
4. शिशु में होने वाले हर परिवर्तन का सूक्ष्मता से अवलोकन करना।
5. शिशुओं को औपचारिक (प्राथमिक) शिक्षा में प्रवेश के लिए तैयार करना।
6. शिशुओं को घर जैसा वातावरण प्रदान कर आनंददायी शिक्षा देना।
7. मनोवैज्ञानिक ढंग से शिक्षा की नई कार्यप्रणाली तैयार करना।

———000———

आँगनबाड़ी केन्द्र का वर्तमान परिदृश्य

वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य में 34,973 आँगनबाड़ी केन्द्र हैं। जिनमें 17,929 केन्द्रों के लिए स्वयं के भवन निर्मित हैं। शेष आँगनबाड़ी केन्द्र किराये के भवनों में संचालित हो रहे हैं। इन आँगनबाड़ी केन्द्रों में गर्भ, से छः वर्ष के शिशुओं के विकास के लिए कार्यक्रम चलाए जाते हैं। शिशुओं के उचित विकास के लिए पोषण, स्वास्थ्य और अनौपचारिक शिक्षा जैसी सभी आधारभूत सेवाएँ उनके गाँव या वार्ड में उपलब्ध करायी जाती हैं।

आइए विचार करें :–

प्रश्न : आप अपनी आँगनबाड़ियों में क्या–क्या करते हैं ?

संभावित उत्तर :–

1. बच्चों को पोषण आहार देना।
2. धात्री महिलाओं एवं किशोरी बलिकाओं को पोषण आहार देना।
3. टीकाकरण।
4. बच्चों को खेल–खेल में सिखाना।
5. बच्चों को कविता, कहानी सुनाना।
6. परिवार नियोजन की सामग्रियों का वितरण करना।
7. चार्ट, पोस्टर के द्वारा पढ़ाना।
8. शिशु सुरक्षा योजना क्रियान्वित करना।
9. निःशक्त जनों का सर्वेक्षण।
10. पंजियों का संधारण करना।

आइये अब निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करें–

1. आप किस प्रकार की आँगनबाड़ी चाहते हैं ?
2. कारण बताएँ ?
3. सबसे महत्वपूर्ण भूमिका किस इकाई की होगी और किस प्रकार ?

जैसे– ICDS, CDPO, SUPERVISER, कार्यकर्ता।

4. आपकी भूमिका क्या होगी ?

5. क्या आप अपने आँगनबाड़ी से खुश हैं ?

6. शिशु देखभाल के अलावा आप कौन–कौन सी गतिविधियाँ करते हैं।

7. छः सेवाओं में आपको कौन–सी सेवा सबसे मज़बूत और सबसे कमज़ोर लगती है?

8. आप अपने आँगनबाड़ी में कैसा परिवर्तन चाहते हैं?

9. आप परिवर्तन क्यों चाहते हैं ?

एक अच्छे आँगनबाड़ी में क्या–क्या होना चाहिए ?

- कुशल एवं निष्ठावान कार्यकर्ता।
- भौतिक संसाधन– भवन, खेल का मैदान, शौचालय, पानी, बिजली आदि की व्यवस्था हो।
- परिवेशीय शिक्षा पर जोर।
- आँगनबाड़ी की गतिविधियाँ खेल–खेल में सिखाने वाली होनी चाहिये।
- सामग्री के रखरखाव एवं प्रबंधन की व्यवस्था होनी चाहिए।
- शिशुओं को स्वयं सीखने के अवसर मिलना चाहिए।
- सहायक सामग्री पर्याप्त मात्रा में होना चाहिए।
- गतिविधियाँ बाल अधिकार को प्रोत्साहन देने वाली हो।
- समुदाय की सहभागिता हो।
- पालकों का सहयोग हो।
- आँगनबाड़ी केन्द्र संपूर्ण ग्रामीण विकास को प्रदर्शित करने हेतु मार्गदर्शक केन्द्र के रूप में स्थापित हो।
- बाल मनोविज्ञान पर आधारित हो।
- यह केन्द्र शिशुओं, किशोरी बालिकाओं एवं महिलाओं की विकासात्मक गतिविधियाँ संपन्न कराने वाली हो।
- आँगनबाड़ी आकर्षक, सुन्दर एवं साफ–सुथरा हो।
- विभिन्न विभागों के साथ कार्यकर्ता का अच्छा समन्वय हो।
- सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन हो।

- प्राथमिक शाला के साथ समन्वय हो।
- उस बसाहट के समस्त शिशुओं की केन्द्र में नियमित उपस्थिति सुनिश्चित हो।
- पालकों एवं समुदाय को प्रशिक्षण देने की उचित व्यवस्था हो।

आँगनबाड़ी की छः सेवाएँ इस प्रकार हैं :–

1. पूरक पोषण आहार।
2. टीकाकरण।
3. स्वास्थ्य जाँच।
4. संदर्भ सेवाएँ।
5. वृद्वि निगरानी, प्रोत्साहन एवं स्वास्थ्य पोषण।
6. शाला पूर्व शिक्षा।

———000———

''शिशुओं के समग्र विकास हेतु उत्प्रेरक एवं समृद्ध वातावरण की आवश्यकता होती है, जहां उनकी समस्त आंतरिक संभावनाएँ फलीभूत हो सकें।''

डॉ.के.गोपालन

पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम वर्ष भर की शैक्षिक क्रियाकलापों का लक्ष्य है। पाठ्यक्रम शिक्षा के क्षेत्र को निर्धारित कर देता है। इसके आधार पर गतिविधियां तैयार की जाती है। अलग–अलग आयु समूह के शिशुओं के लिए उद्देश्य पहले ही निर्धारित किया जाता है। इसके आधार पर शैक्षिक क्रियाकलाप कराया जाता है। शिशु के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम आधार प्रदान करता है।

पाठ्यक्रम की आवश्यकता

नवगठित छत्तीसगढ़ राज्य में वर्तमान समय में 03–06 वर्ष के शिशुओं हेतु अनेक शिक्षण पद्धतियाँ हैं, जैसे– किंडर गार्डन, नर्सरी, बालमंदिर, शिशु शिक्षा केन्द्र, शिशु निकेतन, डे केयर, किड्स केयर, लिटिल फ्लावर आँगनबाड़ी आदि।

वर्तमान समय में 03–06 वर्ष के बच्चों के लिये महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित आंगनबाड़ी केन्द्रों में पूर्व प्राथमिक स्तर पर शिक्षा दी जा रही है। इन केन्द्रों में स्वास्थ्य और पोषण संबंधित कार्यक्रम अच्छे से संचालित किये जा रहे हैं। शिक्षा के क्षेत्र में और अधिक प्रयास की आवश्यकता है।

अतः शिशुओं के सहज एवं समग्र विकास हेतु उनकी स्वाभाविक रूचि, क्षमता, पूर्वानुभव को ध्यान में रखकर विभिन्न प्रकार के खेल एवं गतिविधियाँ बनाई गयी हैं। इनके क्रियान्वयन हेतु शिशु शिक्षा पाठ्यक्रम की आवश्यकता है।

पाठ्यक्रम के उद्देश्य

- शैशवास्था में विकास की गति के आधार पर लक्ष्य निर्धारित करना।
- शिशुओं के क्रमबद्ध ज्ञान हेतु गतिविधियाँ तैयार करना।
- शिशुओं के शारीरिक विकास के साथ मांसपेशियों का उचित समन्वय और गति संबंधी कौशलों को बढ़ाना।
- शिशुओं में रचनात्मकता, कल्पनाशक्ति, पहल करने की क्षमता और जिज्ञासा को विकसित करना।
- शिशुओं को सीखने के लिये प्रोत्साहित करना।
- बच्चों की सहज ऊर्जा को अच्छे आचरण एवं कार्य में लगाना, दूसरों के प्रति चिंता, सहयोग, धैर्य, सहनशीलता, निष्पक्षता, सत्यवादिता, ईमानदारी, विनय, साहस और मानवीय मूल्यों को आचरण में लाना।

- शिशुओं, साक्षर–निरक्षर आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, पर्यवेक्षकों व अधिकारियों के लिये उपयोगी शिक्षण सामग्री विकसित करना।
- शिशु शिक्षा से संबंधित नवाचार एवं प्रयोग करना।
- अनुसंधान, अध्ययन कराना व प्रोत्साहन देना।
- आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को स्थानीय स्त्रोत व्यक्ति के रूप में तैयार करना।
- अभिभावकों एवं समुदाय को 0–3 वर्ष के बच्चों के पालन–पोषण एवं शिक्षा के महत्व पर जागरूक बनाना।

पाठ्यक्रम के सिद्धांत

1. खेल आधारित सीखना–सिखाना।
2. कला पर आधारित शिक्षा।
3. स्थानीय खेल, कला, ज्ञान का उपयोग।
4. शिशुओं के पूर्व अनुभव को स्थान देना।
5. शिशुओं के बदलते पारिवारिक वातावरण को समझकर शिक्षा देना।
6. अनौपचारिक–औपचारिक शिक्षा में अंतः संबंध स्थापित करना।
7. शिशुओं के सामाजिक परिवेश एवं उनकी संस्कृति को पहचानना।
8. स्वस्थ आदतों का विकास।
9. व्यक्तिगत पेडागॉजी को स्थान देना (बच्चों को अलग से बुलाकर समझाना)।
10. विकास अनुरूप अभ्यास कराना।
11. अधिक जिज्ञासु बनाना।
12. स्थानीय भाषा में शिक्षा देना, इसके साथ–साथ, एक से अधिक भाषा सीखने के अवसर प्रदान करना।
13. 3D पर आधारित पाठ्यक्रम (Drill, Drama & Demonstration)
14. पाठ्यक्रम लचीला होगा।

पाठ्यक्रम के महत्व

1. शिशु विषय वस्तु को खेल–खेल में शीघ्रता से सीखेंगे।
2. शिशुओं को विभिन्न विषयों का ज्ञान होगा।
3. शिशुओं के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास होगा।
4. शिशुओं की व्यक्तिगत क्षमताओं को स्थान मिलेगा।
5. शिशु रूचिपूर्वक सीखेंगे।
6. शिशु क्रमबद्व तरीके से ज्ञान प्राप्त करेंगे।
7. ई.सी.सी.ई के उद्देश्यों की पूर्ति होगी।
8. ई.सी.सी.ई का सर्वव्यापीकरण होगा।
9. प्राथमिक शिक्षा के लिए शिशु तैयार होंगे।
10. शिशुओं के बौद्धिक स्तर में वृद्धि होगी।

———0———

"शिशुओं को आवश्यक प्रेरणा प्रदान करने का उत्तरदायित्व अभिभावकों पर ही रहेगा।"

डॉ. के गोपालन

शिशु के विकास के प्रक्रिया

परिवार ही वह स्थान है जहाँ से शिशु का विकास प्रारंभ होता है। परिवार से शिशु ज्ञान प्राप्त करता है। धीरे–धीरे वह पूरी दुनिया को जानता है। शिशुओं का समग्र विकास हो इसके लिए माता–पिता को पूरी तरह से सजग रहना होगा। इसके अतिरिक्त परिवार के सभी सदस्य बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आँगनबाड़ी/स्कूल में प्रवेश के बाद बच्चों का समग्र विकास हो सके। इसके लिए आवश्यक है कि वहाँ का वातावरण स्वच्छ, सुंदर, बाल–सुलभ इच्छाओं के अनुरूप तथा आकर्षक हो। शिशु के विकास की प्रक्रिया में हम साधक बने बाधक नहीं। शिशुओं की स्वयं सीखने की क्षमता को दिशा दें लेकिन रोकटोक न करें।

बच्चा अपने आसपास से बहुत कुछ सीखता है। वह अपने अनुभवों जैसे – देखकर, सूंघकर, सुनकर, सीखता है। बच्चे वस्तुओं के बारे में अपने हिसाब से अपनी अवधारणा बनाते हैं। ऐसा भी हो सकता है कि जिनसे उसे बचना है उसे वह न जानें। जो बातें उसे नहीं बोलनी हो, उन्हें भी उसे दोहराएँ। बच्चे की यह सीखने की प्रक्रिया शुरू के 5–6 वर्षों में ज्यादा होती है।

बच्चे प्रत्येक दिन अपना कुछ न कुछ विकास करते हैं। उनका वातावरण भी परिवर्तनशील होना चाहिए। वातावरण भी शिशुओं के अनुसार ही होना चाहिए अन्यथा बच्चे सीख नहीं पाते। शिशु अपनी जरूरतें नहीं बता सकते, न ठीक तरह से समझ सकते है। वे अपनी जरूरतों को महसूस कर सकते हैं, पर वे बता नहीं सकते है। कैसा वातावरण उनको मिलना चाहिए इसे जानना भी अभिभावक या शिक्षक का काम है।

एक बच्ची थी डेढ़ साल की। उसके माता–पिता अमीर थे। एक बार वे यूरोप घूमने आये। वहाँ वे होटल में ठहरे। वहाँ बड़े–बड़े पलंग थे। उनकी बच्ची लेटी पर उसे रात भर नींद नहीं आई। दूसरे रोज बुखार आ गया। कई डॉक्टर आये पर बुखार नहीं उतरा। तब डॉ. मोटेसरी को भी उसकी हालत मालूम हुई। वे उसे देखने गई। वहाँ दो कुर्सी रखी थी उसे मिलाकर उन्होंने गद्दा बिछा दिया। बच्ची यह देख रही थी। थोड़ी देर में उठकर उसमें लेट गयी और एक घंटे के अंदर उसका बुखार उतर गया।

शिशु जन्म से ही नियमितता पसंद करते हैं। नियमित रूप से रहना चाहते है। वे अपने वातावरण की हर चीज को मानते हैं। वस्तु या कार्य के बदलने का बालक के मन पर असर पड़ता है। इन संवेदनाओं का उसके जीवन पर गहरा असर पड़ता है। दो साल के बालक की संवेदना बड़ी तीव्र होती है। उसके बाद खेल में लग जाते हैं।

शिशुओं का विकास क्रमिक अवस्थाओं से होता है। इन अवस्थाओं में उनके वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जन्म के तत्काल बाद की अवस्था में वातावरण का सबसे अधिक महत्व होता है। शिशुओं को प्रथम दो वर्षों में मानसिक आवश्यकता भी होती है। जिसका प्रभाव संपूर्ण जीवन पर पड़ता है। पहले के समय में सारा ध्यान बच्चे के शारीरिक स्वास्थ्य पर रहता था। वर्तमान में मस्तिष्क विकास के शोध से स्पष्ट होता है कि बच्चे के मस्तिष्क का विकास शुरू के 3 वर्ष तक तेजी से होता है। अब हमारा उद्देश्य शिशु के विकास में सहायता करना है तो पहले यह बात समझना होगा कि शिशुओं के ग्रहणशील मस्तिष्क को अपना समस्त पोषण, चारों ओर के परिवेश से मिलता है। वह जो कुछ भी चारों ओर से ग्रहण करता है। उसी से अपना निर्माण करता है।

हमें नवजात शिशु के चारों ओर के वातावरण का बहुत ध्यान रखना चाहिए। जिससे वह इस नये संसार के प्रति आकर्षण अनुभव करे। इससे शिशुओं की ग्रहणशीलता में बहुत सहायता मिलेगी, जिस पर उनका विकास और उनकी प्रगति निर्भर है।

जीवन के प्रथम वर्ष में विभिन्न अवस्थाएँ होती है, जिनमें से प्रत्येक में, विशेष देखरेख की जरूरत होती है। पहली अवस्था बहुत अल्पकालिक होती है– जन्म की घटना। प्रथम कुछ दिनों में बच्चे को माँ के संपर्क में ही रहना चाहिए। आधुनिक चिकित्सालयों में माँ और बच्चे को ऐसे कमरों में रखा जाता है जिसे धीरे–धीरे बाहर के सामान्य तापमान के बराबर किया जा सकता है।

बच्चे को उठाने और दूसरी जगह ले जाने के भी निश्चित नियम है। माँ और बच्चे के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है मानो वे एक ही शरीर के दो अंग है। प्राकृतिक विधि से बच्चे को संसार के अनुकूल बनाने का प्रयास किया जाता है। हम कह सकते है कि बच्चे ने केवल अपनी स्थिति बदली है। पहले वह माँ के शरीर के अंदर था अब बाहर है। वैज्ञानिक रीति से शिशु पालन में माँ–बच्चे के संबंधों को इसी दृष्टिकोण से समझा जाता है। थोड़े समय के बाद माँ और बच्चा, अपने अलग स्थान से वापस आकर सामाजिक जीवन में लौट आते हैं। गरीब माँ सहज मार्ग अपनाती है और बच्चों को अपने पास रखती है।

इस अवस्था के बीत जाने पर, बच्चा अपने वातारण को बिना हिचकिचाहट के शांति पूर्वक अपना लेता है। वह स्वतंत्रता के मार्ग पर चलना प्रारंभ कर देता है, जो उसके परिवेश में उपलब्ध होती है और उनका मस्तिष्क ग्रहण करता चला जाता है।

शिशुओं में पहली गतिविधि – अपनी इंद्रियों का उपयोग है। चूंकि अभी इनकी हड्डियों और स्नायुओं का निर्माण पूरा नहीं होता है, अतः वह निष्क्रिय लेटा रहता है। उसके

हाथ–पाँव अपना काम नहीं करते। उनमें गतिशीलता नहीं होती केवल उसका मस्तिष्क सक्रिय होता है जो इंद्रियों द्वारा प्राप्त चित्रों को ग्रहण करता रहता है। उसकी आँखों में चमक होती है, उत्सुकता रहती है। वह नेत्रों से चित्र प्राप्त करता रहता है और स्वयं उत्सुकता पूर्वक चारों ओर से चित्रों को ग्रहण करता रहता है।

बिल्ली की आँख अंधेरी की अभ्यस्त होती है। परंतु बिल्ली स्थिर वस्तुओं की अपेक्षा, गतिशील वस्तुओं की ओर अधिक आकर्षित होती है। अंधेरे में कोई चीज मिलती है तो, बिल्ली शेष दृश्य पर ध्यान न देकर तुरंत उस पर टूट पड़ती है। यह उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है।

मानव बच्चे का विशेष ध्यान रखना होता है। उसकी इंद्रियों का भी मार्गदर्शन होता है। शिशु दृष्टि सीमा के अंतर्गत सब वस्तुओं को ध्यान देते हैं। हम अपने अनुभव से जानते है कि वे सबको समान रूप से ग्रहण करते है।

इसलिए यह कार्य प्रमुख महत्वपूर्ण है, कि हम प्रत्येक बच्चे के आंतरिक मार्गदर्शक की देखरेख करें और सचेत बनायें रखें।

शिशुओं में बाल जगत के जो चित्र अंकित होते हैं। उन्हीं से वह अपने आंतरिक व्यक्तित्व का निर्माण करता है। अपने शैशवकाल में केवल बालसुलभ क्षमताओं के द्वारा बच्चा व्यक्तिगत विशेषताएँ अर्जित करता है जो उसकी आजीवन पहचान बन जाती है। उसकी भाषा, संस्कृति संसार से अनुकूलन करने का अपना तरीका इसके कारण वह सुखी होता है और उसका मस्तिष्क परिपक्व होता है।

शैशवावस्था में ऐसी प्रेरक गतिविधियाँ शिशुओं को उपलब्ध कराई जायें। जिससे वह अपनी विकास शील क्षमता का उपयोग कर सके।

"शिशुओं को सपने देखने देना चाहिए। सपने ही उड़ान भरेंगे और नई पहचान बनायेंगे। "

– सचिव, स्कूल शिक्षा

जन्म से तीन वर्ष तक की गतिविधियों का स्वरूप

जन्म से छः माह के शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ

शारीरिक विकास	भाषा विकास	व्यक्तिगत व सामाजिक विकास	बौद्धिक विकास हेतु
• ताज़ी बजायें, झुनझुना दे, झुनझुना अलग–अलग दिशाओं में ले जायें। • कपड़े के खिलौने दें। रंगीन वस्तु या बजने वाला खिलौने दें। • अपनी ऊंगली पकड़ने दें। • होंठ या ठोड़ी हिलायें, हंसाए। • पेट के बल लुढ़कने के लिए बतायें। • मालिश के समय हाथ–पैरों की कसरत करायें। • माचिस / खाली डिब्बे से झुनझुना बनाऐ। • नयी–नयी वस्तुएँ खेलने के लिए दें।	• गोद में लेकर बात करें, ध्वनि निकालने के लिए उकसाएँ। • कपड़े पहनाते समय गीत, लोरी गीत गायें। • काम करते समय भी बात करें। • आसपास की वस्तुओं के नाम बतायें। • शिशुओं के साथ स्वयं बा–बा–बा, न–ना–ना–ना, च–चा–चा आदि दोहरायें।	• स्नेह करें। • गोद में लेकर थप–थपायें। • ध्वनि, ताल के साथ शिशु को हिलायें, झुलायें। • स्तनपान के दौरान शिशु से बात करें। • पीठ व सिर को सहलायें। • परिवार के अन्य सदस्यों के साथ रहने के अवसर दें। • शिशु को घुमाने ले जायें।	• पालने में रंगीन चीजें लटकायें व खेलने दें। • पालने को सभी कमरों में रखते रहें व आंगन में भी रखें। • शिशुओं को मुलायम खिलौने खेलने पकड़ने दें। • शिशु को आसपास की चीजों के बारे में बतायें।(ग्रामीण गरीब परिवार को क्या करना हैं।) • साड़ी से / पर्रा / टोकनी से झुला बनाकर लटकाना है। • बेकार (waste) कपड़ों को झुमर बनाना। • बिजना में बेकार कपड़े (रंगीन) लगाकर झूमर बनाना। • मच्छरदानी के ऊपर लाल रंग के कपड़ा रखना।

छः से बारह माह के शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियां

शारीरिक विकास भाषा विकास व्यक्तिगत व सामाजिक विकास हेतु बौद्धिक विकास हेतु–

शारीरिक विकास	भाषा विकास	व्यक्तिगत व सामाजिक विकास	बौद्धिक विकास हेतु
• शिशुओं को गोद में बैठायें। • वस्तु उठाने दें। • हाथ में खाने की वस्तुएं भी दें। • शिशु को बिठाकर पानी, रस, दाल का पानी आदि दें। • पेट के बल लिटाकर, दिखाकर, खिसकाते जाएं। • लुढ़कने वाले खिलौने दें। • तालियां बजाये, टाटा, बुलाने आदि के लिए इशारा करें। • पैरों पर झुलायें, खड़े करके भी झुलायें, गायें। • सहारे से खड़े करायें। • अपने पैरों पर खड़े होने के लिए प्रेरित करें। • हाथ पकड़कर चलना सिखायें।	• दैनिक क्रियाओं के समय गीत सुनायें। • काम के समय भी उससे बातें करें। • शिशु से दादा, मामा, नाना, बाबा आदि बुलवाये। • घर के सदस्यों के नाम बतायें। • शिशु के हाथ की ऊंगलियां गिनें व गिनते–गिनते गुदगुदायें। • पैरों पर लिटायें, झुलाते हुये गीत गाएँ।	• शिशु को गोद में लेकर लिपटायें। • खिलाते समय छोटी कहानी सुनाये। • गीत सुनायें व शिशु को हिलायें–डुलायें । • घर के आस–पास के लोगों के रिश्ते के नाम बतायें। • घुमाने ले जाए, घुमाते समय भी बात करें। • शौच व शु–शु कराते समय आवाज निकाल कर, बताकर, पुछकर जाएं।	• अई–ता (लुका –छिपी) का खेल खेलें। • बहुत सारे खिलौने खेलने दें। • कटोरी, चम्मच बजाने दें। • कुत्ता, बिल्ली, चिड़ियाँ की आवाजें बतायें। • चंदा मामा, तारे, सूरज दिखायें।

एक से दो वर्ष के शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ

शारीरिक विकास	भाषा विकास	व्यक्तिगत व सामाजिक विकास	बौद्धिक विकास हेतु
●शिशु को पलंग आदि के सहारे खड़े करें। ●हाथ पकड़कर चलने हेतु प्रेरित करें। ●स्टूल, कुर्सी, टेबल, पाटा आदि ढकेलने दें। ●शिशु को सुंदर व आकर्षक खिलौने दिखाकर कदम बढ़ाने के लिए प्रेरित करें। ●चक्के वाले खिलौने खींचने, चलाने दे। ●सीढ़ियों पर चढ़ने दें या कम ऊंची जगह पर चढ़ने, कूदने दे । ●कूदने में शिशु की मदद करें व गिनती बोले ताली बजाकर प्रेरित करें। ●खाट, पलंग, कुर्सी, मेल आदि के नीचे से आर–पार निकलने दें। ●शीशी, डिब्बी आदि प्लास्टिक के पेंचदार वस्तुएं खोलने दें। ●खाली डिब्बे देखने व रखने दें। ●खाली डिब्बे, माचिस, ढक्कन, रेत व मिट्टी से खेलने दें।	●शरीर के अंगों के नाम बतायें व पूछें। ●छोटे गीत सुनायें व अभिनय करवायें। ●जानवरों, पक्षियों के चित्र दिखायें व पूछें। ●फल–सब्जियों के नाम बतायें व पूछें। ●टी.वी. देखने दें, शिशु से बातचीत करें व बोलने के लिए प्रेरित करें।	●घर व आसपास के परिचितों से नमस्ते कराना बतायें। ●भगवान को, बड़ों को झुककर प्रणाम करवायें। ●सभी के साथ खेलने दें। ●स्वयं खाने–पीने दें। ●बगीचे में घुमाने ले जाएं। ●बाजार ले जाएं एवं वहां की वस्तुएं दिखायें। ●छोटे–छोटे काम जैसे कटोरी उठाने आदि को कहें।	●अंगुली पकड़ने व छिपाने का खेल खिलायें। ●रेत, फूल, पत्ती, बीज आदि खेलने दें। ●शिशु को पानी फेंकने, फैलाने दें, पानी में हाथ हिलाने दें। ●ताले में चाबी डालने दें। ●नल यदि हो तो खोलने व बंद करने दें। ●गीत सुनाये तथा अलग–अलग आवाज़ टन–टन, ट्रिन–ट्रिन, पों–पों, छुक–छुक आदि बतायें।

दो से तीन वर्ष के शिशुओं के लिए प्रेरक गतिविधियाँ

शारीरिक विकास	भाषा विकास	व्यक्तिगत व सामाजिक विकास	बौद्धिक विकास हेतु
• सीढ़ियाँ चढ़ने उतरने में सहायता करें व चढ़ने उतरने दें। • जमीन पर, टब मे, पानी में छपछप करने दें। • फर्श की लाईन पर, क्यारी पर, मेंढ़ पर चलने दे। •गेंद को पैर से ठोकर मारने दें। • कूदने के लिये प्रेरित करें। • दौड़ने दें, दौड़ने–पकड़ने का खेल खेलने दें। •तिपहिये वाली साईकिल, गाड़ी बनाकर चलाने दें। • संगीत, गीत की धुन पर थिरकने को कहें। • लकड़ी से रेत, मिट्टी पर लकीरें खींचने दें। •गत्ते के छेद में धागा डालने व निकालने दें।	• शिशुओं को नहलाते, कपड़े पहनाते, भोजन कराते समय शरीर के अंगों के नाम पूछें व अंगों के गीत सुनायें । • कहानियां सुनायें, छोटे–छोटे गीत सुनायें व दोहराने को कहें। • चुटकी बजाने का खेल खिलायें। • अपने पैरों पर झुलाये व गीत गायें जैसे अटकन–मटकन। शिशु की पसंद पुछकर खाने व खिलौने आदि दे। • शिशु जब बात करे तो ध्यान देकर सुनें। •चित्रों वाली किताब दिखाये व चित्रों के संबंध में पूछें व बतायें। • सही शब्द बोलने के लिये प्रेरित करें।	• शौचालय का उपयोग करना सिखायें। •हाथ–पैर धोना सिखायें। • अपने हाथों से भोजन करने दें। •अन्य बच्चों के साथ खेलने दें, बातें करने दें। वस्तुऐं, खिलौने आदि निर्धारित स्थान से उठाने व रखने की आदत डालें। • नदी, तालाब, बगीचा, चिड़िया घर, मेला आदि घुमाने ले जाएं। •शिशु के गुस्सा होने पर उसे शांत जगह में ले जाएं व उसका ध्यान दूसरी तरफ बटाएं।	• लुका–छिपी खेलने दें। • माचिस डिब्बी आदि से घर, गाड़ी बनाने को कहें व सहयोग करें। •फलों के स्वाद जैसा खट्टा–मीठा आदि पूछें व बतायें। • पक्षियों की आवाज व चाल बतायें । • घर की व आसपास की सभी वस्तुओं के बारे में बताये व पूछें। •आकृति व रंग के आधार पर वस्तुएं छांटने दें । रंगों को बतायें। • आड़ी–तिरछी रेखाएं खिंचवायें।

प्रेरक गतिविधियाँ कराते समय पालकों को यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि ये गतिविधियाँ बच्चों में निम्नलिखित गुणों के विकास करने वाली हों।

शिशुओं में विश्वास का विकास होना आवश्यक है।

शिशु प्रारंभ से बड़े जिज्ञासु होते है। वे किसी भी बात को मानने से पहले जाँचते,परखते हैं। उनके भीतर विश्वास की भावना विद्यमान रहती है, फिर भी वे विश्वास नहीं करते। इसका कारण स्वाभाविक है। वस्तुतः विश्वास का एक मूल आधार होता है। हम जिस संबंध में जितनी अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं, उस संबंध में उसके अनुसार ही विश्वास करते हैं। अनजानी वस्तु/व्यक्ति पर विश्वास नहीं करते। विश्वास के संबंध में पहली आवश्यकता है, जानकारी की और दूसरी आवश्यकता है, अनुभव की। शिशु प्रायः दोनों में ही अपूर्ण होते हैं। अतः वे बड़ों की बातों पर विश्वास नहीं करते। जो बच्चे विश्वस्त वातावरण में पलते हैं, वे स्वभावतः सहज विश्वास करने वाले बन जाते हैं। तात्पर्य यह नहीं है कि बच्चे की समझ के लिए संदिग्ध वातावरण उपस्थित करें। एक पक्षीय अनुभव बच्चों को धोखा दे सकता है। मतलब यह है कि विश्वास स्वाभाविक विकास के लिए आवश्यक है। इसके लिए शिशुओं की ज्ञानार्जन प्रवृत्ति तथा अनुभव को विकसित किया जाना चाहिए। उसके विश्वास या अविश्वास को छेड़ना उचित नहीं होता है।

कल्पना शक्ति का विकास

शिशु अपनी कल्पनाओं के संबंध में यह सोचते हैं कि यह अवश्य पूरा होगा। इसी लिए वे उमंग में आकर असंभव से भी आगे कल्पना कर डालते हैं। बच्चे इन कल्पनाओं में पर्याप्त आनंद भी लेते हैं और उनके जीवन पर इनका गहरा प्रभाव पड़ता है। बच्चे केवल कल्पनाएँ करके ही नहीं रह जाते, बल्कि उस आनंद को जीवन में उतारने के लिए तुरंत प्रयत्नशील हो जाते है। उदाहरण स्याही की मूंछों को निर्माण करके वयस्क होने की कल्पना को चरितार्थ कर लेते हैं।

शिशुओं का सांसारिक अनुभव बहुत कम होता है। वे अपने किसी पूर्व अनुभव के आधार पर कल्पनाएँ करते हैं। इसलिए प्रायः वे सुनी सुनाई कहानियों के आधार पर विशेष कल्पना किया करते हैं।

बच्चों के लिए कहानियों की बड़ी उपयोगिता है। इन कहानियों के आधार पर उत्पन्न कल्पनाएं ही बच्चे के जीवन की दिशा निश्चित करती हैं। अनंत महापुरूषों के जीवन का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि बचपन में कहानियों के आधार पर जिन्होंने जिन उच्च कल्पनाओं में विचरण किया तद्नुसार ही वे अपने व्यक्तिव का निर्माण कर सके हैं।

सभी बच्चे एक ही कल्पना नहीं कर सकते। कोई बच्चा सैकड़ों वीरों में योद्धा होने की कल्पना करता है तो कोई प्रबलतर्क तथा प्रमाणों द्वारा सभा को स्तब्ध कर देने वाले विद्वान होने का स्वप्न देखता है।

बच्चे की कल्पना को इन रूपों में परिवर्तित करने का उत्तरदायित्व वातावरण पर है। कल्पना जीवन में बड़ी उपयोगी है। इसके बिना व्यक्ति एक क्षण भी नहीं रह सकता। सही कल्पनाएँ मन को चंचलता तथा गति प्रदान करती हैं। अतः शिशुओं की कल्पना शक्ति को विकसित करने, बुद्धिमान तथा स्वस्थ बनाने के लिए अभिभावकों तथा शिक्षकों को सतत् कार्य करना चाहिए।

प्रशंसा द्वारा बच्चों का विकास

बाल मन और मानव मन दोनों को गतिशील बनाने के लिए प्रशंसा महत्वपूर्ण है। मन को वास्तविक प्रोत्साहन इसी से मिलता है। शिशु की उन्नति के पीछे प्रशंसा ही सूक्ष्म रूप से काम करती है। वस्तुतः प्रशंसा का संबंध उत्साह से है। कठिन से कठिन कार्य भी उत्साह होने पर क्षण मात्र में संपन्न हो जाता है। शिशुओं के भीतर प्रशंसा के प्रति एक सीमित चाह उत्पन्न करने के लिये अभिभावकों तथा शिक्षकों को विशेष प्रयत्नशील रहना चाहिए। शैशवावस्था में प्रशंसा की जाये तब बच्चे प्रत्येक कार्य को केवल प्रशंसा पाने लिये करने लग जाते है। यहाँ अभिभावकों को विवेक से काम लेना चाहिए। बच्चों की इस प्रवृत्ति का लाभ उठाकर उत्तम गुणों को ही लेना चाहिए। प्रशंसा जब प्रतियोगी भाव में होती है, तो विकृत हो जाती है। प्रशंसा के बीच–बीच से आलोचना का थोड़ा सा पुट देते रहने पर भावनाओं की इस विकृति को रोका जा सकता है।

शिक्षा में प्रशंसा बहुत सहयोगी है। सीखने की अनेक बाधाएँ इससे सहजता से दूर हो जाती हैं। प्रत्येक बच्चे को कहीं न कहीं से हार्दिक प्रशंसा तथा सहानुभूति मिलनी चाहिए। इससे ही बच्चे का विकास होता है।

सीखने की स्वतंत्रता

शिशुओं को अपने मन से कार्य करने की आजादी मिलने से उनका तेजी से विकास होता है। शिशु अपनी रूचि और अंदर की प्रेरणा से चुनाव करते है। हर एक का अपना–अपना चुनाव है। शिशुओं में उमंग एवं उत्साह रहता है। अपनी इच्छा शक्ति होती है। प्रकृति ने यह प्रेरणा बच्चों को, पहचानने और अनुभव लेने को दी है। अगर बालक को इस क्रिया से रोका जाए तो उसका विकास रूक जाता है। चोट लगने पर भी बालक रोकर फिर

भी कार्य करता है। बच्चे अपनी पसंद के आधार पर कार्य करते हैं। इस कारण वे समय का ध्यान नहीं रखते हैं।

हमें शिशुओं के कार्य में हर वक्त रोक–टोक नहीं करना चाहिए। हम बच्चों के कार्यों और व्यवहार को दिशा दे सकें। उनके सहयोगी बनें। माता–पिता के अंदर बच्चों के प्रति सबसे अधिक सहानुभूति होती है। बच्चे अपने अंदर की अच्छाई को उसी के सामने दर्शाते हैं जिससे उन्हें सहानुभूति मिलती है। बच्चों की भावात्मक दृष्टि से सहायता करें। जिससे वे आजादी महसूस करें। शिशुओं के विकास में सहायता उसे अपनी राय पर चलने और अपने तरीके से काम करने देने में होती है परंतु मनमानी से नहीं। शिशुओं के विकास को अपने विचार से अधिक महत्व देना चाहिए।

जवाब दें बच्चों की– "क्यों?"का

बच्चा जब से इस पृथ्वी पर आता है, तभी से उसके मन में ढेर सारी बातें आने लगती है। वह ठीक से बोल नहीं पाता। तब भी तोतली भाषा में कुछ न कुछ अपनी माँ से पूछता रहता है। कई बार माताएँ बच्चों को जवाब नहीं देतीं। वह बच्चों के सवालों को अनसुना कर देती हैं और अपने कामों में व्यस्त हो जाती हैं।

बच्चे की 'क्यों' में जिज्ञासाएं निहित रहती हैं। इसलिए उसकी जिज्ञासा के शांत करने के लिए माँ को उसकी क्यों का जवाब जरूर देना चाहिए। माँ यदि यह सोचे कि बच्चा बड़े होने पर अपने आप इन प्रश्नों का समाधान कर लेगा, तो यह उसकी बहुत बड़ी भूल है।

बच्चों को अपने प्रश्नों का जवाब मिलने से उनकी मानसिक प्रक्रिया पर असर पड़ता है। बच्चे को एक प्रश्न का जवाब मिल जाने पर वह दूसरी जिज्ञासा जताता है। विकासात्मक अवस्था में यह जरूर देखें कि बच्चा क्या सीख रहा है, उसकी रूचि क्या है तथा वह किस ओर जाना चाहता है। बच्चा कोई भी प्रश्न करें उसे उदाहरण देकर समझाएँ। कई बार बच्चे ऐसे प्रश्न करते हैं जो बड़े अटपटे होते हैं। ऐसे प्रश्नों का जवाब देने के लिये माता–पिता तत्पर रहें। अतः बच्चे के सभी प्रश्नों को सुनें और जवाब दें।

"अगर आप बालक के लिए कुछ कर सकते हैं तो उसके मार्ग के आगे रक्षा के लिए बाड़ बना दीजिए यानी कि अनुकूल वातावरण रचें"

गिजुभाई

विकास के क्षेत्र

शिशुओं का सर्वांगीण विकास

शिशुओं का विकास सहज, स्वतः और स्वाभाविक रूप से होता है। शिशुओं में निहित एवं अर्जित क्षमताएँ अवसर पाते ही उभरती है। शिशुओं के संपूर्ण विकास की गतिविधियाँ कराने के लिए इसे पाँच क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए पाँचों विकास हेतु अलग–अलग लोगो दिया गया है जो इस प्रकार है :–

क्र.	विकास का नाम	लोगो चित्र
1	संज्ञानात्मक विकास	
2	व्यक्तिगत, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास	
3	शारीरिक विकास	
4	भाषायी विकास	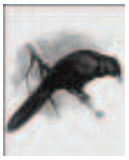
5	सृजनात्मक विकास	

उपरोक्त पाँचों विकास के क्षेत्र पर पाठ्यक्रम के अनुसार क्रियाकलाप कराने में हमारी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अतः क्रियाकलाप के समय कार्यकर्ता पाँचों ज्ञानेन्द्रियों का पूर्ण उपयोग कर ज्ञान ग्रहण करवायें। पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ– आंख, नाक, कान, जीभ, त्वचा, मानव जीवन को प्रकृति के द्वारा वरदान के रूप में प्राप्त होती है। इसके माध्यम से शिशुओं में पाँचों विकासों को समृद्ध करना है।

डॉ.माण्टेसरी की दृढ़ मान्यता है कि इन्द्रियों के विकास के बाद ही बुद्धि का यथार्थ विकास जन्म लेता है। बुद्धि का सम्पूर्ण विकास इन्द्रिय विकास पर ही अवलम्बित है। 3–7 वर्ष के बीच इन्द्रिय शिक्षण की उपेक्षा की जाती है तो बालक का बुद्धि बल पंगु बना रह जाता है।

संज्ञानात्मक विकास

संज्ञानात्मक विकास संज्ञान से संबंधित है। संज्ञान का अर्थ है– जानना। प्रत्येक शिशु में जानने की योग्यता होती है। जानने की क्रिया पाँच ज्ञानेन्द्रियों की माध्यम से होती है। आँख, कान, नाक, जीभ, त्वचा के द्वारा शिशु आस–पास की चीजों को पहचानते है और समझने, जानने के लिए प्रश्न करते हैं। शिशुओं को पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को माध्यम से सूक्ष्म अवलोकन करने के अवसर प्रदान करने चाहिए। जिससे उनकी मानसिक क्षमताओं का विकास होगा। शिशुओं के कौशल में वृद्धि होगी।

मानसिक कुशलताएँ इस प्रकार हैं –

1. पहचानना
2. नाम जानना
3. याद रखना
4. स्मरण करना
5. अंतर करना
6. मिलान करना
7. जोड़ी बनाना
8. समानता बनाना
9. वर्गीकरण करना?
10. दृश्य विभेदीकरण
11. तर्क विवेचन
12. समस्या समाधान
13. स्थान संबंधी अवधारणा
14. संख्या पूर्व अवधारणा–
    1. छोटा– बड़ा
    2. कम– ज्यादा
    3. मोटा–पतला
    4. लंबा–नाटा
    5. उपर– नीचे
    6. हल्का– भारी
    7. अंदर–बाहर
    8. दूर–पास
    9. चौड़ा–सँकरा
15. संख्या संबंधी अवधारणा

संज्ञानात्मक विकास को हम बौद्धिक, मानसिक विकास के नाम से भी जानते हैं। इसके अंतर्गत बच्चों के मस्तिष्क के विकास हेतु विभिन्न क्रियाकलाप कराते हैं। आइए इन्हें विस्तार से जानें :–

1. प्रत्यक्ष अवलोकन –

प्रत्येक Theme में अवलोकन, चित्र कार्ड और भ्रमण के माध्यम से कराया जाएगा। भ्रमण सीखने की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अवसर है। ऐसे अवसर बच्चों को प्राथमिक स्तर का प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करते हैं। भ्रमण अमोद–प्रमोद का साधन है और जब शिशु स्वयं चीजें देखते–परखते हैं तो उन्हें विषयों को समझना सरल हो जाता है। भ्रमण से लौट कर बच्चों को उसके बारे में बातचीत करने के लिए प्रोत्साहित करें।

शिशु इससे नाम, रंग, उसका खान–पान, बनावट, उपयोग, स्थान (घर) आदि के बारे में जानेंगे। छोटे कार्ड के माध्यम से वस्तुओं को जानने में सहयोग मिलेगा।

2. कम–ज्यादा

- शिशु को कम–ज्यादा का कार्ड दिखाकर पूछेंगे कि कौन–सी चीज, वस्तु, प्राणी कहाँ कम हैं और कहाँ ज्यादा ?
- बारी–बारी से सभी शिशुओं से कम–ज्यादा पूछेंगे।
- स्थानीय सामग्री द्वारा शिशुओं से कम–ज्यादा की ढेरी बनवायेंगे।

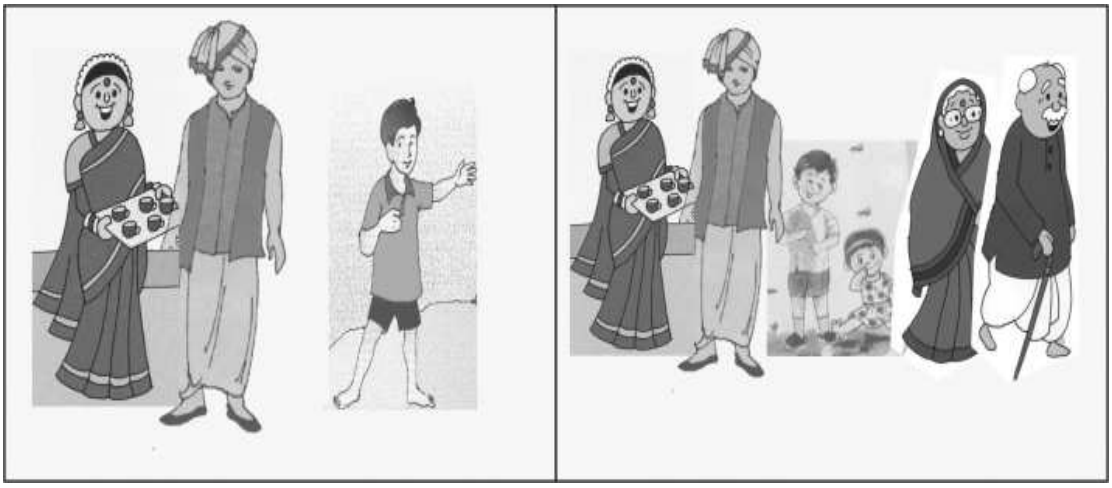

3. छोटा–बड़ा

- शिशुओं को छोटा–बड़ा का कार्ड दिखाकर यह पूछेंगे कि कौन–सी चीजें, वस्तु, प्राणी छोटी है और कौन–सी बड़ी ?
- बारी–बारी से सभी शिशुओं से छोटा–बड़ा पूछेंगे।
- स्थानीय सामग्री से शिशुओं से छोटा–बड़ा पूछेंगे।
- कक्षा में सभी बच्चों को छोटे से बड़े और बड़े से छोटे के क्रम में खड़ा करवायेंगे।

4. लंबा–नाटा

- शिशुओ को लंबा–नाटा का कार्ड दिखाकर पूछेंगे कि कौन लंबा है और कौन नाटा?
- बच्चों को खड़ा करके पूछें कि कौन लंबा है और कौन नाटा ?

- भ्रमण के दौरान भी लंबा–नाटा की जानकारी पूछ सकते हैं।

5. मोटा–पतला

- शिशुओं को मोटा–पतला का कार्ड दिखाकर पूछेंगे कि कौन मोटा है और कौन पतला?
- केन्द्र में उपलब्ध वस्तुओं से कौन मोटा है? कौन पतला? पूछ सकते हैं।
- केन्द्र के बाहर पेड़ों को दिखाकर भी मोटा–पतला पूछ सकते हैं।

6. ऊपर–नीचे

- शिशुओं को ऊपर–नीचे का कार्ड दिखाकर पूछेंगे कि कौन सी चीज ऊपर है और कौन सी चीज नीचे दिखाई दे रही है ?
- कमरे के अंदर ऊपर लटकी वस्तु या रखी वस्तुओं और नीचे रखी वस्तुओं को पूछेंगे।
- केन्द्र के बाहर जाकर ऊपर–नीचे की वस्तु को बतायेंगे।
- नदी–पहाड़ का खेल खेलेंगे।

7. अंदर–बाहर

- शिशुओं को अंदर–बाहर का कार्ड दिखाकर पूछेंगे कि कौन–सी चीज अंदर है और कौन–सी बाहर ?
- स्थानीय सामग्री जैसे फल, सब्जी दिखाकर अंदर–बाहर के बारे में शिशुओं से पूछेंगे।
- पौधों को दिखाकर पौधों के अंगों बारे में बात करेंगे। पौधे का कौन–सा भाग जमीन के अंदर है और कौन–सा भाग बाहर ?
- एक गोला बनाकर अंदर कूदो और बाहर कूदो का खेल करवायेंगे।

8. हल्का–भारी

- शिशुओं को कार्ड में वस्तुएँ दिखाकर पूछेंगे कौन–सी हल्की है और कौन–सी भारी ?
- स्थानीय सामग्री से कपड़े की थैलियाँ बनायेंगे और उनके अंदर (किन्हीं छोटी–छोटी डिब्बियों में) अलग–अलग सामान भरेंगे, जैसे रूई, रेत, लकड़ी का बुरादा, कागज़, कंकड़ आदि।
- शिशुओं को बारी–बारी से अलग–अलग थैली/डिब्बियाँ उठाने को कहेंगे और पूछेंगे कौन–सी हल्की है और कौन सी भारी?

- स्थानीय वस्तुओं को उठाकर पूछेंगे कि कौन–सी वस्तु हल्की है? कौन–सा भारी?

9. दूर–पास

- शिशुओं को दूर–पास का कार्ड दिखाकर पूछेंगे कि कौन–सी वस्तु दूर है और कौन–सी पास?
- भ्रमण के समय भी पूछ सकते हैं कि कौन–सी चीज दूर है और कौन–सी पास?
- केन्द्र में बच्चों से पूछेंगे कि कौन–सा बच्चा पास बैठा है और कौन–सा दूर?

10. चौड़ा–सँकरा

- शिशुओं को चौड़ा–सँकरा का कार्ड दिखाकर पूछेंगे कि कौन–सा स्थान चौड़ा है ? कौन–सा सँकरा ?
- भ्रमण करा कर शिशुओं को पूछेंगे कि कौन–सी पगडंडी चौड़ी है और कौन–सी सँकरी?
- केन्द्र के अंदर बच्चों से पूछेंगे कि कौन–सा खिड़की/दरवाजा चौड़ा है और कौन–सा सँकरा ?

11. आकार पहचानना

शिशुओं को आकार पहचानने की गतिविधि निम्नलिखित तरीकों से करवाई जाती है:–

- शिशुओं को सभी आकृतियों के कार्ड देंगे। आकार की पहचान करायेंगे और नाम बतायेंगे जैसे – यह गोल हैं।
- समान आकार का मिलान करवायेंगे। (रेलगाड़ी के खेल द्वारा)
- बताए गए आकार से संबंधित अन्य वस्तुओं के नाम पूछेंगे।
- इसी तरह सभी आकारों के पहचान, मिलान एवं संबंधित वस्तु के अन्य नाम पूछें।
- खेल–''क्या है लंबा, क्या है गोल, जल्दी बोल–जल्दी बोल''। सभी शिशु गोल

घेरे में बैठेंगे 'क्या है लंबा, क्या है गोल दीदी बोलेंगी। सभी शिशु दोहरायेंगे फिर कार्यकर्ता बतायेंगी कि केला है लंबा, सेब है गोल, बच्चे भी क्रमशः बतायेंगे।

12 आकार क्रमीकरण

- शिशुओं को आकार क्रमीकरण का कार्ड देंगे।
- शिशुओं को छोटे से बड़े के क्रम में वस्तुओं को पूछेंगे।
- आकार क्रमीकरण के सभी कार्डों को पहले कार्यकर्ता जमा कर दिखायेंगी फिर सभी शिशु पारी–पारी से जमायेंगे।

आकार क्रमीकरण

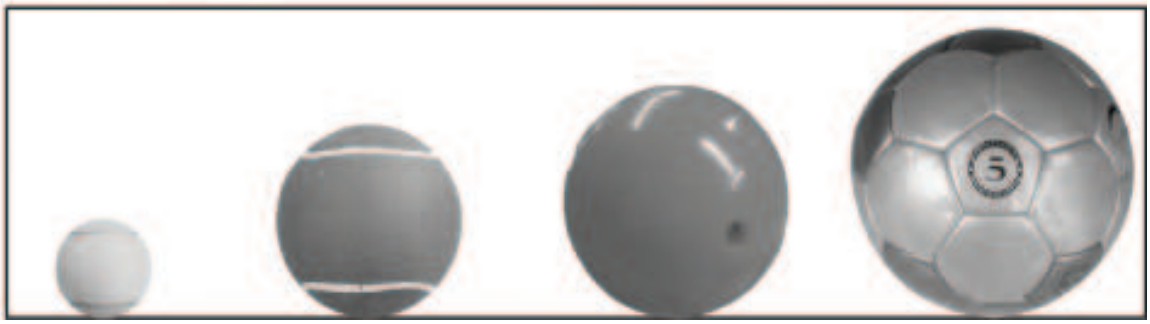

रंग क्रमीकरण

- शिशुओ को रंग क्रमीकरण कार्ड देंगे।
- शिशुओं से सबसे हल्का से गाढ़ा रंग पूछेंगे।
- शिशुओं से क्रमशः हल्का और गाढ़ा रंग पूछेंगे।
- शिशुओं को रंग क्रमीकरण का कार्ड जमाकर दिखायेंगे फिर बारी–बारी से शिशु रंग क्रमीकरण कार्ड जमायेंगे।

रंग, आकृति और आकार क्रमीकरण। उड़ान पैकेज में यह खेल है। जिससे बच्चों की खेल–खेल में रंग, आकृति और आकार क्रमीकरण की अवधारणा विकसित होगी।

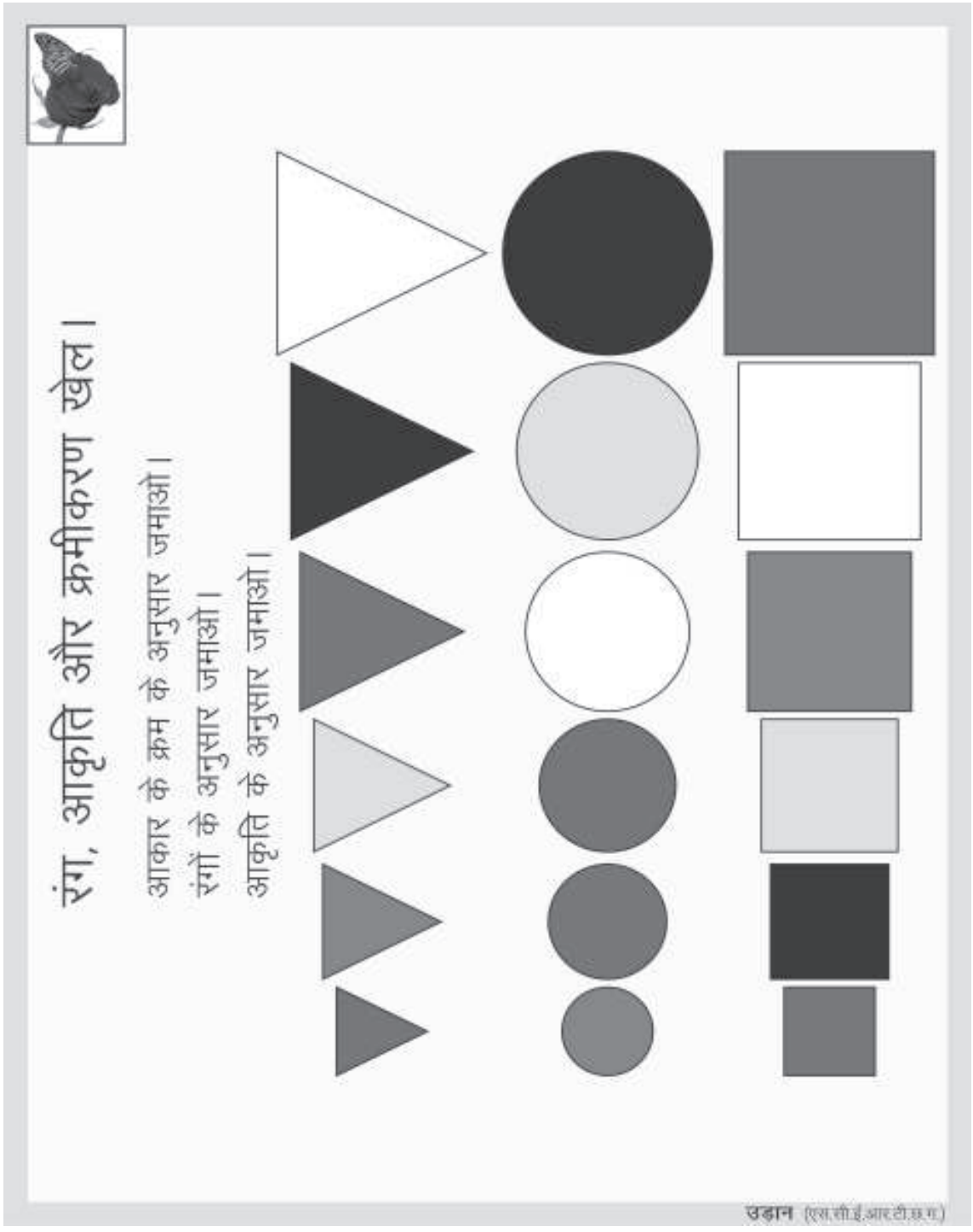

क्रमबद्ध चिंतन

क्रमबद्ध चिंतन के कार्ड को कार्य के अनुरूप जमाना। जैसे – (ब्रश करना, नहाना, नाश्ता करना, स्कूल जाना, खेलना, पढ़ना आदि)

13 रंगो का मिलान करना

- शिशुओं को रंगो का कार्ड देकर रंगों की पहचान करायेंगे।
- शिशुओं से समान रंगों का मिलान करायेंगे।
- शिशुओं से एक रंग के आधार पर कार्ड का मिलान करायेंगे।
- रंग से संबंधित वस्तुओं एवं कपड़े/चूड़ी का मिलान करायेंगे।
- इंकी पिंकी वाट कलर का खेल करवायेंगे।

रंग बनाना

- पत्तियों/फूलों को कुचलकर रंग बनाना।
- मूल रंग लाल, पीला, नीला, काला, सफेद को मिलाकर नया रंग बनाना।

  लाल. पीला – आरेंज

  नीला. पीला – हरा आदि

14. छाँटना

- स्थानीय सामग्री (दाल, चावल, गेहूँ) को मिलाकर छाँटने की क्रिया करवायेंगे।
- चार–पाँच थीम के कार्ड को आपस में मिलाकर छाँटने की क्रिया करवायेंगे।
- उससे संबंधित चर्चा करवायेंगे।

15. अंतर करना

कार्ड में दो चित्रों में दी हुई वस्तुओं बच्चों, पशु–पक्षियों, पेड़–पौधे आदि में रंग, आकृति आदि के आधार पर अंतर करवाना।

16. पैटर्न जमाना और बनाना

- शिशुओं के सामने कटोरी में लकड़ी, कंकड डालकर कार्यकर्ता स्वयं पैटर्न जमाकर दिखायें। जैसे–

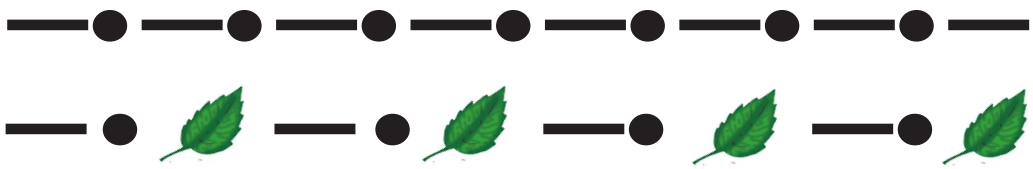

इस प्रकार शिशुओं को पैटर्न जमाने को कहें तथा अन्य वस्तुओं को भी मिलाकर पैटर्न जमाने को कहें। जैसे (लकड़ी, कंकड़, पत्ती)

17. वर्गीकरण

शिशुओं को वर्गीकरण कई तरह से करवा सकते हैं। समान गुणों पर आधारित वस्तुओं के वर्ग या समूह बनाकर वर्गीकरण करवाया जाता है। एक वर्ग में कई समूह हो सकते हैं। जैसे – फूलों का समूह, फलों का समूह। फल और सब्जी को भी अलग–अलग समूह में रखा जा सकता है। सब्जी में भी रंग,स्वाद, कच्ची एवं पकाकर खायी जाने वाली सब्जियों के आधार पर भी वर्गीकरण करवाया जा सकता है। इस तरह एक वर्ग या समूह में वस्तुएं एक दूसरे से किस प्रकार संबंधित हैं बच्चे समझना प्रारंभ करते है। इस प्रकार तर्क पूर्ण विचार और वर्गीकरण की योग्यता शिशुओं में विकसित हो जाती है।

18. तर्क विवेचन

शिशुओं में तीव्र कल्पना शक्ति होती है और इस कल्पना शक्ति के आधार पर वे किसी वस्तु के कारण या प्रभाव का अनुमान लगाते हैं और जवाब देते हैं। कल्पना शक्ति के प्रयोग के उदाहरण हर जगह देखने को मिलते हैं।

- चॉकलेट और पैसे का पेड़ लगाने के संदर्भ में।
- यदि आपके दो पंख होते तो क्या होता? के जवाब में।
- यदि मछली पेड़ पर रहती तो क्या होता? के जवाब में।

इस प्रकार शिशुओं को विभिन्न घटनाओं के प्रभाव और कारण खोजने के अवसर प्राप्त होते हैं। शिशुओं में तर्क शक्ति का विकास इस तरह के प्रश्नों द्वारा होता है।

19. दृश्य विभेदीकरण

दृश्य विभेदीकरण के कार्ड दिखाकर शिशुओं को विभेदीकरण करवायेंगे। शिशुओं से पूछेंगे कौन–सा चित्र अलग है और क्यों?

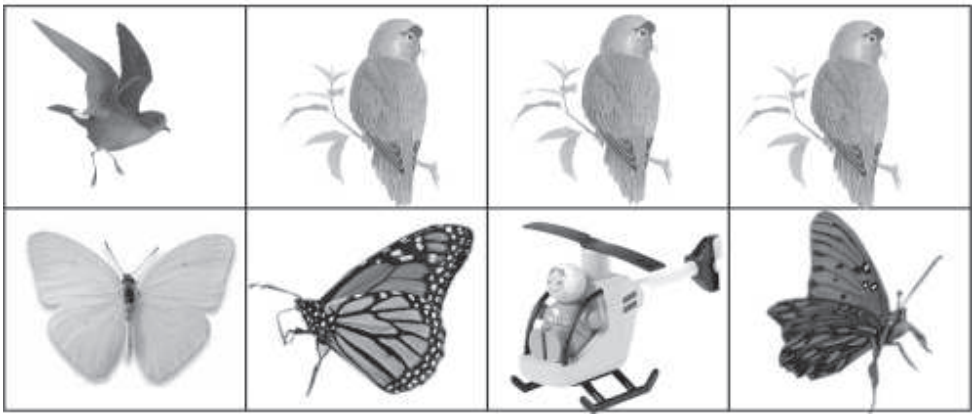

20. स्थान संबंधी अवधारणा

शिशुओं के सामने दो बर्तन, दो कार्ड रखकर उसे स्थान संबंधी अवधारणा के बारे में बतायेंगे।

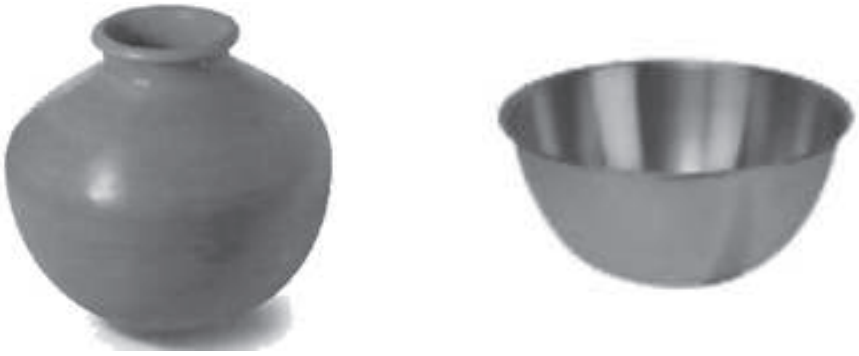

प्रश्न– किसमें पानी ज़्यादा भरा होगा ?

सुनकर –

सामान्य एवं परिचित आवाज पहचानना व नकल करना –

- शिशुओ को विभिन्न आवाजों को सुनाकर उनकी आवाज पूछेंगे।
- लगातार तीन चार आवाज सुनाकर क्रमशः उन्हें सुनी हुई आवाज को उनसे पूछेंगे। जैसे – दरवाजा खटखटाना, बर्तन गिराना, कागज फाड़ना, लगातार तीन बार आवाज करके क्रम से पहले किसकी, फिर किसकी आवाज़ आई, प्रत्येक शिशु बतायेंगे, बार–बार क्रमशः यह क्रिया करवायेंगे।
- आवाज की डिब्बियों को सुनाकर हल्की आवाज, जोर की आवाज, बारीक आवाज पहचान कर बताने कहेंगे।

उदाहरण

रेत की बारीक आवाज, कंकड़ की भारी आवाज की पहचान करवायेंगे। पशुओं के पदचाप पहचानना।

- सभी पक्षियों की आवाज निकालकर उन्हें सुनायें।

ध्वनि विभेदीकरण–

- समान ध्वनि वाले शब्दों से भिन्न ध्वनि वाले शब्दों को पहचानना।
- शिशुओं को काँच के गिलास और स्टील के गिलास में चम्मच बजाकर सुनायेंगे। जिससे दोनों की आवाजों में शिशु अंतर कर पायेंगे।

सूंघकर पहचानाना

- शिशुओं को फूल, अगरबत्ती, जली हुई वस्तुओं, खाद्य पदार्थ की गंध, विभिन्न प्रकार के तेल (मिट्टी का तेल, सुगंधित तेल) को अनुभव कराना और नाम बताना।
- अहा!, छी–छी का खेल – विभिन्न प्रकार के वस्तुओं के नाम बोलेंगे जिसमें अच्छी गंध ा के लिए अहा और दुर्गंध के लिए छी–छी बोलना है।

  जैसे – गुलाब की खुशबू – अहा!

  बीड़ी का धुआँ – छी–छी

स्वाद पहचानना

विभिन्न वस्तुओं को चखकर पहचानना शिशुओं से खट्टा–मीठा, नमकीन–कड़वा पूछेंगे।

जैसे – नमक, नींबू, शक्कर वस्तुओं के नाम लेने पर शिशु उनका नाम बतायेंगे।

छूकर पहचानना

- स्पर्श फलक के द्वारा शिशुओं को अलग–अलग कपड़ों को छूकर बताने कहेंगे कि कौन–सा कपड़ा खुरदरा है ? और कौन–सा चिकना ?
- कमरे में उपलब्ध सामग्री को स्पर्श करके भी शिशु बतायेंगे।
- बिना स्पर्श के चिकनी और खुरदुरी वस्तुओं के नाम शिशुओं से पूछेंगे।

(1) कड़ा–मुलायम– सामग्री के द्वारा, वस्तु द्वारा ।

- केन्द्र में उपलब्ध सामग्री को शिशुओं से छूकर अनुभव करवायेंगे कि कौन सी वस्तु कड़ी है ? कौन सी मुलायम ?

  जैसे–कपड़े की गेंद, रूई, पत्थर।

(2) गीला–सूखा

- केन्द्र में उपलब्ध सामग्री को गीला और सूखा रखकर शिशुओं से स्पर्श करायेंगे क्रमशः उनसे पूछेंगे कि क्या गीला है ? क्या सूखा ?

  जैसे– कपड़ा, आटा, मिट्टी।

(3) ठंडा–गरम

केन्द्र में उपलब्ध सामग्री को शिशुओं से स्पर्श कराके उनसे पूछेंगे कि कौन–सा वस्तु ठंडा है ? कौन–सा वस्तु गरम ?

हाथ को रगड़कर ठंडा–गरम का अनुभव करायेंगे।

अंक कार्ड का विवरण

1 से 20 तक अंक कार्ड बनायें गए हैं। 1 से 20 तक अंक कार्ड के चार सैट हैं। सभी सैट में अलग–अलग चित्र है।कार्ड के एक तरफ अंक है तथा दूसरे तरफ चित्र है। गिनती सिखाने हेतु अंक कार्ड विकसित किए गए है। गिनती सिखाने हेतु विभिन्न प्रकार की गतिविधियाँ कार्ड के माध्यम से कराएँ। जैसे –

1. अंक कार्ड को एक से चार तक अपने सामने जमा कर रखेंगे। बाकी सेट बच्चों को बाँट देंगे।
2. बारी–बारी से संख्या को बोलकर बच्चों से कार्ड को अंक पर जमाने कहेंगे।
3. सभी बच्चे अपने कार्ड को 1से 5 तक के कार्ड पर जमायेंगे।

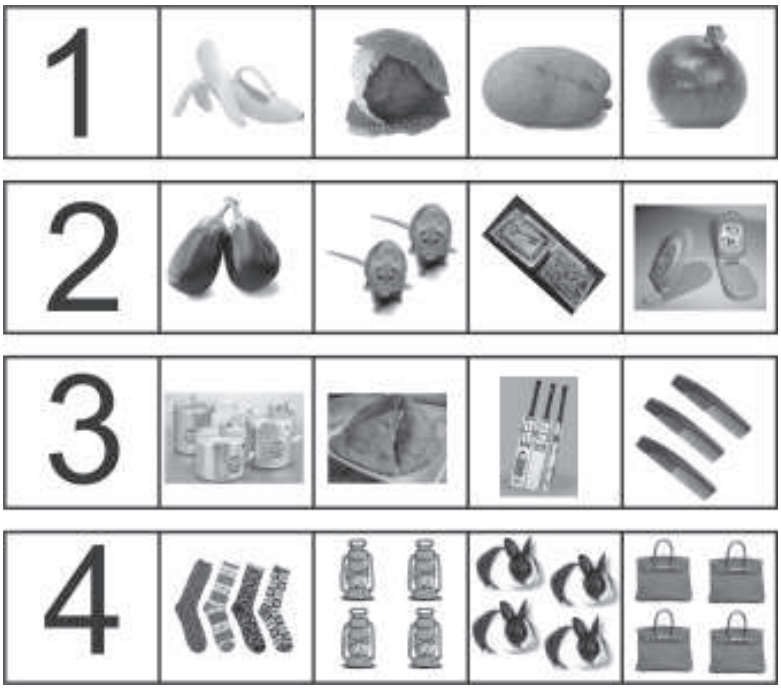

सॉप–सीढ़ी खेल के माध्यम से 1 से 20 तक संख्याओं का अभ्यास होगा।

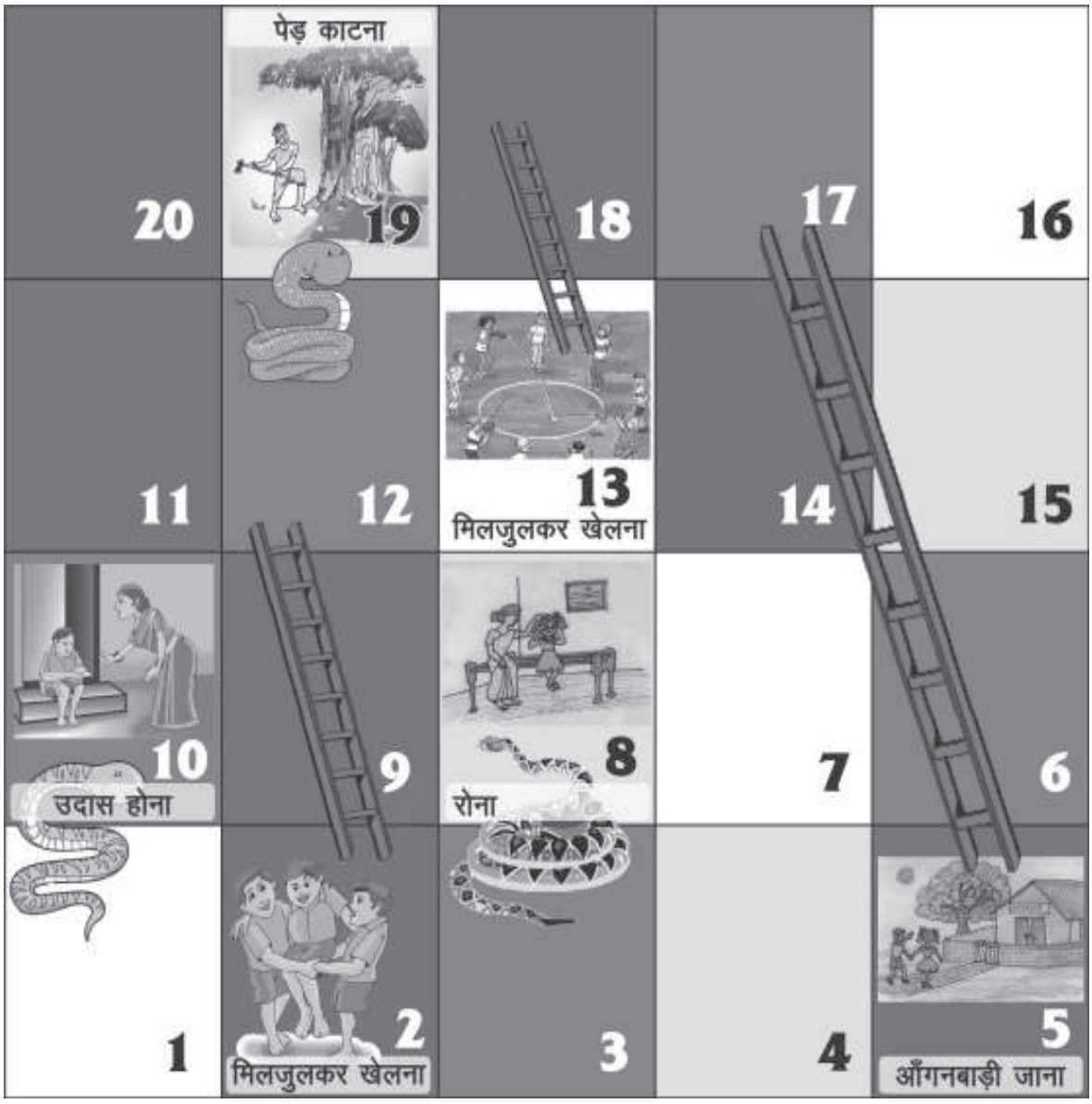

शारीरिक विकास

शारीरिक विकास को वृद्धि और विकास के रूप में देखा जाता है। शारीरिक विकास वृद्धि और शरीर की क्रियाओं से संबंधित हैं। शिशुओं के शरीर के विभिन्न अंगों का विकास इसके अंतर्गत आता है। वृद्धि से तात्पर्य वजन और ऊँचाई का बढ़ना है। विकास से तात्पर्य शरीर के सभी अंगों का स्वाभाविक ढंग से कार्य करना तथा मांसपेशियों और अंगों के संचालन पर शिशुओं का नियंत्रण होना है। शिशुओं की हड्डियाँ मुलायम होती हैं शरीर लचीला होता है जिससे वे अधिक कौशल सीखने में समर्थ होते हैं। नये–नये कौशल सीखने में आनंद का अनुभव करते हैं और इनको अधिक कुशल बनाने के लिए निरंतर अभ्यास करते हैं।

शिशुओं का शारीरिक विकास होते हुए बहुत ही स्पष्ट दिखाई देता है परंतु वृद्धि के साथ–साथ शिशु विभिन्न अंगों में संतुलन के लिये विभिन्न क्रियाएँ करते हैं। यह संतुलन स्थूल से सूक्ष्म की ओर होता है। छोटी और बड़ी मांसपेशियों में साथ–साथ संतुलन विकसित होता है।

उदाहरण के लिए शिशु जब छोटे होते हैं। उन्हें गोदी उठाओ तब वे हाथ की अंगुली पकड़ते हैं लेकिन बड़ी वस्तुओं को उठाने के लिए पूरे शरीर का भी उपयोग करते हैं। यदि बॉल को हाथों से न पकड़ पायें तो दोनों हाथों एवं दोनों पैरों के सहारे से पकड़ते हैं। उम्र बढ़ने से अंगो में संतुलन बढ़ता है। जब शिशुओं में विभिन्न प्रकार की संतुलन क्षमता विकसित हो जाती है। यह संतुलन क्षमता के अवसर पर निर्भर करता है कि वह एक खिलाड़ी, नर्तक, तैराक आदि बनेगा। शिशुओं को जितनी अधिक शारीरिक संतुलन की गतिविधियों को करने के अवसर मिलेंगे। वे स्वयं की निहित क्षमताओं को प्रदर्शित कर पायेंगे। शिशुओं के शारीरिक और क्रियात्मक कौशल उन्हें अधिक स्वतंत्र बनाते हैं। वे वातावरण का अन्वेषण करते हैं और स्वयं कुछ करना चाहते हैं। शाला पूर्व बच्चे अपने कौशलों की स्वयं जाँच करते हैं। जल्दी–जल्दी खाने में, दौड़ने में और सबसे पहले सीढ़ियों पर चढ़ने में उन्हें बड़ा मजा आता है। खेल/गतिविधियों से शारीरिक संतुलन की गति तीव्र होती है। शिशु स्वस्फूर्त होकर उत्साहित आनंदित होते हैं। खेलों से मनोरंजन होता है और मानसिक संतुलन भी बढ़ता हैं। आँखों एवं हाथों में समन्वय बढ़ता है। खेल शिशुओं की स्वाभाविक क्रिया है। इससे एकाग्रता बढ़ती है। स्वअनुशासन एवं सहयोग की भावना विकसित होती है।

शारीरिक विकास

बड़ी मांसपेशियों में संतुलन

- सीधे चलना।

- दाएँ–बाएँ चलना।
- पंजे के बल चलना।
- हाथ में वस्तु रखकर संतुलन बनाकर चलना।
- सिर और गर्दन में संतुलन बनाकर चलना।
- ताल के साथ कदम मिलाकर चलना।
- स्वयं कूदना/फेंकना।
- एक पैर से कूदना, पकड़ना।
- उछालकर पकड़ना/ लुढ़काना।
- रस्सी कूदना/टप्पे देकर पकड़ना।
- सीधी, लंबी, बाधा, मेंढ़क दौड़।
- रेंगना, खिसकना, चढ़ना–उतरना।
- पैर से ठोकर मारना।

छोटी मांसपेशियों में संतुलन

- कागज फाड़ना।
- सीधी रेखा में कागज फाड़ना।
- कागज को वर्गाकार, चौकोर आकृति में काटना और मोड़ना।
- मटर–फल्ली छीलना।
- चेन, बटन लगाना।
- जूते की लेस बांधना और खोलना।
- रूमाल तह करना, शर्ट पेंट, फ्रॉक तह करना।
- एक बर्तन से दूसरे बर्तन में पानी डालना।
- धागे में मोती डालना।
- लय के साथ ताली, चुटकी बजाना।
- बड़े एवं छोटे छेद में धागा पिरोना।
- कैंची से कागज काटना।
- कैंची से चौकोर चित्र काटकर कागज में चिपकाना।
- रंगीन पेंसिल से कागज पर चित्रों पर रंग भरना।

भाषायी विकास

शिशु जो भाषा/बोली सुनते हैं, उसे आसानी से बोलना सीख जाते हैं। शिशुओं के भाषा बोलने की प्रथम क्रिया रोने से प्रारंभ होती हैं। शिशु रोना, बबलाना (ब..ब..दद..मम..) इशारों, शब्द, दो शब्द, फिर वाक्य बोलना सीखते हैं। बाद में सुन सुनकर वह अच्छे से बातचीत करना सीख जाते हैं। बड़े होकर जब हम कोई नई भाषा सिखाने की चेष्टा करते है, तो हमें काफी मेहनत लगती है। जिन घरों में शुद्ध हिन्दी बोली जाती है। उनके बच्चे भी जल्दी हिन्दी भाषा लिखने–पढ़ने लग जाते है। इसका मतलब है कि पहले सिर्फ शुद्ध बोलने, अभिव्यक्ति करने, वर्णन करने की शैली विकसित करना चाहिए।

शब्दों का उच्चारण सीखने के बाद बच्चे उनका सामान्य प्रयोग करना भी सीखते हैं। इसके लिए जरूर है कि अपने आस–पास में वे उस शब्द को प्रयुक्त होते हुए सुनें। उदाहरण के लिए नीचे दिए गए दो वाक्यों को लें–

1. मैं स्कूल जाती हूँ।
2. मुझे स्कूल जाना है।

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट है कि ''मैं'' और ''मुझे'' दोनों ही शब्द अपने लिए ''स्व'' प्रयुक्त होता है। लेकिन दोनों का प्रयोग भिन्न–भिन्न रूप से होता है।

मौखिक भाषा अभिव्यक्ति का कौशल, चित्र पठन, चित्रों पर अभिव्यक्ति, वार्तालाप, संवाद, अभिनय, कहानी, घटना आदि का वर्णन के अवसर देकर विकसित किया जा सकता है। मौखिक भाषा शिक्षण का महत्व न केवल बच्चों के लिए परन्तु बड़ों के लिए भी है। मौलिक विचारों को प्रकट करने की योग्यता शिशुओं के भाषा विकास में बेहद मदद करती है। इससे बच्चे वाक्कला में निपुण होते हैं। लेखन में भी कुशलता आती है। अतः प्रतिदिन कुछ समय वार्तालाप के लिए अवश्य देना चाहिए। बच्चों को मुक्त रूप से बोलने का अवसर देना चाहिए। उन्हें

क्रम से घटना बताने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए। इस क्रिया में क्रमबद्धता, स्मरणशक्ति, विचार तथा कल्पना शक्ति के उपयोग द्वारा शिशुओं की भाषायी क्षमता के साथ तर्क शक्ति (संज्ञानात्मक योग्यता) भी विकसित होती है।

हमें अपनी आँगनबाड़ी में बच्चों की भाषा विकास में मदद के लिए भाषा के प्रमुख कौशलों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए या क्रियाकलाप करना चाहिए।

सुनना, बोलना, पढ़ने के पूर्व तैयारी जैसे चित्र देखना, संकेत पढ़ना आदि। लिखने के पूर्व तैयारी जैसे चित्र बनाना, ऊंगली फिराना आदि। इससे संबंधित गतिविधियाँ करानी चाहिए।

- शब्द चित्र कार्ड के आधार पर प्रथम ध्वनि एवं अंतिम ध्वनि की पहचान करवायेंगे।
- शब्द चित्र कार्ड के माध्यम से प्रथम अक्षर एवं अंतिम अक्षर को पहचानेंगे। जैसे– अनार में अ और र, सेब में से और ब।

सुनने से संबंधित गतिविधियाँ–

शिशुओं से बातचीत करने से विचारों का आदान–प्रदान होता है। बच्चे बातचीत तथा कहानी से बहुत से नये शब्द सीखते हैं। इन शब्दों का प्रयोग करना सीखते हैं। बड़ों की तरह खेल–खेल में बात करने का प्रयास करते हैं। बड़ों का अनुकरण करते हैं और बात करना सीख जाते हैं।

- पास की आवाज सुनना।
- दूर की आवाज सुनना।
- धीमी और तेज आवाज सुनना।
- बड़बड़ गीत, लोरी, अभिनय, वर्णन गीत सुनना।

ऽ चित्रकथा कहानी सुनना।

ऽ सरल व छोटे निर्देशों को सुनना।

ऽ एक साथ दो निर्देशों को सुनना।

ऽ परिवेशीय पहेलियों को सुनना।

ऽ दूसरों के बीच हो रहे वार्तालाप का सुनना।

बोलने से संबंधित गतिविधियाँ–

शिशुओं के साथ बातचीत करना चाहिए। बातचीत करते समय यह देखा गया है कि बच्चे कुछ सोचकर नई बातें बोलने लगते है। कई बार वे एक ही शब्द को बार–बार नहीं दोहराते अपने ही कहे वाक्यों को बदलकर बोलते हैं। बोलने के लिए कुछ गतिविधियाँ इस प्रकार हैं–

ऽ स्वतंत्र वार्तालाप।

ऽ निर्देशित वार्तालाप।

ऽ छोटे वाक्यों को सुनकर दोहराना।

ऽ चित्र पठन।

ऽ किसी वस्तु पर 4–5 वाक्य बोलना।

ऽ संवाद बोलना

ऽ कहानी के पात्रों का अभिनय करना।

ऽ पशु–पक्षी की आवाज की नकल।

ऽ अभिनय के साथ बोलना।

ऽ परिवेशीय वस्तु के नाम व उसके बारे में बताना।

ऽ तुकबंदी वाले शब्द बोलना।

ऽ प्रथमाक्षरी एवं अंताक्षरी।

ऽ ध्वनि विभेदीकरण (कलम, कछुआ, ककड़ी, खरगोश)

पढ़ने की पूर्व तैयारी–

शिशुओं में पढ़ने की रूचि स्वयं से होती है। पेपर, किताब, तस्वीरों को लेकर पढ़ना सीखने के पहले ही पढ़ना प्रारंभ कर देते हैं। कभी–कभी वे कहानी गढ़कर भी दूसरों को सुनाते हैं। उनकी इस चित्र पठन क्षमता का भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए। इसके लिए निम्नांकित गतिविधियाँ है।

ऽ चित्र पठन।

- दृश्य विभेदीकरण।
- वस्तुओं को देखकर बोलना।
- चित्रों को देखकर कहानी बताना।
- चित्रों /आकृति में अंतर करना।
- क्रियाओं को देखकर व्यक्त करना।
- चित्रों में कमी ढूंढ़ना।
- शब्द चित्र पढ़ना।
- शब्दों के प्रथम एवं अंतिम वर्ण को पहचानना।
- दो–तीन मात्राओं को पहचानना।

लिखने की पूर्व तैयारी –

आपने शिशुओं को दीवार पर, जमीन पर, रेत में, कागज पर, ऊँगली या लकड़ी से लिखते हुए देखा होगा। मतलब यह है कि शिशुओं में पढ़ने–लिखने की स्वाभाविक रूचि होती है और वे लिखना चाहते हैं, कुछ बनाना चाहते हैं। उनकी इस रूचि को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें पर्याप्त मार्गदर्शन देना चाहिए।

थीम आधारित सामग्री में लेखनपूर्व कौशल विकसित करने के लिए निम्नांकित गतिविधियाँ दी गई है–

- कंकड़ बीज को बनी हुई आकृति में जमाना।
- आड़ी/तिरछी रेखा खींचना।
- बिन्दुओं को जोड़कर आकृति बनाना।
- चुटकी से आकृति/अक्षर पर रंगोली डालना।
- रेतीय अक्षर पर उंगली फिराना।
- कटी भिंडी/आलू से ठप्पा लगाकर आकृति बनाना।
- हाथ के पंजे से छाप बनाना।
- रेत, पानी और हवा में उंगली फिराना।
- कट आऊट से चित्र बनाना।
- कहानी के माध्यम से चित्र बनाना।
- अधूरे चित्र पूरे करना।

व्यक्तिगत, सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास

प्रत्येक शिशुओं के व्यक्तिगत विकास की प्रक्रिया महत्वपूर्ण होती है। व्यक्तिगत विकास से ही उसके व्यक्तित्व की पहचान बनती है। सभी शिशुओं में स्व अर्थात् मेरा की भावना होती है। अपनी चीज बॉल, कपड़े, खिलौने वे किसी को देना नहीं चाहते । कभी–कभी तो वे इन चीजों को किसी को छूने भी नहीं देते हैं। उनमें यह स्व की भावना जन्म से ही होती है। अपने माँ की गोद में किसी अन्य बच्चे को नहीं देख पाते हैं। किसी अन्य को प्यार करते, बात करते नहीं देख पाते हैं। दो लोगों को बात करते देख अपनी बात सुनाने के लिए मुँह पर हाथ रख देते हैं। शिशुओं की इस स्व की भावना को मिलजुल कर खेलने, बाँटकर खाने के लिए प्रेरित करेंगे, जिससे उनका सामाजिक विकास होगा। उनमें सहयोग की भावना का विकास होगा। इन्हीं के साथ शिशुओं में स्वस्थ व स्वच्छ आदतों का विकास होगा। स्वस्थ एवं स्वच्छता से तात्पर्य शरीर से नहीं अपितु पूरी तरह से व्यक्तिगत, सामाजिक समायोजन एवं संवेगात्मक संतुलन से है। शिशुओं की शिक्षा से तात्पर्य पढ़ना, लिखना, सीखने के साथ उसे सामाजिक जीवन जीने योग्य बनाना है।

सामाजिक विकास का तात्पर्य विकास की उस प्रक्रिया से है, जिसके द्वारा सामाजिक वातावरण के साथ समायोजन करना है। सामाजिक नियमों के अनुरूप अपनी इच्छाओं एवं आवश्यकताओं पर नियंत्रण करना है। जन्म के उपरांत बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने संपर्क में आने वाले लोगों के प्रति अनुक्रिया करने लगते हैं जैसे– शिशु खिलौनों से खेलते हैं एवं उसे अपना साथी समझते हैं।

शिशुओं को हमेशा एक साथी की जरूरत होती है। हम शिशुओं के साथ खेलें या उसकी इच्छा के अनुरूप बात करें तो उनका व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास तेजी से होता है। शिशुओं को किसी भी कार्य करने के लिए पूर्ण रूप से अवसर दें। प्रत्येक कार्य को स्वयं करने एवं निर्णय लेने के अवसर दें। गलत तथ्य, भयावह कथन को शिशुओं के सामने न कहा जाए।

1. तीन वर्ष के एक बच्चे के पास अमरूद है। वह उसे चखता है और जब उसे मीठा लगता है, तब वह सभी बैठे लोगों में से उसी को देता है, जिसके साथ वह खेलता है, बातें करता है।

2. अगर माँ रोती है तो बच्चा उसके आँसू पोछता है और खुद भी रोने लगता है। इसका तात्पर्य यह है कि जिसके साथ लगाव या प्रेम ज्यादा होता है उसके प्रति वह संवेदनशील होता है।

नवजात शिशुओं में तीन मूल संवेग पाये जाते है, भय, क्रोध, स्नेह।
शिशु जन्म के समय से ही संवेगात्मक व्यवहार की अभिव्यक्ति करता है। शिशु का रोना, चिल्लाना तथा हाथ पैर पटकना आदि इसके उदाहरण हैं।

शिशु का संवेगात्मक व्यवहार अस्थिर होता है। शिशुओं द्वारा मांग की गई वस्तु नहीं मिलने पर वे अधिक गुस्सा होते हैं । रोता हुआ शिशु खिलौने या दूध पीते ही शान्त हो जाता है। उम्र बढ़ने के साथ–साथ शिशु के संवेगात्मक व्यवहार में स्थिरता आने लगती है। शिशु में मुख्य रूप से पाये जाने वाले संवेग इस प्रकार है :–

क्र.	नैसर्गिक प्रवृत्ति	संवेग
1.	पलायन	डर
2.	युयुत्सा	क्रोध
3.	निवृत्ति	घृणा
4.	प्रार्थना	दुःख
5.	परिपोषण	करूणा
6.	भोग	काम
7.	जिज्ञासा	आश्चर्य
8.	दीनता	आत्महीनता
9.	आत्मगौरव	प्रफुल्लता
10.	सामुदायिकता	अकेलापन
11	जीविका खोजना	तृष्णा, तृप्ति
12	संचय	स्व
13	विधायकता	रचना
14	हँसी	आमोद

इन प्रवृत्तियों के अलावा शिशुओं में कुछ अन्य सामान्य प्रवृत्ति पाई जाती है, जो निम्न हैः–

1. खेल
2. अनुकरण
3. संकेत
4. सहानुभूति

गतिविधियाँ :–

- आपकी आँगनबाड़ी में जो बच्चे साफ सुथरे आते हैं, उन बच्चों को प्रोत्साहित करें ताकि बाकी बच्चे उनसे प्रेरणा ले सकें।
- प्रत्येक अच्छे कार्य के लिए शिशुओं की सराहना करें, जिससे उनका आत्मविश्वास बढ़ेगा। बच्चे से सम्मानपूर्वक, स्नेहपूर्वक व्यवहार करने से आत्मविश्वास बढ़ेगा एवं नैतिक गुणों का विकास होगा।
- समय–समय पर सामूहिक क्रियाओं और खेलों का आयोजन करना चाहिए। जिससे शिशु अपनी बारी का इंतजार करना और दूसरों का सहयोग करना सीखेंगे।

बच्चे आपके व्यवहारों का अनुसरण करते हैं :–

एक माँ छत पर बैठी आलू काट रही थी। उसी समय उसका 3 वर्ष का बेटा वहाँ आया। उसने एक आलू पकड़ा और पूछा कि माँ, क्या मैं इसे फेंक दूँ ? माँ ने कहा – नहीं। बच्चे ने तुरंत आलू नीचे फेंक दिया। बच्चे के ऐसा करते ही माँ ने उसे दो–तीन तमाचे जड़ दिए और बच्चा रोने लगा।

प्रश्न 1 बच्चे ने ऐसा क्यों किया ?

प्रश्न 2 माँ को क्या करना चाहिए था ?

एक बच्चा बहुत ही क्रोधी और जिद्दी स्वभाव का था। उसकी माँ बहुत समझदार थी। एक दिन बच्चा छत पर खड़ा था। उसने देखा कि माँ नीचे खड़ी चूड़ी खरीद रही है। उसे बहुत गुस्सा आया। उसने अपनी माँ से गुस्से में कहा– माँ मैं नीचे कूद रहा हूँ। माँ ने बड़ी चतुराई से कहा– बेटा, थोड़ी देर रूको, मैं ऊपर आती हूँ, फिर हम दोनों साथ में कूदेंगे। ऐसा कहकर माँ ने अपने बच्चे के क्रोध की दिशा को मोड़ दिया। वह ऊपर आई और अपने बच्चे को पुचकारते हुए नीचे ले आई। इस प्रकार उस माँ ने समझदारी से अपने बच्चे को क्रोध के दुष्परिणाम से बचा लिया।

इसी प्रकार कुछ ऐसे उपायों पर आप विचार करें।

सृजनात्मक विकास

शिशुओं की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है– सृजन/रचना। शिशुओं को अपने विचारों के अनुरूप सृजन करने की पूर्ण स्वतंत्रता होनी चाहिए। चाहें वे मिट्टी के खिलौने बनाएँ या कागज़ की नाव बनाएँ। शिशुओं की समस्त रचनाओं का सम्मान किया जाना चाहिए। सभी बातों को ध्यान में रखते हुए ECCE में सृजनात्मक विकास को स्थान दिया गया है।

शिशुओं को वस्तुएँ या खिलौने बनाने में मज़ा आता है। इससे शिशुओं का शारीरिक, मानसिक एवं सृजनात्मक विकास होता है। इस समय बच्चे कुछ करने के लिए आत्मविश्वास से भरे होते हैं। शिशु अगर मिट्टी या रेत से घर बनाता है, तो यह कार्य उन्हें भावी इंजीनियर बनायेगा। वास्तव में ये खेल ही उनके कार्य हैं, पर अज्ञानतावश हम शिशुओं की इस रचनात्मक क्रिया में अवरोध उत्पन्न करते हैं, और उनका सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता । माँ उसे सिर्फ कपड़े गंदे न हो जाये इस उद्देश्य से रोकती है।

हमें चाहिए कि शिशु जैसे–जैसे बड़ा हो, उसकी रचनात्मक प्रवृत्ति को बढ़ावा दें। लकड़ी के गुटके, सुई–धागा, बड़े–बड़े मोती, कैंची, गोंद, मिट्टी एवं रेती से बच्चे अपनी समझ तथा आयु के अनुसार कई नई चीज़ें बना सकते हैं। हमें चाहिए कि उनके खेलों में सहयोग देकर हम उन्हें बढ़ावा दें। उपयोगी वस्तुएँ बनाना सिखाएँ। अलग–अलग आकारों, रंगों से परिचित कराएँ। शिशु अलग–अलग आकारों, रंगों से अपनी कल्पनाओं को सजीव करते हैं। ऐसा करने में उन्हें आनंद आता है। उनका विकास तेजी से होने लगता है। उन्हें पेंसिल या चॉक से आड़ी, तिरछी रेखाएँ खींचने, रंग भरने, खिलौने बनाने, छापने आदि के अवसर देने चाहिए। ऐसी क्रियाओं से शिशुओं की छोटी मांसपेशियों का विकास होता है। आँखों एवं हाथों में समन्वय स्थापित होता है। सृजनात्मकता द्वारा शिशुओं की कल्पनाशीलता, स्मरण शक्ति को बढ़ाया जा सकता है।

सृजनात्मक विकास हेतु निम्नांकित गतिविधियाँ की जा सकती है–

1. मिट्टी से खिलौने बनाना :– दीदी बच्चों को गीली मिट्टी देकर बच्चों से कोई भी खिलौना बनवायें। उनके बनाये खिलौनों को केन्द्र में सजा कर रखें।

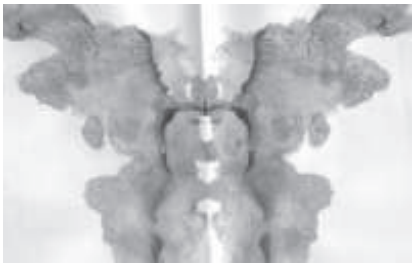

2. थ्रेड वर्क :– दीदी सभी बच्चों के साथ गोल घेरे में बैठेंगी। नील, आलता, गुलाल, स्याही को पानी में डाल कर गाढ़ा रंग तैयार करेंगी। धागे को रंग में डुबायेंगी फिर निकाल कर निचोडेंगी। धागे को कोरा कागज़ के बीच में मनचाही आकृति में फैला कर छोर को नीचे की ओर रखेंगी। पेपर को बन्द कर उस पर हाथ रखकर धागे के छोर को पकड़ कर पूरे धागे को बाहर खीचेंगी।

3.कोलॉज़ वर्क :– दीदी सभी बच्चों से रंगीन कागज के छोटे–छोटे टुकड़े करवायेंगी। फिर बच्चों से किसी आकृति में इन टुकड़ों को चिपकवायेंगी।

4. पंजो से छापना :– सभी शिशुओं के सामने नील/गेरू/आलता का पानी रखेंगे। क्रमशः शिशुओं से रंगों में हाथ डुबाने और छापे लगाने को कहेंगे।

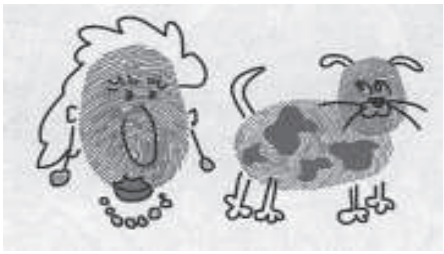

5. अंगूठे के छाप से आकृति बनाना :– सभी शिशुओं को सफेद कागज देंगे और स्टॉम्प पैड देंगे और अंगूठे के छाप से चित्र बनाने के लिए कहेंगे।

6. भिन्डी आलू से ठप्पा लगाना :– भिण्डी को काटकर उसे हल्का सा रंग में डुबोकर बनी हुई आकृतियाँ दीदी बनाकर दिखायेंगी और शिशु भी भिण्डी से छाप लगायेंगे। आलू को आधा काटकर दीदी उसमें कुछ डिज़ाइन बनायेंगी और रंग में डुबोकर छाप लगायेंगी और शिशु भी आलू से छापे लगायेंगे।

7. माला बनाना :– रद्दी कागज को लंबा–लंबा फाड़कर शिशुओं को छोटी पोंगी बनवायेंगे। ऐसा सब शिशुओं से करायेंगे फिर धागे में पिरोने को कहेंगे। स्थानीय फूलों से दीदी शिशुओं को माला बनाकर दिखायेंगी फिर शिशु माला बनायेंगे।

8. ट्रेस करना :– गोल, तिकोन या किसी Cut out के द्वारा आकृतियों को दीदी ट्रेस करके दिखायेंगी फिर शिशु भी ट्रेस करेंगे।

9. पत्तियों से तोरण/दोना पत्तल बनाना :– पत्तियों को तोड़कर धागे में पिरोकर दीदी तोरण बनाकर दिखायेगी फिर शिशु भी तोरण बनायेंगे।

पत्तियों से दीदी दोना, पत्तल बनाकर शिशुओं को दिखायेगी फिर क्रमशः सभी शिशु भी बनायेंगे।

10. ग्रीटिंग कार्ड बनाना :–

- पेंसिल के छीलन से अलग–अलग आकृतियाँ बनाकर ग्रीटिंग बना सकते हैं।
- चित्रकारी करके भी ग्रीटिंग कार्ड बनावा सकते हैं।
- धागे के गुच्छे अलग–अलग रंगो में डुबोकर छापकर भी ग्रीटिंग कार्ड बनाया जा सकता है।
- झाड़ू की सींक को चिपकाकर विभिन्न आकृतियाँ बनाकर भी ग्रीटिंग कार्ड बनाया जा सकता है।
- पुराने शादी कार्ड से भी ग्रीटिंग कार्ड बनाये जा सकते हैं।
- मौली धागा को चिपकाकर भी ग्रीटिंग कार्ड बनाया जा सकता है।

11. पत्तियों से चित्र बनाना :– विभिन्न प्रकार की पत्तियों जैसे कनेर, पीपल, नीलगिरी, अशोक, गुलाब, दशमत आदि को इकट्ठा करके दबाकर रखेंगे फिर दीदी अलग–अलग आकृतियाँ बनाकर दिखायेंगी और शिशु भी उसे बनायेंगे।

12. स्प्रे वर्क – दीदी रंग में ब्रश को डुबायेंगी और पेपर पर कोई आकृति रखकर उसके चारों तरफ चाय की छन्नी या ब्रश की मदद से स्प्रे करेगी। फिर स्प्रे का काम पूरे होने के बाद पेपर रखी हई आकृति को हटा देंगे और शिशुओं को दिखायेंगे और सभी शिशुओं से स्प्रे वर्क करवायेंगे।

शिशु शिक्षा का स्वरूप

शिशु शिक्षा का स्वरूप बहुत ही सहज और स्वाभाविक होना चाहिए। शिशु अत्यंत चंचल और क्रियाशील होते हैं अतः उनकी शिक्षा भी क्रिया द्वारा होनी चाहिए।

1. वातावरण

आँगनबाड़ी का शैक्षिक एवं भौतिक वातावरण बच्चों के अनुकूल होना चाहिए। जैसे– दीवारों में चार्ट, अनमोल वचन, सुंदर दृश्य/चित्र खेलने हेतु खिलौने, मॉडल, स्थानीय सहायक सामग्री, निरूपयोगी वस्तुएं जो सीखने/बनाने के काम आयें, केन्द्र में होना चाहिए।

भौतिक वातावरण के अंतर्गत कक्ष एवं आसपास– साफ–सफाई, पुताई होना चाहिए। गड्ढे/कीचड़ दलदल नहीं होना चाहिए। शिशुओं को घर में खेलते–खाते हुए माता–पिता, छोटे–भाई–बहन का दुलार मिलता है एवं बच्चे प्रसन्नता महसूस करते हैं। उसी प्रकार शिशु जब आँगनबाड़ी में आयें तो उन्हें घर जैसा वातावरण मिलना चाहिए जैसे– भय रहित, वातावरण। कार्यकर्ता का प्रेमपूर्ण व्यवहार होना चाहिए। शिशुओं को आपस में प्रेम होना चाहिए। मनोरंजक खेल कराना चाहिए।

2. प्रोत्साहन तथा सुरक्षा की गारंटी

प्रश्न– बच्चा अपनी माँ के गोद में क्यों बैठना चाहता है ?

आइए इस प्रश्न पर विचार करें।

विचार करने पर पता चलता है कि बच्चे को सबसे ज्यादा सुरक्षा की आवश्यकता होती है। इसे वह अपनी माँ के गोदमें सबसे अधिक पाता है, जब उसे किसी तरह का कष्ट होता है तो उसके मुँह से माँ शब्द निकलता है।

जिस प्रकार बच्चे की माँ सुरक्षा देती है, उसी तरह की सुरक्षा का एहसास बच्चे को आंगनबाड़ी में होना चाहिए।

इससे सीखने के लिए रचनात्मक कार्यों से प्रोत्साहन मिलता है। बच्चा जब भी अच्छा काम करता है तो कार्यकर्ता को चाहिए कि बच्चे की खूब प्रशंसा करें। जिससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ेगा एवं गलतियाँ अपने आप कम होती चली जायेंगी।

3. आनंददायी शिक्षा

शिशुओं की शिक्षा रूचिकर एवं आनंददायी हो। प्रतिदिन एक या दो गतिविधि के पश्चात् आंतरिक एवं बाह्य खेल जरूर खेलाएँ। गीत और नृत्य को पर्याप्त स्थान दें। प्रत्येक गतिविधि बच्चों के मन को रिझाने वाली हो।

4. स्फूर्तिदायक क्रियाएँ

शिशु शिक्षा में स्फूर्तिदायक क्रियाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। प्रत्येक गतिविधि के पहले शिशुओं को एकाग्र करने और उत्तेजित करने हेतु स्फूर्तिदायक क्रियाएँ अवश्य कराई जानी चाहिए।

5. व्यक्तिगत विशेषताओं को स्थान देना

शिशुओं की शिक्षा उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं, को स्थान देने वाली हो जैसे–यदि किसी बच्चे को चित्र बनाने में रूचि है तथा किसी बच्चे की रूचि भाषा सीखने में है। दोनों बच्चों को दोनों गतिविधि सिखाना है। अतः शिक्षिका दोनों बच्चों को एक साथ कैसे पढ़ायेंगी।

- जो बच्चा चित्र बनाता है उसे चित्र से भाषा की ओर ले जायेंगी।
- भाषा सीखने में रूचि रखने वाले बच्चे को भाषा के वर्णों से चित्रकारी सिखायेंगी।

इस प्रकार बच्चों की व्यक्तिगत भिन्नताओं को शिशु शिक्षा में विशेष स्थान मिलेगा।

6. व्यवहारिक ज्ञान के अवसर

शिशुओं द्वारा प्राप्त व्यवहारिक ज्ञान का उपयोग शिक्षा में किया जाना चाहिए। साथ ही आँगनबाड़ी से प्राप्त शिक्षा को शिशु अपने व्यवहारिक जीवन में प्रयोग कर रहें है या नहीं इस बात की पुष्टि भी आँगनबाड़ी कार्यकर्ता द्वारा की जानी चाहिए।

उदाहरण – यदि आँगनबाड़ी में मटर की सब्जी बन रही हो तो बच्चों से ही मटर छिलवाया जाना चाहिए।

7. कल्पना शक्ति का विकास करने वाली हो

शैशावस्था की मूल विशेषता है कल्पनाशीलता। उनकी कल्पनाशीलता का विकास करने के लिए उनकी समझ के अनुरूप विभिन्न प्रश्न रखने चाहिए। जैसे –

1. यदि आपके पंख होते तो आप क्या करते?
2. यदि आपको जादू की छड़ी मिले तो आप क्या करेंगे?

8. नेतृत्व गुण का विकास

प्रत्येक शिशु को एक निश्चित अवधि के लिए नेतृत्व करने के पर्याप्त अवसर दिये जाने चाहिए।

9. स्वावलंबन एवं स्वअनुशासन का विकास

शिशु शिक्षा स्वयं से कार्य करके सीखने को प्रेरित करने वाली हो। साथी ही बच्चों में स्व अनुशासन की भावना विकसित करने वाली हो। जैसे – अपनी कंघी करना, नाक पोंछना, कपड़े पहनना, दिन–दिनांक से चार्ट लगाना इत्यादि।

10. आत्मविश्वास जागृत करने वाली हो

शिशुाअें को ऐसी गतिविधियाँ कराना जिससे बच्चे स्वयं निष्कर्ष निकाल सकें। इससे शिशुओं का आत्मविश्वास जागृत होता है। शिशुओं को प्रोत्साहन और प्रशंसा देने से आत्मविश्वास की वृद्धि होती है। हम स्वयं उदाहरण बनकर अनुकरणीय, परस्पर सहयोगी और आत्मसम्मान को बनायें रखने वाले हों। जैसे –

- हम शिशुओं से जिस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करते हैं। उसी प्रकार का व्यवहार बच्चों के साथ करना चाहिए। शिशु हमारे व्यवहारों का अनुकरण करते हैं। जूतों को कतार में जमाकर रखना, पानी पीकर गिलास को व्यवस्थित रखना।
- शिशुओं में परस्पर सहयोगी होने की भावना का विकास करना।
- आत्मसम्मान को बनाए रखना।
- शिशुओं को गलती करने पर सबके सामने डाँटे नहीं।
- शिशुओं की अच्छाइयों की प्रशंसा करें।

11. स्वयं करके सीखना

सहायक शिक्षण सामग्रियाँ स्वयं करके सीखने की परिस्थितियाँ निर्मित करने वाली हों।

12. अनौपचारिक शिक्षा – औपचारिक शिक्षा में समन्वय

शिशु शिक्षा अनौपचारिकता के साथ विषयों के प्रारंभिक ज्ञान देने वाली हो।

13. पूर्व ज्ञान को महत्व

शिशुओं के पूर्व के अनुभवों एवं पूर्व ज्ञान को विषय के साथ जोड़कर ज्ञान को परिपुष्ट करने वाली शिशु शिक्षा हो।

14. अच्छे गुणों का विकास

शिशु शिक्षा शिशुओं में अंतर्निहित अच्छे गुणों जैसे– सत्य बोलना, न्यायवादिता, प्रेमभाव स्वयं करने की इच्छा, आदि को दिशा देने वाली, स्वावलंबन, स्वअनुशासन, स्वच्छता, सहयोग आदि गुणों का विकास करने वाली हो।

15. विश्वासनीय हो

शिशु शिक्षा का स्वरूप इस प्रकार हो कि हमें यह विश्वास हो कि हमारा शिशु सीख लेगा। भले ही शिशुओं को सीखने में विलंब हो जाए।

16. अंतर्निहित क्षमताओं को उजागर करने वाली हो

शिशु विज्ञान के समान चमत्कारिक है। उनमें जिन्दादिली है, लोच है, कुछ करने जानने की उत्सुकता है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि कोई सही तरीके से उनकी योग्यता, रूचि और क्षमता के अनुरूप अंतर्निहित प्रतिभा को उभार सकें।

17. शिशुओं की जिज्ञासाओं को शांत करने वाली हो

शिशु जब इस संसार में आता है तभी से उसकी जानने और करने की प्रवृत्ति उसे क्रियाशील बनाती है। इस स्वाभाविक प्रवृत्ति से ही वह धीरे–धीरे सीखता है और जीवन का मधुर आनंद लेते हुए वह आगे बढ़ता हैं। उसके इस सरल स्वाभाविक जीवन, सुखद सौंदर्य को अपनी झुंझलाहट एवं क्रोध से नष्ट न करें। शिशु शिक्षा में इस प्रकार के विषय वस्तुओं का समावेश हो, जो बच्चों की जिज्ञासाओं को शांत कर सकें। उनकी जिज्ञासाओं जैसे– यह क्या है? यह किसका हैं? यह कैसे बना? आदि के उचित उत्तर देकर संतुष्ट करना चाहिए।

18. सिखाने में लचीलापन हो–

शिशु शिक्षा के लिए सामग्री ऐसी हो कि बच्चे अपनी रूचि के अनुसार कहीं से सीखना प्रारंभ कर सकें। साथ ही वे अपनी क्षमता, स्तर और गति के अनुसार सीख सकें।

''शिशुओं को आवश्यक प्रेरणा प्रदान करने का उत्तरदायित्व अभिभावकों पर ही रहेगा।''

डॉ. के गोपालन

वर्तमान परिवर्तन की आवश्यकता

1. बच्चों का शैक्षिक उन्नयन होना चाहिए।
2. पोषण के साथ–साथ शैक्षिक आवश्यकता की पूर्ति होनी चाहिये।
3. एक व्यवस्थित क्रम का निर्धारण होना चाहिए।
4. ऐसी कोई शिक्षा प्रणाली होना चाहिए जिसमें शैक्षिक कारणों को क्रियान्वित करने में सरलता एवं सुविधा का अनुभव कर सकें।
5. कार्डों के रूप में शैक्षिक सामग्री बच्चों के हाथ में पहुँचे ताकि वे स्वयं गतिविधियों में संलग्न हो सके।
6. क्रियाकलापों को प्रभावी ढंग से कर शैक्षिक विकास कर सकें।
7. थीम आधारित क्रियाकलाप सीखने के लिये आवश्यक है।
8. प्रत्येक थीम की समस्त जानकारियाँ व्यवस्थित रूप से मिल सकें।
9. शैक्षिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकें।
10. प्रशिक्षण के स्वरूप में परिवर्तन हो। प्रशिक्षण प्रायोगिक हो एवं प्रतिदिन कुछ घंटे क्रियाकलाप कराया जा सके।
11. ठोस सामग्री को इकट्ठा कर उससे सामग्री निर्माण कर सकें प्रशिक्षण में इन सामग्रियों को स्वयं अपने हाथ से बना सकें।
12. प्राथमिक शिक्षा के लिये बच्चों को तैयार कर सकें।

•••

थीम

थीम क्या है ?

- थीम जानकारी देने वाले विषय है।
- थीम के माध्यम से बच्चों में शैक्षिक विकास के साथ अच्छी आदतों का विकास किया जाता है।
- बच्चों के परिवेशीय वातावरण से वस्तुएँ लेकर उन्हें थीम के रूप में चिन्हांकित किया गया है।
- थीम शाला पूर्व तैयारी का आधार है।
- थीम में शामिल गतिविधियों के द्वारा बच्चों के सम्पूर्ण विकास की संभावनाओं को तेज करती है।
- थीम के माध्यम से केन्द्र में प्रतिदिन विभिन्न नये–नये क्रियाकलाप होंगे।
- थीम के माध्यम से शिशुओं में पाठ्यक्रम की दक्षताओं का विकास किया जाता है।

थीम को शिशु शिक्षा के पाठ्यक्रम आधारित बनाया गया है।

थीम पर चर्चा–

तीन से छः वर्ष के शिशुओं के शैक्षिक विकास हेतु 50 विषयवस्तु निर्धारित किये गये हैं इन विषयों पर पाँचों विकास (संज्ञानात्मक, व्यक्तिगत सामाजिक एवं संवेगात्मक, शारीरिक, भाषायी, एवं सृजनात्मक विकास) हेतु क्रियाकलाप तैयार किये गये हैं। शिशुओं के संपूर्ण विकास के लिए पाठ्य सामग्री का निर्माण किया है, जिससे बच्चे सहजता से सीख सकें। 50 थीमों के नाम निम्नलिखित हैं–

1. हमारा परिवार	2. हमारा घर
3. मेरा गाँव	4. आँगनबाड़ी
5. बाजार	6. हमारा शरीर
7. साफ–सफाई	8. दिनचर्या
9. खेल	10. समय
11. जंगली जानवर	12. पालतू जानवर
13. जीव–जंतु	14. कीड़े–मकोड़े

15. पक्षी
16. उपकरण
17. संचार के साधन
18. धातु
19. यातायात के साधन
20. सुरक्षा
21. अस्पताल
22. दैनिक उपयोग की वस्तुएं
23. सर्कस
24. हमारे मददगार
25. शाला
26. बागवानी
27. पेड़–पौधे
28. फूल
29. फल
30. रंग
31. रसोई
32. भोजन
33. सब्जी
34. आग
35. जंगल
36. नदी
37. पहाड
38. धरती
39. आकाश
40. हवा
41. पानी
42. कपड़े
43. परिवेश
44. ऋतुएं
45. मेला–मड़ई
46. त्यौहार
47. हमारे लोक कलाएं
48. हमारी वेशभूषा
49. खिलौना
50. पर्यावरण संरक्षण

"शिशुओं की पुकार– " देखो संभलकर रहना, तुम्हारी हरकतों का मैं आइना हूँ, जैसा तुम करोगे मुझे भी वैसा ही करता पाओगे।"

–सावित्री देवी वर्मा

परिवेश

43

अवलोकन कार्ड-

घर

बकरी

चिड़ियाँ

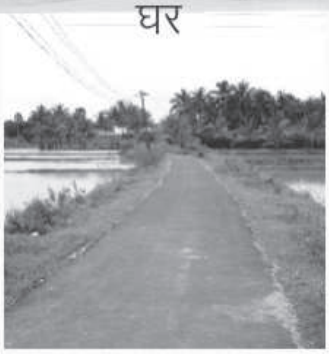

सड़क

गाय

दुकान

कुआँ

नल

खेत

नलकूप

Card - 1 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

परिवेश

अंदर-बाहर

प्रश्न : मूँगफली, इमली और अनार के अंदर क्या होते हैं।

Card - 1 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

परिवेश

43

चिकना-खुरदरा -

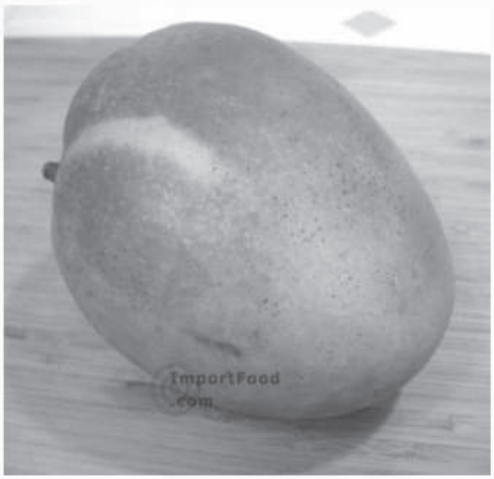

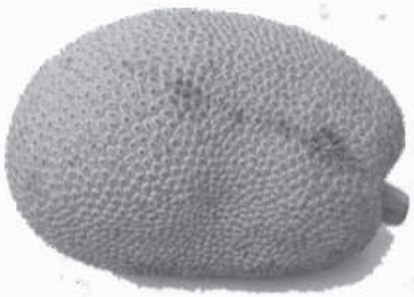

Card - 2 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

परिवेश

43

स्वाद पहचानना-

खट्टा

मीठा

नमकीन

तीखा

आकार क्रमीकरण-

निर्देश : अपने आसपास के वातावरण, सामान, खेत और खलिहान के बारे में जानकारी देना।
घुलनशीलता के बारे में बताएँ एवं घोलने की क्रिया कराएँ

Card - 2 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

परिवेश

43

ऊपर - नीचे

Card - 3 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

परिवेश

43

दृश्य विभेदीकरण

क्या गायब

Card - 3 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

परिवेश

43

निर्देश : रोटी बनाना किसका काम है?
आपके घर में झाड़ू कौन लगाता है?

Card - 4 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

परिवेश

निर्देश : क्या आपने कभी पेड़–पौधो लगाये हैं?
क्या आप पेड़/पौधो को पानी देते हैं?

Card - 4 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

परिवेश

मेंढ़क दौड़ करना-

रिंग चलाकर दौड़ने की क्रिया -

Card - 5 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

परिवेश

43

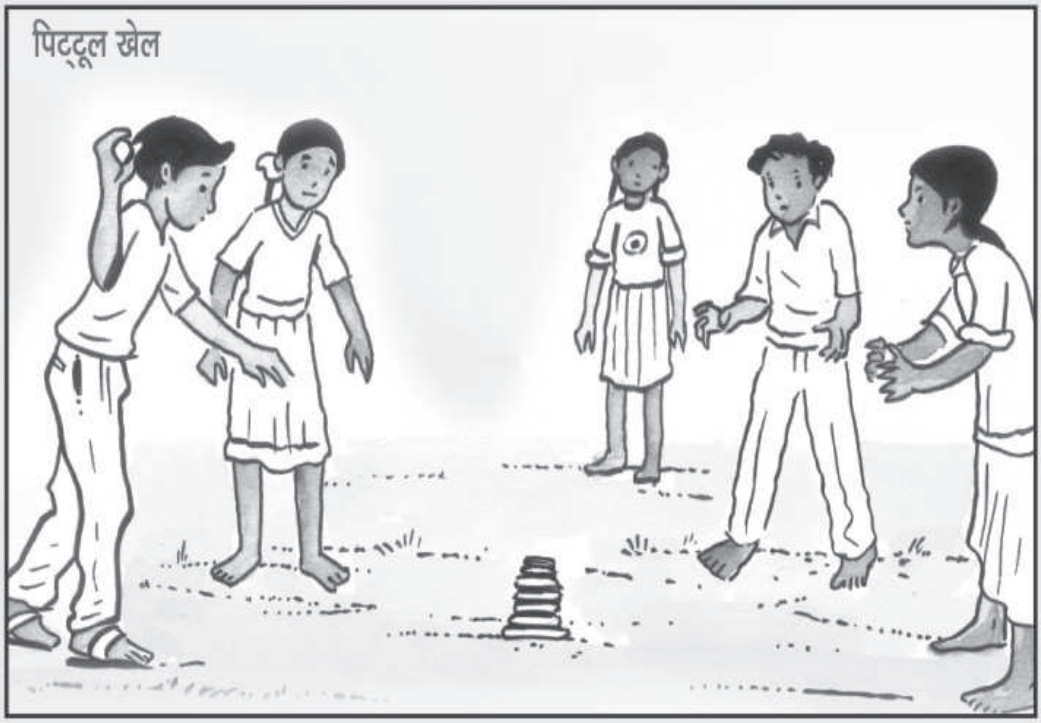

Card - 5 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

परिवेश

43

चीनी चाची रस पिलाकर,
कहती बेटे प्यारे।
थाली में लगते हो ऐसे,
ज्यों अम्बर के तारे।

चंदा जैसा गोल गोल हूँ,
सूरज सा चमकीला।
आसमान से बहुत दूर हूँ,
मीठा और रसीला।

माँ मुझे साबुन दो, नदी नहाने जाऊँगी।
कपड़ा धोकर आऊँगी, गंजी का भात खाऊँगी।
आंगनबाड़ी जाऊँगी, अच्छी बच्ची कहलाऊँगी।

माँ मुझे साबुन दो, नदी नहाने जाऊँगा।
कपड़ा धोकर आऊँगा, गंजी का भात खाऊँगा।
आंगनबाड़ी जाऊँगा, अच्छा बच्चा कहलाऊँगा।

एक था बंदर मस्त कलन्दर,
बैठा था गाड़ी के अंदर।
गाड़ी करती पों–पों–पों,
बंदर करता खों.–खों–खों।

निर्देशः– अभिनय, लय के साथ गीत को गाएँ और बच्चों को भी गवाएँ।

Card - 6 - 7

43

कपड़े

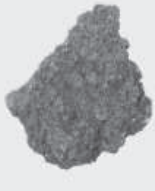

एक ढेला व एक पत्ता था। दोनों की बहुत दोस्ती थी। एक दिन आँधी आने वाली थी, तो पत्ता कहने लगा कि जब आँधी आयेगी, तो मैं उड़ जाऊँगा। ढेले ने कहा–भाई पत्ता जब आँधी आयेगी, तो मैं तुम्हारे ऊपर बैठ जाऊँगा। हवा तुम्हें नहीं उड़ा सकेगी। आँधी आई और चली गई, लेकिन पत्ता बच गया। एक दिन आकाश में बादल छाये। ढेला बोला– बारिश होगी और मैं घुल जाऊँगा। तब पत्ते ने कहा– डरो मत, जब बारिश होगी, तो मैं ढँक लूँगा। थोड़ी देर में बारिश हुई, लेकिन ढेला नहीं भींगा। दोनों बहुत खुश हुए। अब दोनों साथ–साथ रहने लगे।

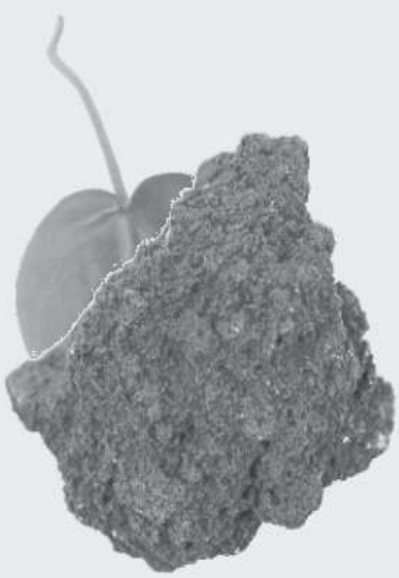

निर्देशः–चित्र के माध्यम से कहानी सुनाएँ तथा बच्चों को तर्क विवेचन के लिये प्रश्न करें।

Card - 6 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

परिवेश

1. अधूरे चित्र पूरे करना -

2. रंग भरना

Card - 7 - 7

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

परिवेश

3. बिन्दु मिलान

4. मिट्टी से पक्षी, जानवर, फूल बनाना।

5. रेत पर आकृति बनाना।

6. मोती फूल, पत्तियों से माला बनाना।

43

पेड़

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

तोता

तो ता

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

पत्ती

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

फूल

फू ल

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

गाय

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

फल

फ ल

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

पेड़

पे ड़

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

तोता

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

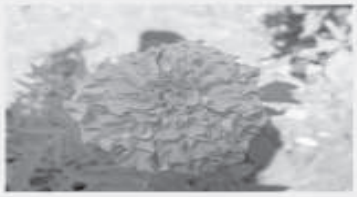

फूल

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

पत्ती

प त्ती

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

फल

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

43

गाय

गा य

उड़ान (एस.सी.ई.आर.टी.छ.ग.)

थीम की विशेषताएँ–

1. थीम में छत्तीसगढ़ के परिवेश को ध्यान में रखते हुए विषयवस्तु लिए गए है।
2. इसमें शिशुओं के अनुभवों को सम्मिलित किया गया है।
3. विषयों का चयन करते समय शिशुओं के विकास के स्तर को ध्यान में रखा गया है ।
4. कार्यप्रणाली व्यवस्थित बनाई गई है, जिससे कार्यकर्ताओं को भटकना न पड़े।
5. सभी विषय रूचिकर है, जिससे शिशुओं के सीखने के गति में तीव्रता आएगी।
6. थीम की गतिविधियॉ रोचक एवं दैनिक जीवन से संबंधित हैं।

थीम के आधार पर सीखने से लाभ

1. कार्ड शिशुओं के हाथ में जायेगा जिससे उनका आत्म विश्वास बढ़ेगा।
2. शिशु स्वयं सीख सकेंगे।
3. गतिविधियों को सीखने में आसानी होगी।
4. विषयों के कार्ड–अवलोकन एवं खेल पर आधारित है जिससे शिशु खेल–खेल में सीख जायेंगे।
5. सीखने में सफलता मिलेगी एवं जल्दी सीखेंगे।
6. कार्यकर्ता गतिविधि कराने में रूचि दिखायेंगी।
7. शिशुओं में तर्क विवेचन, कल्पनाशीलता का निश्चित रूप से विकास होगा।
8. शिशुओं में आत्म विश्वास की भावना जागृत होगी।
9. शिशुओं में पाँचों विकास तेज़ गति से होगा।
10. थीम बनाने का जो उद्देश्य है, उनकी पूर्ति पूरी तरह हो जायेगी (शाला जाने के पूर्व की तैयारी)।
11. कार्ड पूरी तरह से ECCE के उद्देश्यों की पूर्ति करेंगें।
12. शाला पूर्व तैयारी हेतु थीम आधारित कार्ड शिशुओं की प्रारंभिक नींव को मज़बूत (सशक्त) करेंगे, कार्डों के उपयोग से प्राथमिक शिक्षा का स्तर ऊँचा उठेगा।
13. यह बच्चों के विकास के लिये निश्चित रूप से क्रांतिकारी शुरूआत होगी।

थीम वेब

थीम वेब क्या है ?

1. विषयों का जाल
2. एक ही तरह के विषयों का जाल
3. बच्चों की समग्र समझ हेतु थीम के जाल बनाये गए हैं। जिसमें 4 से 6 थीम को एक साथ रखा गया है, जिसे समझने में आसानी होगी।
4. सीखने के क्रमानुसार विषयों को छोटे–छोटे समूहों एवं उपसमूहों में बाँटे गए विषयों को थीम वेब कहेंगे।
5. विषयों को परस्पर सहसंबंध स्थापित कर समझ को आसान करना और सीखने की गति को तेज करना।

थीम वेब कैसे बने ?

1. एक दूसरे से मिलते जुलते थीमों को मिलाकर एक समूह बनाया गया ।
2. इसमें सीखने के क्रम को ध्यान में रखा गया है।
3. इस तरह से 50 थीम के 10 थीम वेब बनाए गए है।

1.	हमारा परिवार
2.	हमारा घर
3.	मेरा गाँव
4.	आँगनबाड़ी
5.	बाज़ार

6.	हमारा शरीर
7.	साफ–सफाई
8.	दिनचर्या
9.	खेल
10.	समय

11.	जंगली जानवर
12.	पालतू जानवर
13.	जीव–जंतु
14.	कीड़े–मकोड़े
15.	पक्षी

16.	उपकरण
17.	संचार के साधन
18.	धातु
19.	यातायात के साधन
20.	सुरक्षा

21.	अस्पताल
22.	दैनिक उपयोग की वस्तुएँ
23.	सर्कस
24.	हमारे मददगार
25.	शाला

26.	बागवानी
27.	पेड़–पौधे
28.	फूल
29.	फल
30.	रंग

31.	रसोई
32.	भोजन
33.	सब्जी
34.	आग

35.	जंगल
36.	नदी
37.	पहाड़
38.	धरती
39.	आकाश

40.	हवा
41.	पानी
42.	कपड़े
43.	परिवेश
44.	ऋतुएँ

45.	मेला–मड़ई
46.	त्यौहार
47.	हमारी लोककलाएँ
48.	हमारी वेशभूषा
49.	खिलौना
50.	पर्यावरण संरक्षण

थीम वेब क्यों ?

1. थीम वेब के द्वारा सीखने के क्रम को आधार प्रदान किया जा सकता है।
2. सारांशीकरण – थीम वेब के आधार पर प्रत्येक शिशु को न्यूनतम विषयवस्तु सिखाना सुनिश्चित करने के लिए सारांशीकरण कार्ड बनाए गए है।
3. समूहीकरण – थीम वेब के माध्यम से थीमों का समूहीकरण किया गया है। प्रत्येक समूह में आने वाले थीम को सुविधानुसार किसी भी क्रम में पढ़ाया जा सकता है।
4. दक्षताओं की पुनरावृत्ति के लिए।
5. पाठ्यक्रम की इकाइयों के क्रम के लिए।

6. दक्षताओं का अभ्यास अन्य संदर्भ में – अलग–अलग संदर्भो में एक ही विषयवस्तु को बार–बार समझने का अवसर मिलता है।
7. सामूहिक चर्चा कार्ड – एक थीम वेब पर सामूहिक रूप से बड़ी आकृति में रंगीन चित्रमय कार्ड तैयार किये गये है इससे चर्चा करायेंगे।
8. विषयवस्तु को लचीला बनाने के लिए।
9. समझ की स्पष्टता के लिए – एक दूसरे से संबंधित थीमों का क्रमबद्ध अध्ययन करने से विषयों की संपूर्ण समझ की स्पष्टता आएगी।
10. परिवेश के ज्ञान से सहसंबंध स्थापित करने के लिए।

थीम वेब से लाभ

1. शिशुओं की संपूर्ण समझ का विकास होगा।
2. पूर्व ज्ञान का व्यावहारिक ज्ञान से सहसंबंध स्थापित होगा।
3. थीम वेब के माध्यम से गतिविधि कराते हुए शिशुओं की क्षमता का परीक्षण या मूल्यांकन किया जा सकेगा। व्यवस्थित मूल्यांकन के उपकरण के रूप में इसे देखा जा सकता है।
4. पुनर्बलन – सीखे हुए ज्ञान को बार–बार गतिविधि करने का अवसर मिलता है। इससे सभी बच्चों को अभ्यास के अधिक–से–अधिक अवसर मिलते है।
5. इससे पाठ्यक्रम की पूर्णता सुनिश्चित होगी।
6. सभी थीमों की जानकारी होगी।
7. कार्यकर्ता को पढ़ाने में सुविधा होगी।
8. सामग्री की व्यवस्था करने में सुविधा होगी।

चर्चा कार्ड के दो स्वरूप होंगे–

1. थीम आधारित चर्चा कार्ड संज्ञानात्मक विकास के कार्ड हैं, जो प्रत्येक थीम के लिए बनाए गए हैं।

2. थीम वेब पर आधारित चर्चा कार्ड हैं, जो थीम वेब के अंतर्गत आने वाली सभी थीमों को मिश्रित कर बनाये गये हैं।

चर्चा कार्ड में बने चित्रों को बच्चों को दिखाकर केवल उनसे चर्चा करवाना है।

"प्रत्येक राष्ट्र का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है– अपने बच्चों की उन्नति करना।"
– श्री जवाहरलाल नेहरू

चर्चा कार्ड क्यों ?

चर्चा की गतिविधि अपने आप में क्षमताओं का विकास करने वाली गतिविधि है। चर्चा की गतिविधि कराने से निम्नलिखित लाभ है :–

1. अभिव्यक्ति कौशल का विकास होगा।
2. समझ का विकास होगा।
3. कल्पनाशीलता का विकास होगा।
4. नैतिक गुणों का विकास होगा।
5. रचनात्मक प्रवृति का विकास होगा।

जूनियर–सीनियर समूह

पाठ्यक्रम का निर्माण करते समय बच्चों की क्षमता, बालमनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए उन्हें दो समूहों में विभाजित किया गया है।

1. जूनियर समूह :– जो नवप्रवेशी बच्चे होंगे अर्थात 3 से 4 वर्ष के बच्चों को जुनियर समूह में रखा गया है।

2. सीनियर समूह :– इसमें 4 से 6 वर्ष की आयु के बच्चों को रखा गया है।

आँगनबाड़ी केन्द्र में जब शिशुओं को प्रवेश दिया जाता है। तब शुरू में शिशुओं को वहाँ की गतिविधि को कम से कम पांच दिन स्वतंत्र रूप से करने दें। फिर कम–से–कम सात दिन के बाद ही थीम का कार्ड दें।

जूनियर समूह के कार्डो पर शिशुओं की समझ बन जाने के बाद सीनियर समूह के कार्ड दिये जा सकते हैं।

बड़े बच्चे जब आँगनबाड़ी में प्रवेश करें तब प्रारंभ में जूनियर समूह के कार्ड पर समझ बनने के बाद सीनियर समूह के साथ खेल या शिक्षण कराया जा सकता है।

शिशु शिक्षा में दैनिक कार्यक्रम में प्रार्थना, शारीरिक विकास के खेल, व्यक्तिगत एवं सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास के कार्ड, भाषा विकास तथा सृजनात्मक विकास की गतिविधियाँ में सभी शिशुओं की अपनी रूचि एवं क्षमता के अनुरूप समान सहभागिता होगी। सभी थीम में संज्ञानात्मक विकास के कार्डो में जूनियर, सीनियर समूह के लिए अलग–अलग गतिविधियाँ दी गयी हैं।

"हमारे शिशुओं को कमजोर न कहें वे अपने आप शक्तिशाली बन जायेंगे।"
– सचिव, स्कूल शिक्षा

मूल्यांकन

मूल्यांकन का अर्थ इतना सीमित नहीं बल्कि व्यापक है। मूल्यांकन अर्थात् ''मूल्य का अंकन''। मूल्य से तात्पर्य है – मानसिक योग्यता, व्यक्तिगत एवं सामाजिक मूल्य, शारीरिक योग्यता, विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता तथा नई–नई रचनाएँ करने की क्षमता। अंकन से तात्पर्य– किसी व्यक्ति या शिशु में इन समस्त मूल्यों का निष्पक्षता से मापन।

इस प्रकार मूल्यांकन एक ऐसा उपकरण है, जो शिशु के विकास को दर्शाता है। विभिन्न गतिविधियों द्वारा उनमें आयी समझ/कौशल को दिखाता है।

मुख्य उद्देश्य हैं –

1. शिशुओं के सीखने को जानना।
2. शिशुओं के सीखने के स्तर को जानना।
3. शिशुओं की रूचि को पहचानना।
4. शिशु के पूर्व ज्ञान को जानना और नये अनुभव के साथ संबंध स्थापित करना।
5. शिशुओं की क्षमता को पहचानना।
6. शिशुओं को सीखने की दिशा देने के लिए।
7. शिशुओं की कमियों के निदान के लिए।
8. सभी शिशुओं की सक्रिय हिस्सेदारी के लिए।

ईसीसीई के अंतर्गत शिशुओं के मूल्यांकन की योजना बनाई गई है। इससे आँगनबाड़ी केन्द्रों में आने वाले शिशुओं की तीन वर्ष में पाई गई उपलब्धियों की जानकारी पालक, प्राथमिक शाला के शिक्षक एवं समुदाय को होगी। इस हेतु प्रत्येक तीन माह में समुदाय के सामने बच्चों के उपलब्धियों का प्रदर्शन किया जावेगा। जिससे पालक, शिक्षक और समुदाय शिशुओं की इन उपलब्धियों को पहचानेंगे। उनकी विशिष्ट योग्यताओं को जानेंगे। साथ ही शिशुओं की रूचि के क्षेत्र मे उन्हें आगे बढ़ने हेतु प्रोत्साहित करेंगे।

मूल्यांकन से पालकों को अपने बच्चों की कमजोरी या परेशानी समझने में भी मदद मिलेगी। इससे पालक एवं कार्यकर्ता उस क्षेत्र विशेष में उनकी कमजोरी को दूर करते हुए शिशु को आगे बढ़ने में मदद कर सकते हैं।

मूल्यांकन कैसे?

1. सारांशीकरण कार्ड के माध्यम से :– प्रत्येक थीम और थीम वेब के पश्चात् बच्चों के मूल्यांकन हेतु सारांशीकरण कार्ड की व्यवस्था की गई है जिससे शिशु थीम में क्या सीख रहे है और कितना सीख रहे है, इसकी पुष्टि हो जायेगी।

2. बच्चों का सूक्ष्म अवलोकन :– कार्यकर्ता, थीम पर शिक्षण करते समय बच्चों की क्रिया, प्रतिक्रिया, उनके व्यवहार क्षमता, विशिष्टताओं एवं उपलब्धियों का सूक्ष्म अवलोकन कर बच्चों का मूल्यांकन करेंगी।

3. भाषा अभिव्यक्ति :– बच्चों से वार्तालाप करके उनकी भाषा अभिव्यक्ति की क्षमता का मूल्यांकन कर सकते है।

4. गतिविधियों के माध्यम से :– बच्चों द्वारा की जा रही गतिविधियों में उनकी रूचि एवं सक्रियता अथवा निष्क्रियता के आधार पर मूल्यांकन किया जा सकता है।

इस हेतु कार्यकर्ता मूल्यांकन चार्ट तथ निजी डायरी का उपयोग करेंगी।

इस प्रकारसे मूल्यांकन से हमें बहुत से लाभ मिलेंगे। जैसे :–

1. शिशुओं की बुद्धि, रूचि, शारीरिक क्षमता एवं व्यवहार के विषय में सही जानकारी मिलेगी।
2. प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों को बच्चे के स्तर का ज्ञान हो जाएगा।
3. प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों को पढ़ाने में सुविधा होगी।
4. बच्चों की रूचि और योग्यताओं के हिसाब से पालक अपने शिशुओं के संभावित लक्ष्यों को निर्धारित कर सकते है।
5. बच्चों की कमजोरियों को समझकर उन्हें दूर करने के प्रयास किया जा सकते है।
6. प्रत्येक शिशु का व्यक्तिगत विश्लेषण कर उनके आत्मविश्वास विकसित किया जा सकता है।
7. शिशुओं के उचित मूल्यांकन उनको एक लक्ष्य प्रदान करेंगे और उनके लक्ष्यों की पूर्ति से हमारे देश को मानव संसाधन की शक्ति मिलेगी।
8. शिशुओं की रूचि के अनुसार शिक्षा–दीक्षा की व्यवस्था हो सकेगी।
9. स्कूल रेडीनेस हो जाएगा।

सामग्री प्रबंधन एवं रखरखाव

शिशु शिक्षा के अंतर्गत शिशुओं को खेल–खेल में सीखने के लिए बहुत सी शिक्षण सामग्री दी गई हैं, जैसे– कार्ड, पुस्तक, चार्ट, स्थानीय सामग्री एवं अन्य सामग्री ।

इसके लिए हमें निम्नलिखित कार्य करने की आवश्यकता है :–

(1) पूरी सामग्री को कक्षा में सुव्यवस्थित तरीके से सजाकर रखना चाहिए। जैसे–

- सभी कार्ड व्यवस्थित रूप से ट्रे में रखना चाहिए।
- कंकड़, चूड़ियाँ, बीज, आदि भी व्यवस्थित रखना चाहिए।
- बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों को कक्षा में बांधकर, लटकाना चाहिए।

(2) सामग्री बच्चों की पहुँच के अंदर रखना चाहिए।

(3) सामग्री का उपयोग करते समय सामग्री बच्चों से ही निकलवाना एवं रखवाना चाहिए।

(4) प्रत्येक बच्चे को सामान उठाने एवं रखने का अवसर मिलना चाहिए।

(5) सामग्री जमाने का तरीका व्यवस्थित होना चाहिए।

(6) बच्चों को कक्षा की सजावट एवं प्रबंधन में भागीदार बनाना चाहिए।

(7) प्रत्येक वस्तु के लिए स्थान सुनिश्चित करना चाहिए।

(8) प्रत्येक बच्चे द्वारा बनाये गए चित्र एवं सामग्री को फाईल/एलबम में रखना चाहिए। बच्चों द्वारा बनाए गये चित्रों को कक्षा में लगी हुई रस्सी में सजाना चाहिए।

उदाहरण –

5 बच्चों के साथ पेटर्न बनाने की गतिविधि करना है इसके लिए आपके पास कुछ सामग्री है :–

1) पत्तियाँ (2) कंकड़ (3) लकड़ियाँ

इनको आप कटोरियों या छोटे डिब्बों में रखेंगे। दीदी और सभी बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे। दीदी एक कटोरी/डिब्बे में से एक पत्ती लेकर कटोरी आगे बढ़ा देंगी। फिर पहला बच्चा भी एक पत्ती लेकर कटोरी आगे बढ़ा देगा। इसी तरीके से सभी बच्चे क्रमशः पत्तियां ले लेंगे। पुनः लकड़ियों वाली कटोरी तथा कंकड़ वाली कटोरी के साथ भी इसी तरह की गतिविधि करेंगे।

जब बच्चे पैटर्न जमाने का कार्य पूरा कर लेंगे तो पुनः कटोरियों को घुमाकर पत्तियां, कंकड़ और लकड़ियों को एक–एक कटोरी में इकट्ठा कर लिया जाएगा।

शिशुओं की क्षमता के अनुरूप ही उनसे गतिविधियाँ करवाई जानी चाहिए। साथ ही शिशु शिक्षा में प्रत्येक गतिविधि के दौरान लचीलापन होगा कि वे जितना सीखें पूर्ण रूप से सीखें उन पर सीखने का या थीम पूरी होने का दबाव नहीं होगा। ECCE में शिशुओं की उम्र, क्षमता और रूचि को आधार मानकर पाठ्यक्रम को जूनियर एवं सीनियर दो भागों में विभक्त किया गया है।

सहायक शिक्षण सामग्री एवं उनके उपयोग

1. कंकड़
2. रेत
3. ढक्कन (कोका कोला का)
4. धागे की खाली रील
5. नारियल का खोटली
6. फल्ली का छिल्का
7. माचिस की तीलियाँ और डिब्बी
8. पुराना पेन एवं रीफिल
9. खोखा
10. फूल एवं पत्तियाँ
11. अनाज
12. इंजेक्शन का ढक्कन,पिचकारी
13. कपड़े की कतरन (पुरानी चिंदिया)
14. तुरई का बूच
15. मिट्टी (गीली)
16. कंचा
17. मोजा
18. छीन
19. पपीते की डंठल
20. आइस्क्रीम की लकड़ी
21. बटन
22. रद्दी कागज, पुराने अखबार
23. स्ट्रॉ
24. ऊन
25. बीज (सीताफल, पैरी, इमली, बबूल, आम का गुठली)
26. टुकड़े (चूड़ी के टुकड़े, लकड़ी के टुकड़े)

उपयोग

1. सभी प्रकार के बीजों से गिनती एवं चित्रों पर जमाने की क्रिया करवायें।
2. चूड़ी व लकड़ी के टुकडों को चित्रों पर और लकड़ी के टुकड़ों को छोटे से बडे आकार में जमवायें।
3. कंकड़ को गिनती एवं आकृति पर जमवायें।
4. रेत को आकृति पर जमाना, अंगुली फिराना, रेत के घर बनवायें।
5. ढक्कन से गिनती करवायें, आकृति पर जमवायें ।
6. धागे की खाली रील को चिपका कर आकृति का निर्माण करवायें।
7. नारियल की खोटली को आइस्क्रीम की चम्मच को मिलाकर कछुआ बनायें।
8. फल्ली के छिलके को फूल, पत्ती, घर की आकृति पर जमवायें।
9. माचिस की तीलियाँ एवं डिब्बी–तीलियों को आकृति पर जमवाएँ। डिब्बी से घर एवं झुनझुना, सोफा–सेट, पलंग, टेलीफोन, इत्यादि बनाया जा सकता है, तीलियों से चटाई, खटिया बनवायें।
10. पुराने पेन से आकार क्रमीकरण गिनती एवं रीफिल से पानी में बुलबुले बनवायें।
11. पेस्ट का खोखा, चायपत्ती के खोखे से बस, घर, ट्रेन बनवायें।
12. सूखे फूल एवं पत्तियों को आकृति पर जमवायें।
13. अनाजों का संग्रहण करवायें, घरों, फूलों पर अनाज चिपकवायें।
14. ढक्कनों से गिनती एवं पिचकारी में रंग भरकर ड्राइंग शीट पर चिपकवायें।
15. कपड़े की रंगीन कतरन को गुड़िया की आकृति पर चिपकावायें।
16. तुरई के बूच से झुनझुना बनवायें।
17. गीली मिट्टी से खिलौने, जानवर आदि बनवायें।
18. कंचा को आकृति में जमाना, कंचें से गिनती करना, गोली और चम्मच के खेल में उपयोग करवायें।
19. पुराने मोजे से कठपुतली, बिल्ली बनवायें।
20. छीन के पत्ते से झाडू बनवायें।

21. पपीते के डंडी– डंडी से बांसुरी बनाना, पानी में बुलबुले बनवायें।
22. आइस्क्रीम की चम्मच को फूल, गुड़िया को आकृति में चिपकवायें।
23. रंगीन बटन को खरगोश, बिल्ली, भालू की आकृति में चिपकवायें।
24. रद्दी कागज, पुराने अखबार से पेपर फोल्डिंग वर्क करवायें।
25. स्ट्रॉ पाइप को आकृति पर चिपकवायें।
26. ऊन की बारीक कटिंग करके उसे आकृति पर चिपकवायें।

•••

कार्ययोजना (हमारी रणनीति)

सामग्री की व्यवस्था, कक्षा की व्यवस्था, दिन–भर कराई जाने वाली गतिविधियों की रूपरेखा पहले दिन ही तय करनी होगी। जैसे–

1. सर्वप्रथम कक्षा को सुव्यवस्थित करना।
2. शिशुओं के आने पर उनका स्वागत करना।
3. शिशुओं के साथ मिलकर प्रार्थना करना।
4. शिशुओं के साथ मिलकर कविताएं व गीत गाना।
5. शिशुओं को संज्ञानात्मक/बौद्धिक/गणित पूर्व विकास को गतिविधियां कराना।
6. Theme पर आधारित चर्चा कार्ड को लेकर शिशुओं के साथ चर्चा करना।
7. उस थीम पर आधारित कविता, कहानी, शब्दों की पहचान आदि (भाषायी विकास की) गतिविधियाँ करवाना।
8. शारीरिक विकास की गतिविधियाँ, खेल इत्यादि कराना।
9. सृजनात्मक विकास की गतिविधि करवाना।
   (टीप–शारीरिक विकास एवं सृजनात्मक विकास की गतिविधियाँ करवा सकते हैं।)
10. पंजियों का संधारण करना।
11. मध्यान्ह भोजन करवाना।
    (मध्यान्ह भोजन के दौरान भी गिनती करना कविताएं गाना व भोजन मंत्र आदि गतिविधि करावें)
12. अंतिम 15 से 20 मिनट का समय अपनी डायरी में आगामी दिन की योजना बनायेंगे।

समय–नियोजन

आंगनबाड़ी का समय 4 घंटे का होता है। इन 4 घंटो में अनेक क्रियाकलाप करवाने होते हैं। जैसे–

पंजियों का संधारण करना, पोषण आहार देना, टीकाकरण, पंचायत में उपस्थिति।

शिशुओं की शिक्षा के लिए कम से कम 1 से 1:30 घंटे का समय निकाल सकें, साथ ही वे सारी गतिविधियों को करा सकें।

समय का नियोजन करने के लिए सहायिका को अपने साथ शैक्षिक गतिविधियों में शामिल करना होगा। ताकि पाँचो विकास के क्षेत्रों पर भरपूर कार्य हो सकें। दोनों के मध्य इस तरह से समायोजन हो कि आँगनबाड़ी की समस्त गतिविधियाँ सुचारू रूप से चल सकें।

जैसे–

जब सहायिका खाना बना रही हो, तब कार्यकर्ता बच्चों के साथ संज्ञानात्मक, भाषायी एवं व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास की गतिविधि कराएँ और जब कार्यकर्ता रजिस्टर का काम कर रही हो तो सहायिका बच्चों को शारीरिक एवं सृजनात्मक विकास की गतिविधियाँ करा सकती हैं।

सामग्री निर्माण

1. जन्मदिन चार्ट
2. दिन, माह, वर्ष चार्ट
3. उपस्थित चार्ट
4. मौसम चार्ट
5. थीम चार्ट
6. कपड़े की गेंद
7. वजन पट्टियाँ
8. आवाज की डिब्बी
9. घुनघुना
10. माचिस की डिब्बी से सोफा सेट
11. स्पर्शफलक
12. पत्तियों से चित्रकारी
13. थ्रेड वर्क
14. कोलाज वर्क
15. ग्रीटिंग कार्ड बनाना
16. आलू/भिण्डी से छापे लगाना
17. मोजे से बिल्ली
18. गुड्डा बनाना
19. मुखौटे बनाना
20. रंग पट्टी
21. पेपर फोल्डिंग
22. आकृति में धागा पिरोना
23. जूते का लेस फ्रेम
24. बटन लेस फ्रेम
25. भौमितिक आकृतियाँ
26. स्प्रे वर्क

जन्मतिथि चार्ट–1

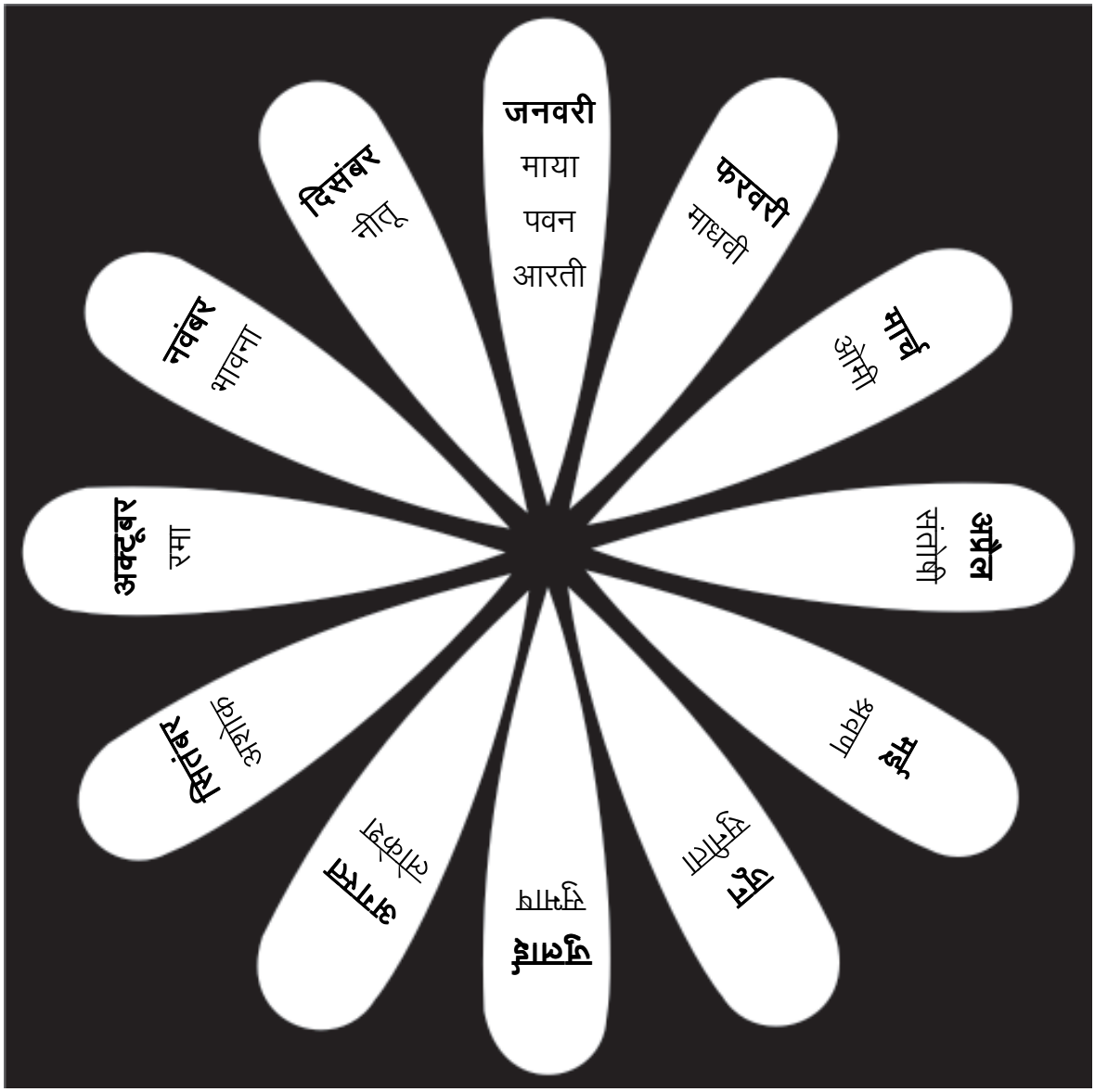

नोट

माह के नाम में जन्म लेने वाले बच्चों के नाम लिखेंगे। माह के नाम को स्वयं लगायेंगे। माह के प्रथम दिन उस माह में आने वाले बच्चों के जन्म दिनाँक पर जन्मदिन कार्ड लगा देंगे। बच्चे उपस्थिति कार्ड से दिनांक देखेंगे और जन्मदिन कार्ड होगा तो सभी मिलकर शिशु को जन्मदिन की बधाई देंगे।

माह	नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
जनवरी	माया																															
	पवन																															
	आरती																															

UDAAN

उपस्थिति चार्ट

नाम	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
नीतू																															
अनिता																															
माया																															
रमा																															
संतोषी																															
सुनीता																															
आरती																															
पवन																															
सुभाष																															
अंजली																															
अशोक																															

टीप–

बच्चे अपने आसपास के जो बच्चे नहीं आए हैं, उनके नाम के सामने घर के कार्ड लगा देंगे।

उपस्थिति चार्ट के समय बच्चे ही बतायेंगे कि आज कौन नहीं आया है।

मूल्यांकन पत्रक संज्ञानात्मक विकास हेतु

क्रमांक	नाम	उम्र	कम–ज्यादा	छोटा–बड़ा	लंबा–नटा	मोटा–पतला	ऊपर–नीचे	अंदर–बाहर	हल्का–भारी	दूर–पास	चौड़ा–सँकरा	आकार पहचानना।
1												
2												
3												
4												
5												
6												
7												
8												
9												
10												
11												
12												
13												
14												
15												
16												
17												
18												
19												
20												
21												
22												
23												
24												

आकार क्रमीकरण	रंग क्रमीकरण	क्रमबद्ध चिंतन	रंगों का मिलान करना	रंग बनाना	छाँटना	अंतर करना	पैटर्न जमाना और बनाना	वर्गीकरण	तर्क विवेचन	दृश्य विभेदीकरण	स्थान संबंधी अवधारणा	सुनकर पहचानना	ध्वनि विभेदीकरण	सूँघकर पहचानना	स्वाद पहचानना	छूकर पहचानना

दिन, माह, वर्ष कार्ड

आज का दिन	दिनांक	माह	वर्ष

सात दिनों के नाम के कार्ड दिनांक के कार्ड माह के नाम के कार्ड वर्ष 200.....

टीप–

इस कार्ड का उपयोग प्रारंभ में दीदी ही करेगी। लगभग दस दिनों बाद शिशु के नेतृत्व में चार्ट का उपयोग अन्य सभी बच्चे करेंगे। बच्चे दिन, दिनांक, माह, वर्ष के कार्डों को स्वयं लगायेंगे।

मौसम चार्ट

आज का मौसम

सोमवार	मंगलवार	बुधवार

गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार

टीप– मौसम चार्ट के उपयोग के समय शिशु ही मौसम के अनुरूप (धूप, बारीश) कार्ड लगा देंगे।

शिक्षण विधियाँ

प्रत्येक शिशुओं के सीखने की दृष्टि से विचार करें तो पाएँगें कि सभी शिशुओं के सीखने का तरीका, स्तर अलग–अलग होता है। इस दृष्टि से कहा जा सकता है कि जितने शिशु उतनी विधियाँ होंगी परंतु शिशुओं में अनेक भिन्नताओं के साथ बहुत सी संमानताएँ होती हैं। इन समानताओं को दृष्टिगत रखकर सीखने के प्रकारों पर शिक्षण विधियों को विभाजित किया जा सकता है।

1. अभिनय विधि
2. वार्तालाप विधि
3. अनुकरण विधि
4. जोड़ी मिलान विधि
5. पृथक्करण विधि
6. प्रयोग विधि
7. वर्णन विधि
8. प्रत्यक्ष विधि

1. अभिनय विधि

अभिनय विधि में किसी भी बच्चे, व्यक्ति, आदर्श महापुरूष, नेता, पंच, सरपंच, मम्मी–पापा, दादा–दादी आदि का अभिनय करवाया जा सकता है।

- गीत, कविता, कहानी, चित्रकथा का भी अभिनय बच्चों द्वारा करवाया जाना चाहिए।
- पशु–पक्षियों की चाल एवं आवाज़ का नकल, मुखौटे लगाकर या बिना मुखौटे लगाकर भी अभिनय करवाया जा सकता है।
- किसी भी वस्तु का क्या–क्या उपयोग होता है, उसे अभिनय के माध्यम से बताया जा सकता है।

जैसेः– कपड़ा– इसके उपयोग का अभिनय करके जैसे निम्न अभिनय किए जा सकते हैं–

1. रूमाल बनाकर उपयोग करना।
2. हाथ–मुँह पोंछना।
3. पहनना।
4. ओढ़कर सोना।
5. धोना।

इत्यादि अभिनय करके कपड़े के उपयोग के बारे में बताया जा सकता है।

2. वार्तालाप विधि

शिशु शिक्षा की विधि में वार्तालाप का विशेष स्थान है। शैशवास्था से ही परिवार के सदस्यों द्वारा शिशुओं से बातचीत की जा सकती है। बातचीत के माध्यम से वे बहुत महत्वपूर्ण बातें जान जाते है, साथ ही जिज्ञासा उत्पन्न होती है। उसको संतुष्ट करने के लिए शिशु बहुत से प्रश्न करते हैं। जिससे तर्क शक्ति का विकास होता है। सूक्ष्म अवलोकन की क्षमता विकसित होती है।

वार्तालाप प्रकार

मुक्त वार्तालाप निर्देशित वार्तालाप

- मुक्त वार्तालाप में बच्चों के सामने चित्र चार्ट रखे जाते हैं। उसे देखकर वे स्वयं और साथियों के साथ वार्तालाप करते हैं।
- निर्देशित वार्तालाप में शिक्षिका गोल घेरे में बच्चों को बिठाकर चित्र चार्ट दिखाकर शिशुओं से कई प्रश्न करती हैं। जैसे –

  1. चित्र में कौन है?
  2. कौन क्या कर रहा है?
  3. आपस में क्या बात हो रही होगी?
  4. आपको क्या दिखाई दे रहा है?

3. अनुकरण विधि

शिशुओं में अनुकरण की प्रवृत्ति प्रबल होती है। वे बहुत सी बातें अनुकरण से ही सीखते हैं। अनुकरण कर वे खेल–खेल में सीखते हैं।

छोटे शिशु गुड्ड़े, गुड़ियों से खेल खेलते हैं। तब अपने से बड़ो के कार्यों, विचारों की हूबहू नकल करते हैं। जिसमें उन्हें आंनद आता है। शिशुओं को कहानी सुनाकर कहानी के पात्रों की बातचीत को, बोलने के लिए कहकर, कहानी का नाट्य रूपांतर करवाया जा सकता है।

किसी भी क्रिया का क्रमबद्व ढंग से अभिनय करना भी अनुकरण हैं। जैसे पानी भरने, झाडू लगाने, कपड़ा धोने, सब्जी बेचने का अभिनय करते हैं। साइकिल में हवा भरने, बैल गाड़ी चलाने का अभिनय। कई थीम में अनुकरण विधि का प्रयोग किया गया है।

जैसे–

1. दादा जी नकल करना।
2. बड़ों को देखकर उनके जैसा हँसना।
3. कविता कहानी दोहराना।
4. अपने मन से गाड़ी की आवाज निकालना।

4. जोड़ीमिलान

जोड़ी मिलान विधि स्वयं शिक्षण को समर्थ बनाने वाली विधि है, जिसमें शिशुओं को कार्यकर्ता का सहारा कम लेना पड़ता है।

जोड़ी मिलान में दो–दो समूह या कई समूहों में जोड़ी बनाई जा सकती है। शिशुओं के सामने जो विषय रखे जाते है। उन्हें उनकी जोड़ी स्वतंत्रतापूर्वक ढूँढ़ने के अवसर मिलते हैं। जैसे– थीम में रेलगाड़ी का खेल इसी विधि पर आधारित है। जोड़ीदार विधि में शिशु यह अनुभव करने लगते है कि मैंने इस जोड़ी को जमाना सीख लिया है और अन्य शिशुओं को भी सिखा सकते हैं। इस विधि में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है। गणित विषय में इस विधि का प्रयोग होता है। कविताओं, गीत को स्मरण रखने में भी इस विधि का उपयोग होता है।

4. पृथक्करण विधि

पृथक्करण विधि से भाषा विकास में मदद मिलती है। पृथक्करण विधि में समूह से अलग वस्तु का परिचय मिलता है। शिशुओं को गुणधर्म, पदार्थ, चित्र के आधार पर समूह में अलग से पहचान कराया जाता है। संगीत शिक्षण पृथक्करण विधि से सिखाया जाना चाहिए।

पृथक्करण विधि से तर्क शक्ति का विकास होता है। स्मरण शक्ति बढ़ती है। अभ्यास से एक नयी दृष्टि मिलती है। थीम में ध्वनि विभेदीकरण, दृश्य विभेदीकरण की गतिविधियाँ इसी विधि पर आधारित हैं।

5. प्रयोग विधि

प्रयोग विधि द्वारा ज्ञान, अनुभव होने से स्थायी बनता है। शिशुओं के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है। इस विधि को दृष्टांतमूलक भी कहा जाता है।

इस विधि में शिशुओं को प्रयोग कर सिखाते हैं। जैसे– पानी में रंग घोलना।

1. शिशुओं के सामने काँच, प्लास्टिक की पारदर्शी बोतल लें।
2. अब उसमें पानी डालें।
3. शिशुओं से पूछेंगे पानी का कौन–सा रंग है।
4. पानी में लाल रंग घोलेंगे।
5. क्रमशः प्रत्येक शिशु पूछेंगे कि अब पानी का कौन–सा रंग का हो गया है।

इस प्रकार अलग–अलग रंग घोलकर शिशुओं को बतायेंगे। उन्हें भी पानी में रंग घोलकर अनुभव प्राप्त करने देंगे। शिशु अपने अनुभव से स्वयं जानेंगे और बतायेंगे की पानी का कोई रंग नहीं होता है।

इसी प्रकार निम्नांकित प्रयोग करके भी शिशुओं को स्वयं सीखने, अनुभव करने, अनुमान लगाने, निष्कर्ष निकालने आदि के अवसर देंगे।

अ. पानी स्वादहीन होता है। (नींबू, शक्कर, नमक घोलना)

ब. पानी आकारहीन होता है। (भाप, वाष्प की बूंदें, बर्फ)

स. घुलनशील–अघुलनशील (शक्कर, चॉक, चूना, नील, गिट्टी, कंकड़)

द. डूबना–तैरना (लोहे की वस्तुएँ, प्लास्टिक की वस्तु, पत्थर, लकड़ी)

ड. बीज से अंकुरण का निकलना।

6. वर्णन विधि

गुण– 1. वर्णन विधि में शिशुओं को अभिव्यक्ति का पर्याप्त अवसर मिलता है।

2. आत्मविश्वास में वृद्धि होती है।

वर्णन विधि तीन माध्यम से कराई जा सकती है :–

1. चित्र कार्ड के माध्यम से
2. सामग्री के द्वारा
3. किसी घटना के वर्णन के द्वारा

चित्र कार्ड

अ. प्रत्येक शिशु के हाथ में एक–एक चित्र कार्ड दिए जायेंगे।

ब. सभी शिशु बारी–बारी से कार्ड पर बने चित्रों का वर्णन अपने तरीके से करेंगे।

स. चित्र को देखकर कहानी भी बोलेंगे।

सामग्री के द्वारा खोजो थैली

अ. चूड़ी, बीज, इमली, सीताफल के बीज, लकड़ी चॉक, पेंसिल, पेन, बॉटल का ढक्कन, कंचे आदि वस्तुओं को खोजो थैली में रख देंगे।

ब. शिशु को गोल घेरे में बैठायेंगे।

स. पहले दीदी खोजो थैली में हाथ डालकर किसी एक वस्तु को पकड़ेंगी तथा बाहर निकाले बिना उस वस्तु का वर्णन करेंगी, उस वर्णन को सुनकर शिशु बतायेंगे कि वह कौन–सी चीज़ है।

उदाहरण

मेरे हाथ में एक लंबी चीज है। वह लकड़ी की बनी है। वह लिखने की काम आती है। उससे कॉपी पर या पन्ने पर लिखने है। बताओ वह क्या है ? सब शिशु समझकर बतायेंगे की वह पेंसिल है।

इसी प्रकार सभी शिशुओं को क्रमशः वर्णन करने की अवसर दिए जायेंगे।

7. प्रत्यक्ष विधि

शिशुओं को सिखाने के लिए सबसे अच्छी विधि प्रत्यक्ष विधि है। इस विधि से शिशुओं को प्रत्यक्ष अवलोकन जैसे– चित्र कार्ड द्वारा, अपने आस–पास के परिवेश के वस्तुओं को दिखाया जाता है। प्रत्यक्ष विधि से बच्चे आसानी से सीखते हैं। प्रत्येक विषय की पहली आवश्यकता अवलोकन है।

प्रत्यक्ष अवलोकन का सबसे अच्छा उदाहरण– जानवर के कार्ड के द्वारा, भ्रमण के दौरान जानवरों को प्रत्यक्ष दिखाकर जानवरों के बारे में जानकारियाँ दे सकते हैं।

दलहन और तिलहन का संग्रहण करवायें। जिससे शिशु स्वयं ही प्रत्यक्ष देखकर, स्पर्शकर के सभी चीजों को जान जायेंगे।

गुण– 1. प्रत्यक्ष अवलोकन करवाने से शिशु स्वयं स्पर्श कर, देखकर, बहुत अच्छे से सीख सकते हैं।

2. प्रयोग विधि करते समय भी शिशु प्रत्यक्ष अवलोकन कर सीखते हैं।

श्रेष्ठ पालकत्व

जब कोई बच्चा ग्रामीण अंचल के गरीब तथा कम पढ़े–लिखे परिवार में पैदा होता है। गाँव के ही हिन्दी माध्यम के सरकारी स्कूल में पढ़ता है। फिर भी जीवन में बहुत सफल हो जाता है। तब लोग पूछने लगते हैं कि इतनी विपरीत परिस्थिति में वह आगे कैसे बढ़ गया? इस पर लोगों का उत्तर होता है कि उसका भाग्य अच्छा है ।

यहाँ पर यह मानना सही है कि उसका भाग्य अच्छा है। परंतु हमें सोचना होगा कि उसका भाग्य किस मामले में अच्छा है। उसका भाग्य अच्छा है कि परिवार में उसका लालन–पालन अच्छा हो गया। भाग्य अच्छा इसलिए कि लोगों को वैज्ञानिक ढंग से बच्चा पालना तो आता नहीं। तब भी उसका पालन अच्छा हो गया। यह भाग्य की ही तो बात है। मजे की बात यह है कि जब पालकत्व के वैज्ञानिक तथ्य सभी लोगों को पता होगा तब सभी बच्चे ऐसे ही आगे बढ़ेंगे। अच्छे पालकत्व के लिए गरीबी आड़े नहीं आएगी। असाक्षर व्यक्ति भी अच्छा पालन–पोषण कर सकता है। माता–पिता की गरीबी बच्चे को आगे बढ़ने से रोक नहीं सकती। इन्हीं सोचों के साथ श्रेष्ठ पालकों से संवाद का प्रशिक्षण कर हम छत्तीसगढ़ राज्य में पालकों से संवाद करने जा रहे हैं। पालक इसे पढ़कर लाभान्वित होंगे।

उन्नीसवीं शताब्दी से बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र में बहुत विकास हुए हैं। रूसो, वाइगोट्स्की, जॉन डेवी, मैडम मारिया मांटेसरी इत्यादि ने बच्चों को समझने में बहुत मदद की है। भारतीय शिक्षाविद् गिजुभाई बधेका, ताराबाई मोडक, अन्नूताई वाघ इत्यादि ने भी इस विषय में प्रयोग किए हैं। भारतीय मनीषियों जैसेः– महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, स्वामी विवेकानन्द, डॉ. राधाकृष्णन तथा जिद्दू कृष्णमूर्ति ने भी बच्चे तथा उनकी शिक्षा के बारे में अपने मत दिए हैं। सभी का एक ही मत है। बच्चों में सीखने की इच्छा जन्मजात होती है। बच्चों के सीखने की उत्कंठा को मार न दिया जाए तो वे सीखते ही रहेंगे। आपके घर में जन्म लेने वाले सभी बच्चे प्रतिभा संपन्न होते हैं। सभी बच्चे आगे बढ़ सकते हैं यदि हमें अच्छा पालकत्व प्रदान है तो। शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में छुपी हुई क्षमता को उजागर करना होता है न कि उन्हें गणित –भाषा पढ़ाना। इसलिए यदि कोई पूछे कि अच्छा पालकत्व क्या है ?तो उसका छोटा सा उत्तर होगा, "बच्चे को प्रोत्साहित करते रहना।" इससे बच्चे का आत्मविश्वास बढ़ेगा। वह किसी भी कार्य को कठिन नहीं मानेगा। कोई भी विषय सीखना उसके लिए बाएं हाथ का खेल होगा। वह जो चाहेगा वही बनेगा। उसे कोई नहीं रोक सकता। परंतु हम बच्चों को प्रोत्साहित करने में पिछड़ जाते हैं।

यदि बच्चा आगे की ओर बढ़ रहा हो तो हम उसे प्रोत्साहित कैसे करेंगे ? सही है कि ऐसे में हम उसे प्रोत्साहित नहीं करेंगे। उसे रोकेंगे। परंतु कैसे रोकेंगे यह अहम् विषय है। रोकने

के कई तरीके हो सकते हैं। फिर भी बच्चा सीखे कि आग जलाता है। यह शिक्षा आवश्यक तो है ही। इसके लिए बच्चे को आगे बढ़ने दें ? उसे रोकें और थप्पड़ भी मारे ताकि आगे से ऐसी गलती न करें ? उसे थप्पड़ मारें चूंकि हम डर गए ?उसे रोकें, प्यार से पुचकारें क्योंकि हमने उसे जलने से बचा लिया? उसे रोकें, पुचकारें और आग के पास ले जाकर ऐसा कुछ करें कि उसे पता चल जाए कि आग जलाती है? एक पालक के रूप में क्या करें? यहाँ बच्चे के आत्म अभिमान को बिना ठेस पहुँचाए आग के जलाने वाली शिक्षा भी दें और बच्चे को जलने से बचा भी ले वही श्रेष्ठ पालक है। बच्चे का शरीर आहत न हो, लोग इसका ध्यान रखते हैं। परंतु बच्चे के मन को ठेस न पहुँचे इसका ध्यान नहीं रखते। यही हमें सीखना होगा।

बच्चा है–उसे क्या पता? इस सोच में समस्या है। बच्चे का आत्म–अभिमान जन्मजात् होता है। इस मामले में वह जन्म से ही पूर्ण व्यक्ति होता है। उसका इगो, अह्म पूर्णतः विकसित होता है। अधिकांश लोग बच्चे के इगो को ठेस पहुँचाते रहते हैं। इससे उनका आत्मविश्वास कम हो जाता है। उसमें नकारात्मक सोच विकसित होने लगती है। मनोवैज्ञानिक फ्रायड के अनुसार बच्चे में सकारात्मक अथवा नकारात्मक सोच दो से तीन वर्ष के आयु में तैयार हो जाती है। तीन वर्ष तक यदि पालकत्व कमजोर रहा तो बच्चा नकारात्मक सोच वाला तैयार हो जाएगा। फिर आधे गिलास पानी को वह आधा खाली गिलास देखेगा। किसी को गणित में 95ः नंबर आया तो कहेगा पूरे 100ः कहाँ मिले? उसे दुनिया में सभी चीजें बुरी लगती हैं। इसलिए उसमें सोच स्थापित हो जाती है कि वह आगे नहीं बढ़ सकता। गरीब परिवार में पैदा हुआ है, अमीर कैसे बनेगा ? हिन्दी माध्यम में पढ़ा है–अंग्रेजी नहीं सीख सकता। सरकारी स्कूल में पढ़ा है–इंजीनियर, डॉक्टर नहीं बन सकता। ग्रामीण अंचल में पैदा हुआ है–इस जनम में विकास असंभव। इन्हीं विपरीत परिस्थितियों में उसी के गाँव का कोई आगे बढ़ गया तो उसके लिए बहाने खोज लेगा। अरे वो लोग हमारे बराबर गरीब नहीं है। उसको फलां गुरूजी अच्छा मिल गया न इसलिए है। इत्यादि। अपने अमूल्य समय का उपयोग नहीं करेगा। साथ ही माता–पिता के मर्यादित संसाधन का सही उपयोग नहीं करेगा। बस रोता रहेगा कि उसका कुछ नहीं हो सकता। कुछ लोग तो शराब भी पीने लग जाते हैं। यदि पूछो कि क्यों पीते हो, तो कहेगा समय नहीं कटता। करने के लिए कुछ नहीं है। न काम न धंधा। करें तो क्या करें? शराब के लिए पैसा कहाँ से आया? माँ–बाप से लड़कर लेते हैं। माँ–बाप को कहते हैं कि पैदा क्यों किया ? एक गाँव के युवक ने शराब के पैसे न देने पर बुढ़िया माँ की पिटाई करके उसे घर से निकाल दिया। ये है कमज़ोर पालकत्व का असर।

कई माँ–बाप सोचते हैं कि वे गरीब हैं। पढ़े–लिखे भी तो नहीं हैं। वे कैसे बच्चे की अच्छी परवरिश कर सकते हैं ?बच्चों को प्रोत्साहन देने के लिए पैसे की आवश्यकता नहीं होती। परंतु यदि बच्चा डॉक्टर बनना चाहे और परिवार गरीब है तो क्या होगा? इन्हीं प्रश्नों का उत्तर

यह पुस्तिका देती है। लड़की है, परायाधन है, इसे क्यों पढ़ाना? बचपन में अच्छी पढ़ाई नहीं हुई इसलिए आगे नहीं बढ़ सकते। विश्व के सबसे अमीर व्यक्ति बिल गेट्स ने कहा है, "गरीबी में पैदा होना अपराध नहीं है परंतु गरीबी में मर जाना अपराध है।" बचपन में पालकत्व अच्छा न भी मिला हो तो बड़े होकर हम हमारी सोचों को खंगालें। जो सोच हमारी प्रगति में रुकावट डालती हैं। ये सोच हमारे जीवन के लिए नासूर है। इन्हें पैर में लगे कांटे की तरह गोखरू बन जाने के पहले ही निकालकर फेंकना होगा। यह पुस्तिका इसमें भी मदद करती है।

पालकत्व : वर्तमान परिदृश्य

शुरू की उम्र में बच्चे का शारीरिक विकास बहुत तेजी से होता है। बाद में यह गति धीमी होती जाती है। 15–16 वर्ष उम्र के बाद शरीर में वृद्धि नगण्य हो जाती है। शुरू के तीन वर्षों में ही बच्चे के मस्तिष्क का वजन 1100 ग्राम हो जाता है जबकि एक जवान व्यक्ति के मस्तिष्क का वजन 1400 ग्राम होता है। अर्थात् मस्तिष्क की 85: वृद्धि शुरू के तीन वर्षों में ही हो जाती है। इस उम्र में बच्चों को कुछ भी बताया जाए तो उन्हें याद रहता है। उन्हें बोलना नहीं आता इसलिए वह हमें बता नहीं पाएगा। परंतु उसे सभी बातें याद हो जाती हैं। अभिमन्यु की कहानी सत्य है। दूसरी बात यह भी सत्य है कि 03 वर्ष की उम्र के बाद उनके सीखने की क्षमता कम होती जाती है। यह भी सत्य है कि 03 वर्ष तक उम्र के बच्चे केवल पालकों के साथ रहते हैं। वे स्कूल या आंगनबाड़ी नहीं जाते। इसलिए छोटे बच्चों के प्रति पालकों की जवाबदारी सबसे अधिक है। इस उम्र में उनके साथ जितना बोलेंगे, हँसेंगे, गाएंगे, नाचेंगे उन्हें स्वस्थ रखेंगे बच्चे का भविष्य उतना ही अच्छा होगा। वह तीक्ष्ण बुद्धि वाला, अधिक अंक लाने वाला, अच्छी नौकरी करने वाला, बड़ा व्यवसायी, बड़ा उद्योगपति तथा अच्छा समाज सेवक और नेता बनेगा।

एक और महत्वपूर्ण बात है "बच्चों का दृष्टिकोण।" मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि दृष्टिकोण 02 से 03 वर्ष के उम्र में तैयार हो जाता है। यदि परिवार में बच्चे को बात–बात पर टोक दिया जाता है। तो बच्चे के मन में बैठ जाएगा कि उसे कुछ नहीं आता। वह जो करता है गलत करता है। तभी तो माँ–बाप टोकते हैं। फिर वह सोच लेता है, "आगे से वही काम करूँगा, जो माँ–बाप कहेंगे। बड़े लोग कहेंगे। उसके अलावा और कोई काम नहीं करूँगा।" यह नकारात्मक सोच है। ऐसे लोग हमें समाज में बहुत दिखते हैं। चपरासी तथा क्लर्क कई महत्वपूर्ण कार्यों को इसलिए नहीं करते कि साहब ने नहीं कहा है। कई बड़े अधिकारी भी कार्यों को जब तक वरिष्ठ न कहे, नहीं करते। उनकी परवरिश टोका–टाकी में हुई है। घर में आग लगने पर भी वे नहीं बुझाएंगे, क्योंकि माँ–बाप ने बुझाने नहीं कहा। वे स्व–पहल भूल जाते हैं। स्वयं से सीखना, नए प्रयोग करना तथा सोचना छोड़ देते हैं। ऐसे बच्चे आगे नहीं बढ़ सकते। वे बड़े व्यापारी, अधिकारी इत्यादि नहीं बन सकते। ध्यान दें आप भी कहीं छोटे बच्चों को टोका–टाकी तो नहीं करते। बच्चों के साथ हमारा व्यवहार ऐसा हो कि उनमें सकारात्मक

श्रेष्ठ पालकत्व : वर्तमान परिदृश्य

पूर्व नोबेल पुरस्कार विजेता और सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्यसेन ने सन् 2007 में एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा था कि किसी भी देश की स्थिति सुधारने का एकमात्र रास्ता प्राथमिक शिक्षा और बुनियादी स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करना है। उन्होंने आगे कहा कि भारत 30 वर्ष के अंदर अर्थात् 2037 तक महाशक्ति बन जायेगा किन्तु इसके लिए प्राथमिक शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में पूर्ण सुधार लाना जरूरी होगा। भारत की 42 प्रतिशत आबादी छोटे एवं बड़े बच्चों की है।

इन्हीं बच्चों को हम अच्छा पालकत्व देना चाहते हैं। तभी हमारा देश 2037 तक महाशक्ति बन पाएगा।

प्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रोफेसर "मैकमिलन" और "होवे" ने लगभग एक सी बात कही है कि "बच्चे की स्वतंत्रता एवं कल्पनाशीलता को भी प्रोत्साहित किया जाय। यदि इसे बच्चों के पाठ्यक्रम से अलग कर कपोल कल्पना से संबंधित साहित्य की बातें करें तो हम पाते हैं कि बच्चे की बौद्धिक स्वतंत्रता की उसकी रुचि के अनुरूप बाल–साहित्य देना भी जरूरी है।" कल्पनालोक की सही उड़ान उन ऊँचाईयों को छूती है जो विश्व इतिहास बना जाती है। वही बच्चे भविष्य के अनुसंधानकर्त्ता बनते हैं। बच्चों को दुलारने में भी श्रेष्ठ पालकत्व का पुट छुपा होता है। वस्तुतः 'वात्सल्य' प्रकृति की सबसे बड़ी देन है। तभी तो कहा जाता है कि बच्चे की सीखने की शुरुआत माँ की कोख से प्रारंभ होती है। ज्यों–ज्यों शिशु बड़ा होता है हम अपनी व्यस्तताओं में अनजाने ही इस नैसर्गिक भाव को नजरअंदाज करते जाते हैं। अभिमन्यु ने माँ के गर्भ में ही चक्रव्यूह भेदन का पाठ पढ़ लिया। इस कथा को भले ही कोरी कल्पना कह लें किन्तु आधुनिक वैज्ञानिक खोजों ने इस तथ्य को पुष्ट कर दिया है कि गर्भावस्था के दौरान माँ की मनोदशा, चिन्तन का प्रभाव बच्चों के मानसिकता पर पड़ता है। सोते समय माता–पिता की दुलार भरी उपस्थिति आत्मीयता व सुरक्षा बोध भविष्य के संबंधों को पुख्ता बनाती है। अध्ययनों से ऐसा तथ्य सामने आया है कि सात वर्ष की आयु के बच्चों की पठन क्षमता उनकी मानसिक क्षमता पर नहीं वरन् माँ के रुचि लेने की योग्यता पर निर्भर करती है। माता–पिता की आदतें, व्यवहार, बच्चों के मस्तिष्क पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ते हैं। तकनीकी उपकरण विश्व को चाहे कितना भी आगे ले जायें किन्तु जबसे लिखना प्रारम्भ हुआ है तब से आज तक पुस्तकों का महत्व ज्यों का त्यों है। श्रेष्ठ पालकत्व में यह बात समाहित की जा सकती है कि बच्चों को पुस्तकों के साथ जोड़ें, उनके कल्पनालोक को ध्वस्त न करें, बल्कि सुनहरे पंख दें 'मार खाये झमाझम विद्या पाये धनाधन', 'भय बिन होई न प्रीत' जैसे पुराने सिद्धान्तों से शिक्षक ही नहीं माता–पिता भी तौबा करें। प्रताड़ना से बच्चा रटकर नंबर भले ही बेहतर ले आये परन्तु

दृष्टिकोण बने। नकारात्मक दृष्टिकोण बनने से रोकना अतिमहत्वपूर्ण है।

छोटे बच्चों का स्वयं का व्यक्तित्व होता है। जन्म से ही वह स्वयं के लिए मार्ग बनाना आरंभ कर देता है । परंतु कम जानकारी के कारण वह अपना दूरगामी लक्ष्य बनाने में असमर्थ होता है। पहली कक्षा के बच्चे को यदि पूछें कि बड़े होकर क्या बनोगे ? वह कहता है, "शिक्षक"। परंतु आठवीं के बच्चों को पूछो तो वे मुख्यमंत्री, राष्ट्रपति, डॉक्टर, इंजीनियर, पायलट, सैनिक इत्यादि बताते हैं। परंतु प्रत्येक बच्चे का लक्ष्य निर्धारण शुरू में पालकों द्वारा छट्ठी (जन्म के छठवें दिन छत्तीसगढ़ में आयोजित होने वाला कार्यक्रम) के दिन किया जाना चाहिए। यदि आप उसे कलेक्टर बनाना चाहते हैं तो आपको स्वयं को पता होना चाहिए कि कलेक्टर बनने के लिए कैसी पढ़ाई करनी पड़ती है? कौन सी परीक्षाएं देनी पड़ती है? कैसी चर्चाएं, विश्वास एवं सोच रखना पड़ता है? यदि यह सब आपको पता है तो आप उसकी बचपन से तैयारी करा सकते हैं। बड़ा होकर वह कलेक्टर बनने की बातें करे। सभी को बोले कि वह कलेक्टर बनेगा। यदि कोई हंसे तो उनसे पूछे कि क्या कमी है उसमें कि वह कलेक्टर नहीं बन सकता? उन कमियों का विश्लेषण करें। यदि सत्य लगता है तो उन कमियों को दूर कर लेगा। फिर वह बन जाएगा कलेक्टर। शुरू में कलेक्टर नहीं बना तो डिप्टी कलेक्टर बन जाएगा। बाद में प्रमोशन पाने पर कलेक्टर बने। ''लक्ष्य'' इसी तरीके से पूरे होते हैं। परंतु लोग लक्ष्य बनाते नहीं। हम चाहेंगे कि सभी बच्चे (और बड़े भी) अपने जीवन का लक्ष्य बनाएं। यह लक्ष्य हमेशा मानवता में बड़ा होने का हो। केवल पैसा कमाने का नहीं। पैसा कमाने का भी लक्ष्य सही मार्ग से पैसा कमाने का हो न कि गलत मार्ग से। परंतु वास्तविक मजा है लोगों का आदर–सम्मान पाने में। अतः हमारा अंतिम लक्ष्य मानव सेवा होना चाहिए। चपरासी बन गए तो मानव सेवा। क्लर्क बन गए तो मानव सेवा। गुरूजी बन गए तो अपने सानिध्य में आने वाले सभी बच्चों का सर्वांगीण विकास करके मानव सेवा। कलेक्टर बन गए तो जिले की मानव सेवा। सचिव बने तो राज्य की मानव सेवा। नेता बने तो राज्य, राष्ट्र और विश्व की मानव सेवा।

अतः पालकत्व बच्चे के विकास के लिये एक महत्वपूर्ण पहलू है जिससे बालक का जीवन रोशन होता है। अच्छे पालकत्व से बालक में सुरक्षा का एहसास, नियमबद्ध दिनचर्या, निर्माण से बालक में असंभव को भी संभव बनाने की शक्ति आ सकती है। अतः पालकों का यह दायित्व है कि अपने बच्चे को श्रेष्ठ पालकत्व दें ताकि बच्चा अपने को सुरक्षित, प्रेम का पात्र और महत्वपूर्ण समझे, अच्छे मानसिक, स्वास्थ्य के साथ विकसित हों और सफल व्यक्तित्व का स्वामी बन सके। अतः हमारा उद्देश्य, उत्तम मानसिक स्वास्थ्य के साथ बच्चों में होने वाली मानसिक समस्याओं को रोकने के लिये पालकों का ध्यान आकर्षित करना है।

"Parenting is an important part of loving and caring for your child" अर्थात् "बच्चों के प्रति प्रेम व देखभाल पालकत्व का आवश्यक भाग है।"

माता–पिता के प्रति बच्चे के भीतर निरंतर प्रस्फुटित होने वाला आदर भाव की सरिता सूखी ही होगी।

"बालक का पालन–पोषण एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। सभी पालक अपने बच्चों का पालन–पोषण करते हैं, परन्तु कुछ पालक यह नहीं जानते कि बच्चों को किस प्रकार तैयार करना है कि वह जीवन की भाग–दौड़ में अपनी एक अलग पहचान बना सकें। यह एक ऐसी कला है जिसके लिए अभिभावकों को बहुत कुछ जानना और विचार करना पड़ता है।"

श्रेष्ठ पालकत्व क्यों ?

- बच्चों के उचित शारीरिक, मानसिक विकास के लिए।
- बच्चों की मौलिक प्रतिभा व क्षमताओं के सतत् विकास के लिए।
- बच्चों में सामाजिक सुरक्षा का भाव जगाने के लिए।
- सामुदायिक व भावी पीढ़ी के उचित मार्गदर्शन के लिए।
- श्रेष्ठ नागरिक तैयार करने के लिए ।
- बाल–अधिकारों के संरक्षण के लिए।
- बच्चों के मौलिक व सर्वांगीण विकास के लिए।
- विपरीत परिस्थितियों में वांछित सहयोग करने के लिए।
- बच्चों के जीवन कौशल के विकास के लिए। जीवन कौशल से आशय दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम होना है। जीवन कौशल तीन प्रकार के हैं–

  1. चिंतन कौशल
  2. तर्क संवाद कौशल
  3. सामाजिक कौशल

  - राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा से बच्चों को जोड़ने के लिए।
  - पालकों की भूमिका रेखांकित करने के लिए।
  - असामाजिक तत्वों व कुसंगति से बच्चों को बचाने के लिए।
  - सतत् प्रेरणा देने के लिए ।
  - सही समय पर उचित मार्गदर्शन करने के लिए।

- भटकाव से बचाव करते हुए जीवन पथ चुनने में मदद करने के लिए।
- राष्ट्रीय व सामाजिक मूल्यों के संरक्षण एवं भावी पीढ़ी में हस्तांतरण के लिए।

इन बिंदुओं से स्पष्ट होता है कि पालकत्व का प्रदर्शन व भूमिका को इन बिंदुओं में रेखांकित करना उचित नहीं है। अपितु इसकी आवश्यकता में विविधता है जो बच्चे के विकास के लिए जरूरी है। जब हम श्रेष्ठ पालकत्व की बात शुरु कर ही चुके हैं तो मोटे तौर पर इन्हें कुछ क्षेत्रों में विभाजित करना उचित होगा। हालांकि इनके बीच कोई सीधी विभाजक रेखा नहीं खींची जा सकती, फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिये हम इन्हें निम्न क्षेत्रों के अंतर्गत् समझने का प्रयास करते हैं–

शैक्षिक

- जन्म से ही पालक को बच्चों की शिक्षा के प्रति सोचना आरम्भ करना चाहिए।
- 3–6 वर्ष उम्र के बच्चों को अनिवार्यतः नजदीक के आँगनबाड़ी केन्द्र में भेजना चाहिए। इस उम्र के बच्चों का टीकाकरण समय पर करावें। बच्चों में अच्छी आदतें, संस्कारों के बीजारोपण के बारे में पालक सोचना प्रारम्भ कर दें। इस तरह बच्चों का भविष्य इस उम्र में लगभग तय हो जाता है।
- पालकों को विश्वास दिलाना होगा कि आंगनबाड़ी केन्द्र में बच्चों का सर्वांगीण विकास हो सकता है। यदि वे स्वयं आंगनबाड़ी एवं कार्यकर्ता के सम्पर्क में रहें तथा सभी पालक शिक्षण व्यवस्था में भागीदार बनें। इससे शैक्षिक गुणवत्ता लाने में सहायता मिलेगी।

अ पालकों की शिक्षण व्यवस्था में सक्रिय रूप से भागीदारी हो। पालकों को समझना होगा कि गाँव के प्रत्येक बच्चे का भविष्य श्रेष्ठ पालकत्व पर निर्भर करता है।

- बच्चे के जन्म लेने से पूर्व ही गर्भवती महिलाओं को शासन द्वारा पौष्टिक आहार दिया जाता है। बच्चे और माता का स्वस्थ्य परीक्षण किया जाता है एवं अन्य सुविधाएँ दी जाती है। आवश्यकता इस बात की है कि लोगों को सुविधा लेने के लिए कैसे जागरूक किया जाये ? इसके लिए सघन प्रचार–प्रसार कर इन सभी योजनाओं के महत्व के बारे में लोगों को समझाना होगा। बार–बार बैठकें करनी होगी ताकि लोग अपने बच्चों को गरीबी का बहाना बनाकर आँगनबाड़ी एवं शाला भेजने से रोकें नहीं।
- पालकों को इस बात के लिए जागरुक करना कि वे नियमित रूप से बच्चों की पढ़ाई–लिखाई के बारे में पूछ–ताछ करते रहें तथा पालक नियमित रूप से बच्चों को पढ़ायें। प्रातः कालीन स्व–अध्ययन की आदत बच्चों में विकसित करने के लिए पालकों को जागरूक

होना होगा। पालक बच्चों की शैक्षणिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने की मानसिकता बनाएं।

मनोवैज्ञानिक :–

पालकों को अपने बच्चे के मानसिक विकास की समझ होनी चाहिए। बच्चे की अभिरुचि, मनोवृत्ति एवं उसकी अभिवृत्ति कैसी है? इसकी समझ होनी चाहिए यदि पालक ये सब जानने में सक्षम है तो निश्चित रूप से वह अपने बच्चे के साथ बेहतर संबंध बना कर उसके सर्वांगीण विकास में सहायता कर सकता है। हमें निम्न बिन्दुओं पर विचार करना होगा तथा पालकों को इन बातों के लिए शिक्षित करना होगा :–

- बच्चों के विचारों, रुचियों को अहमियत दिया जाय।
- बच्चों की समस्याओं की पहचान करना एवं उसके समाधान हेतु तत्पर रहना।
- पालक, बच्चों से मित्रवत् व्यवहार करें।
- पति–पत्नी के बीच बेहतर संबंध रहे।
- बच्चों के साथ सकारात्मक संबंध बना रहे । पालक बच्चे की भावनाओं को कितनी अहमियत देता है अर्थात् बच्चे के प्रति प्यार एवं स्नेह होना चाहिये।
- पाठ्यक्रम के विकास में बच्चों के मनोवैज्ञानिक व्यवहार को ध्यान में रखना चाहिए।
- बच्चों की शिक्षा इस बात पर भी निर्भर करती है कि पालक उनकी शिक्षा के प्रति कितना गंभीर है अर्थात् पालकों को अपने बच्चों को एहसास दिलाना कि वे उनकी शिक्षा के प्रति गंभीर है और इसी के अनुरूप बच्चों के साथ व्यवहार करना चाहिए।
- पालकों को अनुशासित जीवन जीने के लिए शिक्षित करना होगा जिससे बच्चों में भी अनुशासन के गुण विकसित हो सके तथा बच्चों के व्यवहार एवं सोच सकारात्मक हो सके।
- बच्चों की उम्र बढ़ने के साथ–साथ उनके व्यवहार में भी काफी परिवर्तन होता है। यदि ये व्यवहारगत परिवर्तन सकारात्मक है तथा बच्चों की शिक्षा में सहायक है तो ठीक है अन्यथा समस्या हो सकती है इसलिए पालकों को बाल मनोविज्ञान की कुछ मोटी–मोटी जानकारियाँ अवश्य दी जानी चाहिये जिससे बच्चों के बढ़ते उम्र के साथ उनमें होने वाले व्यवहारगत परिवर्तन को समझा जा सके एवं सामंजस्य बिठाया जा सके।

भावनात्मक

प्रत्येक पालक को भावनात्मक समझ की आवश्यकता है। बालक मशीन नहीं होते उनमें योग्यताओं का निरंतर विकास होता है। विकास तीन प्रमुख प्रभावों द्वारा निर्धारित किया जाता

है। जिसमें प्रथम माता–पिता तथा परिवार, दूसरा सम आयु समूह तथा तीसरा विद्यालय के अनुभव। बालकों में ध्यान को एकाग्र करने की शक्ति का विकास होता है। वे स्वयं चयनित कार्यों को करने एवं पूर्ति होने पर खुशी का अनुभव करते हैं। इस अवस्था में स्वतंत्र रूप से किये गये कार्य, समआयु वर्ग के साथ सहयोग, सामाजिक स्वीकृति से कार्य करना और खेलों के प्रति ध्यान देना इत्यादि शामिल होते हैं। पालकों को बढ़ते उम्र के बच्चों में इस प्रकार के स्वाभाविक व्यवहारगत परिवर्तन को समझने योग्य बनाना है, ताकि वे अपने बच्चों के साथ उचित सामंजस्य बना सकें। इस अवस्था में बच्चों के दोस्त उनके लिए काफी महत्वपूर्ण होते हैं जो किशोरावस्था तक महत्वपूर्ण बने रहते हैं। यह व्यवहार बच्चों के शारीरिक एवं संज्ञानात्मक संरचनाओं में हुए परिवर्तन का परिणाम है। वह चाहता है कि माता–पिता उसके साथ अलग तरह का व्यवहार करे।

नैतिक विकास

प्रायः प्रत्येक माता–पिता अपने बच्चों को सामाजिक रूप से स्वीकृत व्यवहार जैसे अपने से बड़ों का आज्ञापालन करें, ईमानदार बनें, मेहमानों का स्वागत करें, झूठ न बोले, विनम्रता से बात करें, पशुओं को हानि मत पहुँचाएं, भगवान की प्रार्थना करें, इत्यादि के बारे में बात करते हैं या बच्चों को समझाते हैं। इससे बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास होता है।

सामान्यतः बच्चे दूसरों के द्वारा उन नियमों का पालन न करते देख भ्रमित होते हैं जो कुछ लोगों पर लागू होते हैं, परन्तु कुछ लोगों पर नहीं। उदाहरण के लिए हम अपने बच्चों को कापियों के पन्ने फाड़ने के लिए मना करते हैं लेकिन कई बार हम उनकी कापियों से दो या तीन खाली पन्ने फाड़ लेते हैं।

शारीरिक

अब यह तथ्य स्पष्ट है कि बालकों की सफलता और जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में निपुणता के लिए उनका शारीरिक विकास होना आवश्यक है। बच्चों के कल्याण एवं बेहतर नागरिक बनाने के लिए बच्चों के इस दुनिया में आने से पहले ही माता–पिता को तैयारी आरम्भ कर देनी चाहिये। गर्भवती माँ को सम्पूर्ण पौ ि टक आहार तथा आयरन गोली मिले। शिशु का समय पर टीकाकरण हो सके तथा विद्यालय जाने वाले बच्चों का नियमित स्वास्थ्य परीक्षण होता रहे।

पालकों को बच्चे के शारीरिक विकास हेतु व्यक्तिगत सफाई, उचित भोजन की आदत के संबंध में व्यवहारिक जानकारी रूचिकर रूप में प्रदान की जानी चाहिए।

किसी बच्चे की शारीरिक अवस्था–उसकी कई आदतों, अभिवृत्तियों और विचारों आदि के विकास के लिए कारक होता है। इसलिए बच्चों को रुचिपूर्ण खेलकूद एवं सांस्कृतिक

गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए। बच्चों को अपने वर्तमान शारीरिक स्थिति के संदर्भ में सकारात्मक तथा स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने में मार्गदर्शन करना चाहिए।

संवेगात्मक विकास के क्षेत्र में श्रेष्ठ पालकत्व

घर तथा विद्यालय में अनेक समस्याएं होती हैं जो एक बालक को दुखी और परेशान कर सकती हैं। सामान्यतः बालक अनेक भावनाओं जैसे क्रोध, भय, ईर्ष्या, आकर्षण, खुशी, आनन्द इत्यादि को प्रदर्शित करते हैं। सकारात्मक भावनाएँ बालक में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करती है। सुख और दुःख दोनों परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है। इसका अर्थ यह हुआ कि बालक दुखपूर्ण संवेगात्मक अनुभव को भी बिना चिंता और परेशानी के स्वीकार करना सीखें। पालकों को ऐसे अनुभवों परिस्थितियों, विचारों तथा घटनाओं से जो दुख के कारण बन सकते हैं उससे भली–भाँति परिचित होना चाहिए। बच्चों के संवेगात्मक संतुलन को बनाये रखने के लिए हम यह कर सकते हैं।

श्रेष्ठ पालकत्व : कब से

पालकत्व का प्रारंभ कब से अथवा किस अवस्था से प्रारंभ हो ? यह एक गंभीर प्रश्न है। कुछ इस विचार के हो सकते हैं कि पालकत्व का आरंभ "विवाह गठ–बंधन" से ही आरंभ हो जाना चाहिये। विवाह के साथ ही स्त्री–पुरूष अपना नया जीवन प्रारंभ करते हैं। स्त्री जब गर्भधारण करती है। यहीं से पति–पत्नि के उत्तरदायित्व तथा परिपक्वता की महत्वपूर्ण कसौटी मातृत्व या पितृत्व का विकास होता है। शिशु के जीवनकाल की यही प्रथम अवस्था "जन्म पूर्व अवस्था" (गर्भाधान से जन्म तक) पालकत्व के उत्तरदायित्व का आरंभ है। इस बात को भी स्वीकारने में असहजता नहीं होनी चाहिये कि गर्भाधान के पूर्व ही भावी संतान की आर्थिक, शैक्षिक आदि चिंतायें पालक आरंभ करते हैं तथा भावी शिशु के स्वस्थ, सुखद् आगमन हेतु विशेष व्यवस्था करते हैं। यह बिन्दु पालकत्व का आरंभ है।

यही वह बिन्दु है जहाँ से माता–पिता अपने अच्छे व्यवहारों, खान–पान, आचार–विचार आदि से गर्भस्थ शिशु के भवि य को संवार कर अच्छे माता–पिता का दायित्व निभा सकते हैं। माता–पिता का सद्व्यवहार गर्भस्थ शिशु के उच्चतम विकास की आधारशिला है। कुछ मनोवैज्ञानिक इस तथ्य को स्वीकार करते हैं कि बालक अथवा बालिका की अनुवांशिकता भी उसके स जनात्मकता का एक कारण है।

अब प्रश्न यह है कि पालकत्व की 'सीमा' क्या हो ? अथवा व्यक्ति की "किस अवस्था" तक पालकत्व के उत्तरदायित्व का निर्वहन होना चाहिये ?

पालकत्व की सीमा को हम दो अर्थों में लेते हैं :–

1. शिशु के जीवनकाल की किस अवस्था तक पालकत्व का निर्वहन हो।
2. विभिन्न अवसरों पर उत्पन्न होने वाली परिस्थितियों में कहाँ–कहाँ पालकत्व का निर्वहन होना चाहिये।

शिशु के जीवन–काल की अवस्थायें निम्न होती हैं :

1. जन्मपूर्व अवस्था	–	गर्भाधान से जन्म तक
2. नवजात शिशु	–	जन्म से दूसरे सप्ताह तक
3. शैशवावस्था	–	तीसरे सप्ताह से दूसरे वर्ष तक
4. बाल्यावस्था	–	दो से बारह वर्ष तक
5. पूर्व किशोरावस्था	–	13 वर्ष से 17 वर्ष तक
6. उत्तर किशोरावस्था	–	17 से 20 वर्ष तक
7. युवावस्था	–	21 से 40 वर्ष तक
8. प्रौढ़ावस्था	–	41 से 60 वर्ष तक
9. वृद्धावस्था	–	60 से

शिशु के जन्म पूर्व अवस्था से बाल्यावस्था तक पालकत्व का निर्वहन तो होता ही है, किन्तु पूर्व और उत्तर किशोरावस्था में पालकत्व की जिम्मेदारियाँ बढ़ जाती है। किशोरावस्था के साथ व्यक्ति में आवेग, जोश, संवेदनशीलता व उत्साह का आगमन होता है। इस अवस्था में शरीर का आकार, अनुपात, आकृति, क्रियाएं ही नहीं बदलती अपितु रुचियों, अभिवृत्तियों एवं व्यवहार में भी व्यापक परिवर्तन होता हैं।

"हम अपना माँ–बाप नहीं चुन सकते। परंतु माँ–बाप चाहें तो अच्छे पालक बन सकते हैं।" वे अपने बच्चे का भाग्य अच्छा बना सकते हैं। बच्चों का भाग्य उसके पालकों के हाथ में है। आगे उनकी मर्जी। समय नहीं है वाली बात हर कोई कहता है। समय किसी के पास नहीं होता। वह तो निकालना पड़ता है। हर माँ छोटे बच्चे को नहलाती है। नहलाते समय यदि वह

गाना भी गाए तो बच्चे बेहतर शिक्षा प्राप्त करेगा। उसे वह गाना रट जाएगा। यदि हम उसी गाने की पुस्तक बाद में बच्चे को दें तो वह जल्दी पढ़ना सीख जाएगा। खाते समय बच्चों से बातें कर सकते हैं। टी. वी. पर केवल अच्छे कार्यक्रम देखने के लिए प्रोत्साहित कर सकते हैं। सुबह उठाकर पढ़ने के लिए बैठा सकते हैं। यदि आप बच्चों से खेत में भी काम लेते हैं तो

खेत जाते समय रास्ते में विभिन्न पेड़, पौधे, बेल (नार), मिट्टी, पत्थर, पहाड़, पानी, पक्षी, पशु इत्यादि के बारे में बातें कर सकते हैं। इसके लिए अतिरिक्त समय निकालने की आवश्यकता नहीं। परंतु समय निकालना पड़े भी तो निकालना चाहिए। कई बार हम बेकार के गप्पे मारते हैं। इस प्रकार के समय को बचाकर बच्चों के साथ लगाना चाहिए।

उपरोक्त उदाहरणों से आप देख सकते हैं कि एक ही समय में आप एक से अधिक कार्य कर सकते हैं। नहलाते समय गाना गाया तो समय का दुगुना उपयोग हुआ। खिलाते समय बातें किया तो समय का दुगुना उपयोग किया। खेत जाते समय ज्ञान की बातें की तो खेत जाना तो हुआ ही ज्ञान की भी बातें हुईं। अतः समय का दुगुना उपयोग हुआ। इसलिए आप दिन और रात के 24 घंटे को 36 घंटे बना सकते हैं। यह सब आपके समय प्रबंधन के तरीके पर निर्भर करता है। ध्यान रखना है कि एक भी मिनट बर्बाद नहीं होने देना है।

व्यक्तिगत विभिन्नताएँ

प्रकृति की रचना को ध्यान से देखें तो हम पायेगें की सम्पूर्ण रचना के पीछे एक व्यवस्था तथा गहरा चिंतन है। इसी व्यवस्था तथा चिंतन का एक परिणाम है, व्यक्तिगत विभिन्नताएँ।

स्कीनर के अनुसार

''मापन किया जाने वाला व्यक्ति का प्रत्येक पहलू व्यक्तिगत भिन्नता का अंश है।''

टेलर के अनुसार

''शरीर के आकार और रूप शारीरिक कार्य, गति की क्षमताओं और व्यक्तिगत लक्षणों में माप की जा सकने वाली भिन्नताओं को ही व्यक्तिगत विभिन्नता कहते हैं।''

व्यक्तिगत भिन्नता के प्रकार

एक शिशु में दूसरे शिशु से पायी जाने वाली भिन्नता अनेक क्षेत्रों से दिखायी देती है। शिशुओं में जिन बातों में भिन्नता पायी जाती है उनके आधार पर व्यक्तिगत भिन्नता के क्षेत्र निम्नलिखित है।

(1) शारीरिक भिन्नता

विभिन्न शिशु रंग रूप, बनावट लंबाई, भार, लिंग, भेद में भिन्न–भिन्न होते हैं। कुछ शिशु लंबे होते हैं, कुछ औसत लंबाई के होते हैं तथा कुछ छोटे कद के होते हैं। इसी प्रकार कुछ शिशु मोटे होते हैं तथा कुछ दुबले होते हैं। मनोवैज्ञानिक धारणा हैं कि इन सबका प्रभाव योग्यता, बुद्धि, स्वभाव, प्रवृत्ति और रूचि पर पड़ता हैं।

(2) मानसिक भिन्नता

भिन्न–भिन्न शिशु मानसिक गुणों में भी भिन्न–भिन्न होते हैं। बुद्धि, रूचि, स्मरण शक्ति जैसे मानसिक गुणो में, शिशुओं में अंतर पाया जाता है। कुछ शिशु नवीन बातों को शीघ्रता से सीख लेते हैं। कुछ धीरे से सीखते हैं। कुछ शिशु एक बार हुई बातों को दीर्घकाल तक स्मरण रखते है जबकि कुछ धीरे–धीरे भूल जाते हैं।

(3) संवेगात्मक भिन्नता

प्रत्येक शिशु का संवेगात्मक विकास अलग–अलग होता है। संवेगात्मक विकास पर ही व्यक्ति का संवेगात्मक व्यवहार निर्भर करता है। कुछ शिशु संवेगों के कारण बड़ी जल्दी क्रोधित हो जाते हैं या शीघ्र भयभीत हो जाते हैं। यह सब संवेगात्मक भिन्नताओं के कारण ही होता है।

(4) रूचि में भिन्नता

रूचि की दृष्टि से शिशुओं में कभी–कभी आश्चर्यजनक भिन्नताएं देखने को मिलती हैं। किसी को संगीत में, किसी के चित्रकला में, किसी, को खेल में और किसी को वार्तालाप में रूचि होती हैं। प्रत्येक शिशु की रूचि में आयु के साथ–साथ परिवर्तन होता जाता है।

(5) अधिगम संबंधी भिन्नता

शिशुओं की सीखने की क्षमता में भिन्नता पायी जाती है। अनेक शारीरिक तथा मानसिक विशिष्टाओं के कारण बालकों के सीखने की गति एक दूसरे से भिन्न होती हैं। कुछ बालक जल्दी सीख लेते हैं तथा कुछ बालक देर से सीखते हैं। प्रत्येक बालक के सीखने का ढंग अलग–अलग होता है। कुछ बालक सूक्ष्म ज्ञान को आसानी से समझ लेते हैं। कुछ बालक सीखने में कठिनाई महसूस करते हैं।

(6) व्यवहार संबंधित भिन्नता

कुछ शिशु अंतमुर्खी होते हैं और कुछ बहिमुर्खी होते हैं।

सामुदायिक सहभागिता

छत्तीसगढ़ नवनिर्मित राज्य है, जहाँ शिशु शिक्षा एवं देखभाल के प्रति जागरूकता की आवश्यकता है। 0–6 वर्ष के बच्चों के लिए महिला एवं बाल विकास (ICDS) द्वारा सघन प्रयास किये जा रहे हैं। परंतु इसके बावजूद भी शिशुओं की शिक्षा के प्रति जागरूकता की आवश्यकता समाज में स्पष्ट दिखती है।

समुदाय के लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करना है।

उद्देश्य

1. बोलना व सुनना।

2. लोगो से संप्रेषण करते समय अपने द्वारा बोले गये शब्दों को विश्वसनीय रखने के लिए हमें मौखिक व्यवहार (जैसे– हाव–भाव, चेहरे की अभिव्यक्ति) पर भी ध्यान रखना चाहिए।

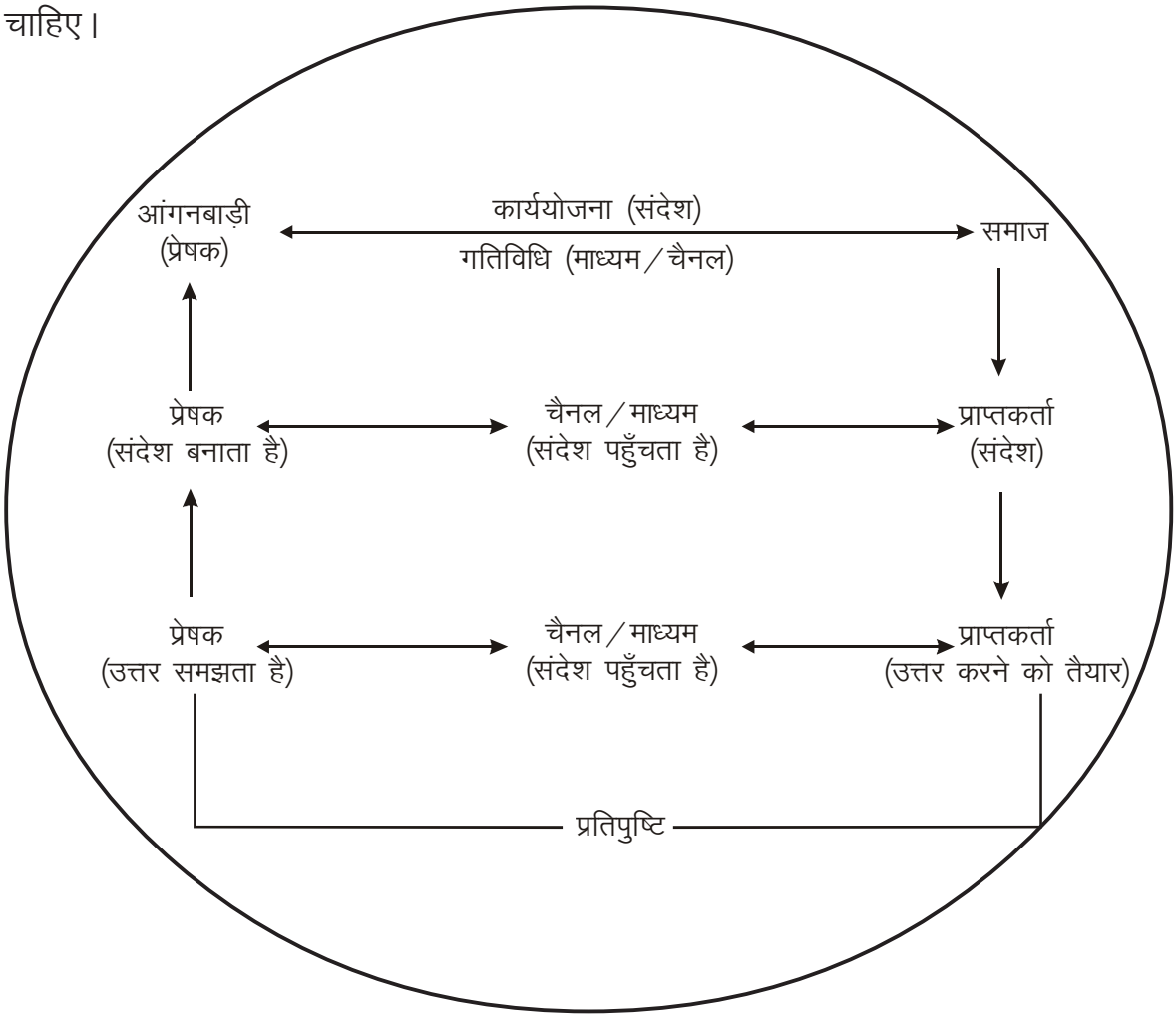

समुदाय के लोगों का सहयोग

1. बच्चे नियमित रूप से केन्द्र में आएंगे।	1. समुदाय के लोगों का ध्यान केवल बच्चों के पोषण आहार पर रहेगा।
2. आंगनबाड़ी में बच्चे पूरे समय तक रूकेंगे।	2. बच्चों की शिक्षा को महत्व नहीं मिलेगा।
3. बच्चों में निहित क्षमताओं एवं योग्यताओं का विकास होगा।	3. समुदाय की उपस्थिति टीकाकरण एवं पोषण आहार वितरण के दिन ही रहेगी।
4. समुदाय के लोग बच्चों के व्यवहार रूचि के बारे में जान पाएंगे । उनका उचित मूल्यांकन कर पाएंगे।	4. बच्चों के शिक्षण में खेलों के महत्व को नहीं समझ पाएंगे।
5. समुदाय के लोग शिशु शिक्षा और देखभाल के महत्व को समझेंगे।	5. शिशु शिक्षा के महत्व को नहीं समझ पाएंगे।
6. समुदाय शिक्षा के क्षेत्र में सहयोग देंगे।	6. अपने बच्चों की शिक्षा में योगदान नहीं देंगे।
7. बच्चों को उनकी रूचि एवं सही दिशा में बढ़ने के लिए प्रेरित करेंगे।	7. अपनी इच्छाएं, अपने विचार बच्चों पर थोपेंगे।
8. बच्चों पर किसी कार्य के लिए दबाव नहीं डालेंगे।	8. बच्चों पर पढ़ने के लिए दबाव डालेंगे।

शिशु शिक्षा एवं देखभाल हेतु दीदी को समुदाय की हिस्सेदारी को सुनिश्चित करना आवश्यक है।

सामुदायिक सहभागिता की आवश्यकता क्यों ?

शिशु शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिये समुदायिक सहभागिता महत्वपूर्ण है। बच्चों के समग्र विकास के लिये समाज के प्रत्येक वर्ग को शिशु शिक्षा में हिस्सेदारी करनी होगी :–

- शिशुओं को अच्छी शिक्षा देने के लिये।
- समाज में शिक्षा को समझने व सही स्वरूप देने के लिए।
- ECCE के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए।

- लोगों को ECCE के प्रति जागरूकता बनाने के लिए।
- बच्चों की जानकारी देने और लेने के लिए।
- शिक्षा के स्तर को सामुदायिक सहभागिता से बढ़ाने के लिए ।
- शिशुओं को प्रोत्साहन देने के लिए।
- शिशु शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रम (सांस्कृतिक) करने के लिए।
- ECCE में उनकी हिस्सेदारी सुनिश्चित करने के लिए।
- बच्चों के सम्पूर्ण विकास में उनकी सहभागिता को समझाने के लिए।
- बच्चों के बारे में विचार–विमर्श करने और सोचने के लिए।
- समुदाय की शंकाओं को दूर करने के लिए।

सामुदायिक सहभागिता के माध्यम

माध्यम से तात्पर्य उस साधन से है, जिससे आप सूचना/उद्देश्यों समुदाय तक पहुँचाते है।

सामुदायिक सहभागिता में विभिन्न गतिविधियों के द्वारा समस्याओं को दूर किया जा सकता है। सामुदायिक सहभागिता के लिए निम्न कार्य किया जा सकता है :–

- रैली निकालना
- नारे लगाना
- बैनर, पोस्टर लगाना, दीवारों पर नारे लिखना
- सभा आयोजित करना
- नुक्कड़ नाटक करना
- कठपुतली–प्रदर्शन
- सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन
- समितियों का निर्माण

1. सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन

सामुदायिक सहभागिता को सुनिश्चित करने के लिए समय–समय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम किये जाएं। बच्चों के लिए नृत्य, गीत, कविता, कहानी, फैंसी ड्रेस आदि कार्यक्रम रखे जाए।

2. परिचर्चा आयोजित की जाए :–

- बच्चे अपने पैर से बड़े नाप का जूता क्यों पहनते हैं ?
- अपने बच्चे की एक अच्छाई बनाओ और उस अच्छाई को कहाँ–कहाँ उपयोग करते हैं।
- जिसने आज तक अपने बच्चे को थप्पड़ नहीं मारा, उसको पुरस्कार देना।

3. खेल :– मुँह में चम्मच रखकर दौड़ना, घंटी दौड इत्यादि खेल का आयोजन।

4. समितियों का निर्माण एवं जागृति

किशोरी बालिकाओं की समिति बनाना और जागरूकता लाना। श्रेष्ठ पालकत्व की जागृति लाना।

"शिशु शिक्षा को बढ़ाना है।

सुदृढ़ समाज बनाना है।"

इसी प्रकार के नारे बनाकर दीवारों पर लेखन करवायेंगे, रैली निकालेंगे और बैनर को लेकर दो बच्चे पकड़कर जुलूस निकालेंगे कई जगहों पर बैठकर लगायेंगे।

5. सभा आयोजित करना

शिशु शिक्षा की अच्छाई और अच्छे पालकत्व पर चर्चा करेंगे। सभा के दौरान शिशु के सम्पूर्ण विकास को भी बतायेंगे। बच्चों के समग्र विकास से समाज में होने वाले परिवर्तन पर चर्चा करेंगे। सभा में समुदाय के व्यवहार व दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने की बात करें :–

प्रकृति द्वारा प्रदत शिशुओं को वरदान :–

1. कर्म की स्वतंत्रता
2. असीमित क्षमतायें
3. अपार संभावनायें
4. कल्पनाशीलता

आंगनबाड़ी की भूमिका

आंगनबाड़ी की भूमिका	समुदाय की भूमिका
1. केन्द्र को आकर्षक एवं रोचक बनाना।	1. आंगनबाड़ी के क्रियाकलापों में सहयोग देना।
2. प्रत्येक बच्चे की सक्रिय सहभागिता को सुनिश्चित करना।	2. अपने कर्तव्यों को पूरा करना।
3. सभी बच्चों की सभी क्रियाओं को आंकलन करना।	3. बच्चों को सभी कार्य करने की स्वतंत्रता देना।
4. समुदाय को आंगनबाड़ी से जोड़ना।	4. सक्रिय सहभागिता से व्यवस्थाएँ अपने आप सुधर जायंगी।जैसे – a बच्चे नियमित केन्द्र जायेंगे। b दीदी के अनुपस्थित रहने पर समुदाय के लोग शिक्षण कार्यों में मदद कर सकते हैं।
5. बच्चों की क्रियाओं, व्यवहारों, रूचियों एवं योग्यताओं से समुदाय को अवगत करना।	5. बच्चों की व्यक्तिगत रूचियों,क्षमताओं एवं योग्यताओं को पहचान। उन्हें प्रोत्साहित करना।
6. समुदाय की अपेक्षाओं को समझना।	6. सहयोग करना।
7. किशोरावस्था में उचित मार्गदर्शन देना।	7. किशोरावस्था में उचित मार्गदर्शन देना।
8. समुदाय के लोगों को अच्छे पालक बनने के बिन्दुओं पर चर्चा करना।	8. अच्छा पालक बन जाने पर वे अपनी महती भूमिका निभा सकते है।

सामुदायिक सहभागिता का महत्व

1. समाज और शैक्षिक संस्थाओं (आँगनबाड़ी+स्कूल) के मध्य संबंध बनेगा।
2. शिक्षा का सही स्वरूप प्राप्त होगा।
3. ECCE के उद्देश्यों की पूर्ति होगी।
4. शिशु शिक्षा और देखभाल के प्रति जागरूकता आएगी।
5. बच्चों के संपूर्ण जीवन का सुदृढ़ आधार प्राप्त होगा।
6. संस्कारित समाज का निर्माण होगा।
7. बच्चे अपने अस्तित्व को जान पाएंगे, उनके व्यक्तित्व का निर्माण होगा।
8. स्वस्थ और नैतिक गुणों से समृद्ध समाज का निर्माण होगा।

विवाह पूर्व शिक्षण

जन्म के उपरांत शैशवास्था और बाल्यावस्था के बाद मानव विकास की तीसरी अवस्था किशोरावस्था है, जो 12 से 18 वर्ष तक मानी जाती है।

" किशोरवस्था वह समय है, जिसमें विकासशील व्यक्ति बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर बढ़ता है।

किशोरावस्था की विशेषताएँ

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक विकास
3. सामंजस्य का अभाव
4. व्यवहार में भिन्नताएँ
5. काम–भावना का विकास
6. विषम लिंगीय आकर्षण
7. अपराध प्रवृत्ति का विकास
8. कल्पना का बाहुल्य
9. रूचियों में परिवर्तन
10. आत्म–सम्मान की भावना

1. शारीरिक विकास

किशोरावस्था में महत्वपूर्ण शारीरिक परिवर्तन होते हैं। इस समय शारीरिक दृष्टि से यौवनारम्भ के लक्षण प्रकट होते है। किशोरों में दाढ़ी–मूँछ विकसित होने लगती है। किशोरियों के वक्ष स्थल की गोलाई बढ़ने लगती है और मासिक धर्म शुरू हो जाता है। किशोर और किशोरियों के गुप्तांगों पर बाल निकल आते है। किशोर स्वस्थ, सबल तथा उत्साही बनने का प्रयास करते हैं। किशोरियाँ नारी सुलभ आकर्षण प्रस्तुत करने का प्रयास करती है।

2. मानसिक विकास

किशोरावस्था में शारीरिक विकास के साथ–साथ मानसिक क्षमता में वृद्धि होने लगती है। कल्पना स्मृति, दिवास्वप्नों की बहुलता, तर्कशक्ति, निर्णय लेने की क्षमता किशोरावस्था की प्रमुख विशेषताएँ हैं। किशोर–किशोरियों में मानसिक अंतर दिखने लगता है। वे सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक घटनाओं में रूचि लेते हैं।

3. सामंजस्य का अभाव

इस अवस्था में उनकी मनोदशा अस्थिर होती है। परिणामस्वरूप वे सामंजस्य करने में कठिनाई महसूस करता है।

4. काम–भावना का विकास

किशोरावस्था की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता काम–भावना का प्रबल होना है। काम समस्त जीवन का नहीं तो किशोरावस्था का अवश्य ही मूल तथ्य है।

5. कल्पना का बाहुल्य

किशोरावस्था में कल्पना का बाहुल्य होता है। दैनिक जीवन में किशोर अपनी सारी इच्छाओं को पूरा करने में खुद को माध्यम मानता है। परिणाम–स्वरूप इच्छाओं की पूर्ति वास्तविक जगत में न करके कल्पना जगत में करता है। वह छोटी–छोटी बातों को लेकर कल्पना में डूब जाता है। कल्पना की बहुलता के कारण किशोरावस्था में दिन में सपने (Day Draem) देखने की प्रवृत्ति होती है जिससे वे कवि, कलाकार, कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार, चित्रकार एवं संगीतज्ञ बनते हैं। कल्पना की बहुलता के कारण किशोर कभी–कभी असामाजिक और अनैतिक व्यवहार करने लगते हैं।

6. विषमलिंगीय आकर्षण

विषमलिंगीय के प्रति आकर्षण इस अवस्था की प्रमुख विशेषता है। किशोर और किशोरियों में एक–दूसरे से मिलने के लिए सामाजिक बंधनों को तोड़ते हैं। इस अवस्था में प्रत्येक लड़का किसी न किसी लड़की से और प्रत्येक लड़की किसी न किसी लड़के से प्रेम–स्नेह करने लगती है। वे परस्पर मिलने–जुलने, बातचीत करने, घूमने–फिरने तथा साथ–साथ रहने की इच्छा रखते हैं।

7. अपराध प्रवृत्ति का विकास

इच्छापूर्ति में बाधा, निराशा, असफलता, प्रेम का अभाव, नवीन अनुभवों की ललक आदि के कारण किशोरावस्था में अपराध प्रवृत्ति की भावना विकसित होने लगती है।

8. रूचियों में परिवर्तन

किशोरावस्था में रूचियों में भी परिवर्तन होता रहता है। किशोर–किशोरियों की रूचियों में कुछ समानताएँ, कुछ भिन्नताएँ पायी जाती हैं। दोनों में पत्र–पत्रिकाओं, कहानियाँ, नाटक, उपन्यास पढ़ना, संगीत, कला, सिनेमा देखना, टेलीविज़न देखना, रेडियो सुनना आदि प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। विषमलिंगी की ओर आकर्षित होना। किशोरों–किशोरियों की रूचियाँ होती हैं।

9. आत्म सम्मान की भावना

इस अवस्था में आत्म सम्मान की भावना प्रबल होती है। वे छोटी–छोटी बातों पर स्वयं सुझाव देने और सम्मान पाने की भावना रखते हैं। इस अवस्था में उन्हें प्रेम और सहानुभूतिपूर्वक समझाना चाहिए। कभी–कभी आत्मसम्मान को ठेस लगने पर स्वयं को ठेस पहुँचाते हैं।

किशोरावस्था में शिक्षा

1. शारीरिक विकास के लिए शिक्षा

किशोरावस्था में शारीरिक विकास में परिवर्तन होते है। उन्हें वार्तालाप, रोल प्ले, चार्ट के माध्यम से आंगनबाड़ी की दीदी उन्हें इस अवस्था में होने वाले परिवर्तन के बारे में बताएगी।

अ. वार्तालाप

किशोरियों में से एक को चार वर्षीय बालिका एवं पंद्रह वर्षीय किशोरी के बीच अंतर बताने को कहा जाए और इन भिन्नताओं को ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाए और इन्हीं भिन्नताओं को तीनों शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक में रखा जाए। किशोरावस्था के दौरान उपयुक्त पोषण क्यों आवश्यक है।

ब. रोल प्ले

किसी भी केस स्टडी के माध्यम से रोल प्ले करवाएँ। जैसे– माँ और बेटी को मासिक धर्म क्यों, कैसे होता है ? कारण इस बातों की चर्चा करायें।

चित्र के माध्यम से

ब्लैक बोर्ड पर चित्र के द्वारा मासिक धर्म की सारी प्रक्रिया को बताएँगी।

मानसिक विकास के लिए शिक्षा

किशोरों की रूचियों, कल्पनाओं, Day Dreaming एवं भावुकता का लाभ उठाकर उसे संगीत कला आदि की तरफ लगाया जा सकता है। किसी भी सही–गलत निर्णय हेतु सक्षम हों।

यौन शिक्षा

वास्तव में किशोर–किशोरियों की अधिकांश समस्याओं का संबंध उनकी भय प्रवृत्ति से होता है। भारतीय परिवारों में काम को एक वर्जित विषय माना जाता है। इस संबंध में जानकारी करने में लज्जा व संकोच महसूस किया जाता है। इसलिए भारतीय परिवेश में किशोर–किशोरियों को यौन शिक्षा प्रदान करना आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है। उचित शिक्षा से काम प्रवृत्ति को उचित दिशा दी जा सकती है जो कि शिक्षा के अभाव में कई सारी परेशानियाँ को जन्म देता है। HIV इसके बारे में भी चर्चा करें।

कदम दर कदम

1. जो अभी पति–पत्नी बनने वाले हैं :–

एक नव–जवान जोड़ा–जो अभी पति–पत्नी बनने वाला है, उसे अपनी इस नई भूमिका के लिए न केवल मानसिक व शारीरिक, बल्कि आर्थिक रूप से भी तैयार रहना होगा। कुछ समाज में कहीं–कहीं लड़के लड़कियों का विवाह कम उम्र में कर दिया जाता है। रिश्ते मां–बाप तय करते हैं, और बच्चों का विवाह कर देते हैं। दरअसल श्रेष्ठ पालकत्व के लिए प्रथम आवश्यक तत्व वर–वधू की वयस्कता है। तत्पश्चात् जीवन जीने के लिए आवश्यक आत्म–बल, स्थाई आर्थिक प्रवाह या सुनिश्चित रोजगार आवश्यक है। जब विवाह योग्य लड़का अपनी योग्यता के अनुसार रोजगार में लगा होता है तब उसे अपनी होने वाली पत्नी और आगे होने वाली संतति की आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकने का स्वयं पर विश्वास होता है। इसके विपरीत होने पर वह अपने को, अपने व परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति में अक्षम पाता है। जो उसकी कुंठा का कारण बनता है और भावी संतान पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। नव–विवाहितों को विवाह की गम्भीरता को समझना ही होगा। विवाह न केवल दो आत्माओं का मिलन है बल्कि सामाजिक चक्र को आगे बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण संस्था भी है। विवाह की गम्भीरता को समझने के साथ नव–विवाहितों को इस बात का विशेष ध्यान रखना होगा कि वे कब माता–पिता बनने के लिए तैयार हैं। श्रेष्ठ पालकत्व के बीज यहीं से बोये जाते हैं।

विवाह के पूर्व जिस तरह से लोग अन्य विधाओं जैसे– इतिहास, भूगोल, जीव विज्ञान, पाक कला आदि का ज्ञान प्राप्त करते हैं। उसी तरह हर युवक व युवती को गृहस्थ जीवन एवं बच्चों के लालन–पालन का भी ज्ञान प्राप्त करना चाहिए। इस तरह के ज्ञानार्जन में किसी भी तरह की कोई शर्म महसूस नहीं करनी चाहिए। माता–पिता बनने के लिए उनको क्या–क्या तैयारी करनी होगी ? कौन–सी जानकारी पढ़ कर और कौन–सी जानकारी अनुभवी लोगों से पूछ कर संग्रहित की जा सकती है। ऐसी हर जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

चेक लिस्ट

आँगनबाड़ी केन्द्र का नाम ————————————————————

केन्द्र क्रमांक ————————————————————

कार्यकर्ता का नाम ————————————————————

शैक्षणिक योग्यता ————————————————————

अनुभव वर्षों में प्रशिक्षित ————————————————————

यदि हाँ हो तो प्रशिक्षण ————————————————————

का नाम ————————————————————

सहायिका का नाम ————————————————————

शैक्षणिक योग्यता ————————————————————

प्रशिक्षित ————————————————————

आँगनबाड़ी के सेक्टर का नाम————————————————————

परियोजना, जिला का नाम ————————————————————

स्थानीय सहायता सामग्री ————————————————————

केन्द्र की सजावट ————————————————————

शिशु की दर्ज संख्या	बालक	बालिका	योग
	☐	☐	☐

अवलोकन में दिन उप.	बालक	बालिका	योग
	☐	☐	☐

अवलोकन के दिन किये गये क्रियाकलाप थीम का नाम ————————————————

संज्ञानात्मक विकास	शारीरिक विकास	व्यक्तिगत सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास	भाषा विकास	सृजनात्मक विकास

"शिक्षा का दायरा मनुष्य के जीवन के किसी सीमित काल तक नहीं बल्कि सारे जीवन के साथ संबंध रखता है। शिक्षा सभी से शुरू हो जाती है जब बालक मां के गर्भ में जन्म लेता है और खत्म तब होती है जब मनुष्य आखरी साँस लेता है।"

महात्मा गांधी

ऽ आपके द्वारा अब तक कितने थीम पर कार्य किया गया।

ऽ आपको थीम पर कार्य करने से बच्चों की किस–किस क्षेत्र में रूचि दिखाई दी।

ऽ थीम पर कार्य करने से बच्चों की उपस्थिति पर क्या प्रभाव पड़ा।

ऽ थीम पर कार्य करते समय क्या सभी बच्चे पूरे समय तक रूके रहते हैं। हां/नहीं

ऽ थीम पर कार्य करने से आपकी दृष्टि में बच्चों को क्या–क्या लाभ मिला।

ऽ क्या कार्यकर्ता ने सामग्री का संकलन निर्माण किया है।

ऽ थीम के द्वारा सिखाने पर अभिभावकों की प्रतिक्रिया।

ऽ वर्तमान में सामुदायिक सहभागिता की भूमिका।

ऽ थीम पर कार्य करते समय कब कहां किस थीम में कठिनाई प्रतीत हुई।

ऽ वर्तमान शिशु शिक्षा प्रक्रिया आपके विचारों में बच्चों/पालक समुदाय पर प्रभाव।

ऽ क्या कार्यकर्त्ता थीम बेस्ड शिक्षण का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

ऽ क्या वे रूचि पूर्वक कार्य कर रहें है।

ऽ क्या सामग्रियों का संकलन एवं निर्माण कराया है।

ऽ क्या कार्डो का का उपयोग विधिवत कर रहें है।

ऽ क्या सारांशीकरण कार्ड पर कार्य कराते हैं।

ऽ क्या जूनियर एवं सीनियर का शिक्षण हो रहा है।

ऽ क्या कार्डों पर बच्चे प्रसन्नता के साथ गतिविधि कराते है।

ऽ क्या चित्रों की ओर बच्चे आकर्षित हो रहे है।

ऽ क्या शाला में क्रियाकलाप करते हैं।

ऽ क्या कार्यकर्ता मदद करते हैं।

खेल

शैशवावस्था खेल तथा आनंद का ही समय होता है। बच्चे अपने रूचि के अनुसार अलग–अलग खेल, खेलते दिखाई देते हैं। उनके इस गुण का उपयोग कर छोटी एवं बड़ी मांसपेशियों का समुचित विकास कर सकते हैं। बच्चे स्वयं से किसी क्रिया को खेल को बार–बार खेलते हैं जैसे – गोल – गोल घूमना, फिसलना, कूदना कई दिनों तक एक खेल को खेलते रहते हैं और उस खेल में निपुणता प्राप्त करते हैं, उसके बाद स्वयं से खेल का नियम बदलते हैं यानी एक सीढ़ी आगे का खेल–खेलना शुरू करते हैं।

जैसे – चार गोंटे फेंककर हाथ में पकड़ना। उसके आगे चार गोंटे फेंककर दो या तीन बार ताली बजाकर हाथ में पकड़ना। खेल से नेतृत्व का अवसर मिलता है, झिझक दूर होती है, बच्चों में सहज स्फूर्ति, सृजानात्मकता तथा सामाजिक मूल्यों का विकास होता है। खेल के दौरान समझ विकसित होती है।

सुझाव

1. बच्चों में प्रतिस्पर्धा की भावना नहीं रखना चाहिए।
2. सभी को पुरस्कार के रूप में कुछ न कुछ देना चाहिए।

खेल

1.कुर्सी दौड़

कुर्सी को गोल घेरे में रखकर सभी शिशुओं को गोले के बाहर खड़े करके और एक बच्चा घंटी को बजाएगा, तब तक सब बच्चे दौड़ लगायेंगे। जैसे ही घंटी का बजना बंद होगा, सभी बच्चे बैठ जायेंगे और जिस बच्चे को कुर्सी नहीं मिलेगी वह बाहर हो जाएगा। इसी प्रकार से यह खेल चलता रहता है।

2. रेस टीप

एक बच्चा दाम देता है और बाकी छुप जाते हैं। फिर जो बच्चा पहले दिखता है, उसे पहला टीप वैसे ही बारी–बारी से सभी बच्चों का नाम लेकर बुलाते जाते हैं। इस प्रकार सभी बच्चे गिन लिए जाते हैं। जो पहला टीप होता है, वह दाम देता है।

3. विष–अमृत

एक बच्चा दाम देता है और वह जिस बच्चे के पास जाता है अगर वह बैठे जाता है तो उसे विष कहकर छू देता है, वह बच्चा बैठ जाता है। फिर सारे बच्चे उसे बचाने की कोशिश करते

हैं। अगर उस बच्चे को अमृत कहते हैं, तो वह वहाँ से भाग जाता है। जिस बच्चे को दाम देने वाला बच्चा छू है लेता वह दाम देता है। इस प्रकार से इस खेल को खेलते हैं।

4. गिल्ली – डंडा

एक छोटा–सा लकड़ी का गिल्ली बनाते हैं। फिर छोटा सा गोला बनाकर, एक डंडा लेकर गिल्ली को मारते हैं। इसी प्रकार से सभी बच्चे को खिलाएं।

5. फुगड़ी

गोबर दे बछरू गोबर दे,

चारों खुंट ल लिपन दे।

चारों देरानी ल बैठन दे।।

अपन खाते गुदा–गुदा, मोला देथे बीजा,

ए बीजा ला का करो रही जहुँ तीजा।

इस प्रकार से इस गाने को गा के सभी शिशु नीचे बैठकर फुगड़ी खेलेंगे।

6. बिल्लस

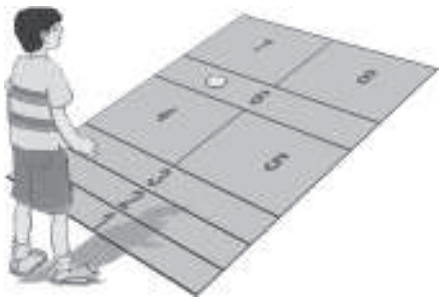

ज़मीन पर उपरोक्तानुसार आकृति बनाकर एक पत्थर लेकर एक बच्चा उस पत्थर को पैर से मारते हुए एक घर से आखिरी तक ले जाएगा। इस प्रकार से प्रत्येक शिशु को खेलने का मौका दें।

7. नदी–पहाड़

नदी–नीचे ज़मीन

पहाड़– ऊपर की जगह

एक बच्चा दाम देगा और जैसे वह नदी बोलेगा, तो सभी बच्चे नदी में आ जायेंगे और जो बच्चा पहाड़ में रहेगा वह दाम देगा। इस प्रकार से सभी बच्चे यह खेल खेलेंगे।

8.चम्मच दौड़

सभी शिशु को लाइन में खड़े करेंगे। सामने गोली, कंचे/कंकड़ और चम्मच रखी रहेगी। बच्चे चम्मच में गोली को लेकर दौड़ेंगे।

9. घोड़ा बादाम शाही

सभी शिशु को गोल घेरे में बैठा करके एक बच्चा जो दाम देगा, वह एक कपड़ा लेकर बोलेगा कि घोड़ा बादाम शाही पीछे देखे मार खाई इसका अर्थ यह है कि जो बच्चा बैठा है और वह पीछे देखता है तो उसे कपड़े से मारते है। इस प्रकार सभी बच्चे क्रमशः दाम देते हैं।

10. कानाफूसी/टेलीफोन का खेल

सभी बच्चों को गोल घेरे में बैठाकर आंगनबाडी कार्यकर्ता किसी एक बच्चे के कान में कुछ बोलेगी। फिर वह बच्चा अपने बाजू बैठे बच्चे के कान में बोलेगा। इसी प्रकार क्रमशः एक के बाद एक बोलते जायेंगे। आखिरी में ऐसा होता है कि जो आंगनबाड़ी कार्यकर्ता बोली होती है वह कुछ और रूप में आता है। जहाँ से शब्द अलग हुआ होगा वह बच्चा दाम देगा।

11. मामा की चिट्ठी आई

एक बच्चे को डाकियावाला बना दें। वह बहुत सारी चिट्ठी लेकर आएगा और वह बाकी सभी बच्चों को बार–बारी से मामा की चिट्ठी आई है, कहकर देगा। ऐसा क्रमशः सभी करें। बच्चे मजे से खेल को खेलें।

12. चिड़िया उड़ तोता उड़

सभी बच्चों को गोल घेरे में बिठाकर करके सभी कि ऊँगली की सामने रखकर एक शिशु बोलेगा की तोता उड़, मैना उड़ इत्यादि। अगर शेष शिशु उड़ने वाले पक्षियों या चीजों में ऊँगुली में उठाते हैं तो ठीक है। अगर कोई न उड़ने वाली चीजों जैसे – मेढ़क, भालू, आलू में ऊँगुली उठायेगा। तो वह बच्चा दाम देगा।

13. पिंकी–पिंकी वॉट कलर

सभी बच्चे एक साथ खड़े रहेंगे और जो दाम देगा वह बोलेगा। पिंकी–पिंकी, पिंकी–पिंकी वॉट कलर तो बाकी बच्चा बोलेंगे रंगों में से कौन–सा कलर। कौन–सा कलर यदि वह बच्चे लाल बोलेगा तो सभी बच्चे लाल रंग के वस्तु को पकड़ेंगे यदि कोई नहीं पकड़ पाए तो वह दाम देगा।

14. तिग्गा

इस खेल को दो शिशु मिलकर खेलते हैं। प्रत्येक के पास 9–9 गोटियाँ होती हैं। इस खेल में कुल 19 स्थान होते हैं जिसमें गोटियों को रखने के लिए 18 स्थान होते हैं।

बच्चे खाली स्थानों में अपनी गोटियाँ रखते जाते हैं। साथ ही बीच में आने वाले दूसरे बच्चे की गोटी को निकालते जाते हैं। इस प्रकार दोनों बच्चे एक–दूसरे की गोटी पार कर अपने पास रखते हैं। जिस शिशु की गोटी बच जाती है, वह जीत जाता है।

15. राम–रावण

शिशुओं का दो समूह में विभाजित कर तीन लाइन खीचें। एक लाइन पर राम दल के शिशुओं को खड़ा करें तथा बीच की लाइन को छोड़कर तीसरी लाइन पर रावण दल के शिशुओं को खड़ा करें। तत्पश्चात आँगनबाड़ी दीदी जब राम कहेंगी, राम दल के शिशु अपना दाहिना पैर बीच लाइन पर रखेंगे और रावण कहेगी तो रावण दल के शिशु लाइन पर पैर रखेंगे। इस प्रकार से खेल करवाएँ। इससे यह पता चलता है कि बच्चे कितना सजग होकर खेलते हैं।

16. नेता–नेता चाल बदलें

सभी बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे और किसी एक बच्चे को नेता चुनेंगे, जैसा नेता अभिनय करेगा वैसा ही बाकी सभी शिशु अभिनय करेंगे। बीच में एक अन्य बच्चा नेता को ढूँढ़ेगा कि नेता कौन है।

17. हाँ/नहीं का खेल

सभी शिशु गोल घेरे में खड़े होंगे और जैसे आंगनबाड़ी दीदी हाँ बोलेंगी तो बच्चे मुँह से बोलेंगे लेकिन सिर को नहीं में हिलाना है और यदि कार्यकर्ता नहीं बोलेंगी तो शिशु मुँह से नहीं बोलेंगे और सिर को हाँ में हिलाना है।

18. मटका फोड़

कुछ दूरी पर मटका को रख दीजिए और एक शिशु की आँख पर पट्टी बाँधकर मटके को फोड़ने को कहेंगे। अगर फोड़ लिया तो ठीक नहीं तो यही प्रक्रिया दूसरे बच्चों के साथ करायेंगे। इस प्रकार सभी बच्चों को खेलने का अवसर दें।

19. रेलगाड़ी का खेल

शिशु एक–दूसरे को पकड़कर रेलगाड़ी जैसा चलेंगे और–

रेल चली भई रेल चली

मुन्ना की रेल चली

इस प्रकार गाना गाकर सभी बच्चों का नाम लेते हुए। एक पीछे एक दौड़ते जाएं।

20. अटकन–बटकन

सभी शिशुओं के गोल घेरे में बैठाकर सभी के हाथ को सामने रखकर एक बच्चा बोलेगा– अटका बटकन दही चटाका, लौहा लाटा बन में काँटा, सावन में करेला फूटे, चल–चल बेटी गंगा जाबो, गंगा ले गोदावरी, पका–पका बेल खाबो, बेल के डारा टूट गे, भरे कटोरा फूट गे।

21. पोशमपा

इस खेल में दो शिशुओं को ऊपर हाथ करके एक दूसरे से जोड़कर खड़े होना है और बाकी शिशु एक दूसरे के पीछे–पीछे उसके अंदर से निकलेंगे।

पोशमपा भई पोशमपा, सवा रुपये की घड़ी चुराई, अब तो जेल में जाना पड़ेगा और जेल की रोटी खाना पड़ेगा।

जो शिशु के समय अंतिम शब्द आएगा, उसे हाथ से बीच में बंद कर लेंगे। इस प्रकार सभी शिशुओं के साथ खेलेंगे।

22. भोटकुल

जमीन/लकड़ी पर इस प्रकार 12 गड्ढे बनाकर प्रत्येक में 5–5 गोटी रखेंगे फिर एक शिशु एक गड्ढे से गोटी मिलाकर प्रत्येक में रखते जाएगा। जहाँ पर गोटी खत्म होगी, उसके सामने वाले गड्ढे में गोटी उठाकर फिर वही प्रक्रिया करेंगे। आखिरी तक ऐसा करते रहेंगे। जिसके पास ज्यादा गोटी जमा होगी वह शिशु जीत जाएगा। ऐसा प्रत्येक शिशु को खेलने का अवसर दें।

23. पिट्टूल

मैदान के बीच में एक गोला बनायेंगे एवं खपरा के सात गोल आकृति का पिट्टूल लायेंगे। उसे गोले के अंदर, एक–एक ऊपर एक रखेंगे। पिट्टूल की आकृति घटते क्रम में वृत्ताकार या त्रिभुजाकार रख सकते है। बच्चों के दो समूह आमने–सामने खड़े होंगे। दाम देने वाला समूह गेंद से पिट्टूल को मारेगा एवं दूसरे समूह के लोग फिर से जमाने की कोशिश करेंगे। इसी तरह यह खेल चलता रहेगा।

24. शेर–शेर जी

एक बच्चे को शेष बनाकर उसे बच्चों के घेरे के अंदर खड़ा करेंगे। बाकी बच्चे बारी–बारी से पूछेंगे शेर–शेर जी क्या कर रहे हो?

शेर बना बच्चा कहेगा, मैं मंजन कर रहा हूँ। इस तरह क्रम से अपनी सारी दैनिक क्रियाओं को बतायेगा।

25. धूप–छाँव

बच्चों को पंक्ति में खड़ाकर कार्यकर्ता बच्चों से कहेंगी धूप तो बच्चे धूप में आ जायेंगे और अगर कार्यकर्ता कहेंगी छाँव, तो छाँव में आ जायेंगे। इस तरह दीदी यह खेल करवायेंगी और जो नहीं कर पायेगा वे पंक्ति से बाहर हो जायेगा।

26. बाल्टी–बॉल

एक खाली बाल्टी को कुछ दूरी पर रख दें और शिशु के हाथ पर बॉल देंगे। शिशु दूर से इस खाली बाल्टी में बॉल डालेगा। इस प्रकार सभी शिशु यह खेल खेलेंगे।

27. हाय–हाय कचरा जाय–जाय कचरा

बच्चे अपनी आंगनबाड़ी की साफ–सफाई करते समय यह गाना गायेंगे– हाय–हाय कचरा जाय–जाय कचरा। सभी शिशु मिलकर साफ–सफाई का कार्य करेंगे।

28. घर घुंदिया

सभी शिशु मिलकर मिट्टी, धूल में घर– घुंदिया बनाकर खेलेंगे।

29. सब्जी और कुँआ का खेल

सभी बच्चे गोल घेरे में बैठेंगे और एक बच्चा राजा बनेगा और एक रानी बनेगी। राजा जिसको सब्जी तोड़कर लाने बोलेगा। रानी उसे तोड़ने जाएगी और उसे चींटी काटेगी, लेकिन जब राजा सब्जी तोड़ने जायेंगे तो चींटी नहीं काटेगी। इस प्रकार से यह खेलना है।

30. गोंविंदा खेल

दो शिशु अपने दोनों हाथों को एक–दूसरे के साथ वर्गाकार आकृति बनाते हैं। इसके बाद तीसरा शिशु दोनों के हाथों से बने पालकी में बैठता है और सभी शिशु मिलकर बोलते हैं–

हाथी घोड़ा पालकी, जय कन्हैया लाल की।

31. दौड़ों बच्चों, दौड़ो जंगल में आग लगी, बन जा मूर्ति।

सभी बच्चों के गोल घेरे में खड़ा करके एक शिशु बोलेगा–

दौड़ों बच्चों, दौड़ो जंगल में आग लगी, बन जा मूर्ति।

जैसे ही बच्चा मूर्ति बन जाओ बोलेगा वैसे ही अपने–अपने स्थान पर खड़े हो जाना है और फिर वह बच्चा देखेगा कि कौन हिल रहा है? जो पहले हिलेगा वह आउट हो जायेगा और वह दाम देगा।

32. रिले रेस

10मी. की दूरी में दोनों तरफ दो–दो बच्चे जोड़ी बनाकर खड़े रहेंगे और पहले बच्चे के हाथ में लकड़ी का डंडा रहेगा। खेल शुरू होते ही डंडा हाथ में लिए हुए पहला बच्चा दौड़ेगा एवं दूसरी छोर पर खड़े हुए पहले बच्चे को डंडा देगा। वह बच्चा डंडा पहले छोर की ओर दौड़ेगा, जहाँ से पहला बच्चा दौड़ा था एवं यहाँ खड़े दूसरे बच्चे को डंडा देगा फिर बच्च दूसरी छोर की ओर दौड़ेगा और चौथे बच्चे को डंडा देगा।

33. एक सहेली बाग में

सभी शिशु गोल घेरे में खड़े होंगे और एक शिशु बीच में रहेगा। बाकी शिशु यह गाना गायेंगे–

एक सहेली बाग में रो रही थी,

उठा सहेली अपनी आँसू पोंछ लो।

उत्तर–दक्षिण घूम लो अपनी सहेली खोज लो,

इस प्रकार से सभी शिशु खेलेंगे।

34. तिरी–पासा

यह खेल चार शिशु मिलकर खेलते है। इमली के बीज को फोड़कर पासा बनाते हैं। फिर पारी–पारी से चालते (खेलते) हैं, अगर 5 आया तो अपने घर से 5 बार चलकर 5वें वाले घर में जाते हैं। इस प्रकार से खेलते हैं, जब तक पूरी गोटी बीच वाले घर में नहीं पहुँच जाती है। जिसकी गोटी पहले पहुँचती है, वह जीत जाता है।

35. सी सॉ खेल

36. गुड़िया सजाना

37. भोजन पकाने का अभिनय

38. दिन–रात

39. अहा!अहा! छी छी

40. चना मुटकी चना चोर

सारे बच्चे मुट्ठी बाँधकर रखेंगे। एक बच्चे के हाथ में गोटी रहेगी। वह कहेगा– चना मुटकी चना चोर, बाग में पुराना चोर जिसके हाथ में गोटी जा। वह बहुत दूर भाग जा।

जिस बच्चे के हाथ में गोटी जायेगी। वह दूर भाग जाएगा। फिर सारे बच्चे उसे उठाकर वापस में लायेंगे।

•••

अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें

प्रत्येक मानव शिशु हो या वयस्क सम्मान और श्रेष्ठता चाहता है। संपूर्ण जीवन में कई बार उसे सम्मान मिलता भी है। यदि हम विचार करें तो पायेंगे मानव को जब–जब सम्मान मिलता है। वह अपने प्रभाव के कारण यानी की अपनी सोच और कार्य से मिलता है। दैनिक जीवन में मानव जीवन का प्रभाव कम ज्यादा भी देखने में आता है लेकिन ऐसा तभी होता है जब वह दूसरों के प्रभाव में आ जाता है। अतिप्रभावकारी लोगों की 7 आदतें आपको अपने प्रभाव में रहने हेतु सशक्त मार्ग बताती हैं। यह एक अद्‌भूत पुस्तक है जो आपकी जिंदगी बदल सकती है।

''अति प्रभावकारी लोगों की 7 आदतें '' में लेखक स्टीफन आर कोवी व्यक्तिगत एवं व्यवासायिक अपनी प्रभावकारिता बढ़ाने के लिए एक संपूर्ण एकीकृत, सिद्धांतकेन्द्रित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। तीक्ष्ण अंर्तदृष्टियों और सटीक उदाहरणों के द्वारा लेखक निष्पक्षता, अंखडता, ईमानदारी और मानवीय गरिमा के साथ जीने का एक कदम–दर–कदम मार्ग प्रकट करते हैं। ये वे सिद्धांत है जो सार्व भौमिक, सर्वकालिक और वस्तुनिष्ठ हैं। जो हमें परिवर्तन के अनुरूप ढलने की सुरक्षा देते हैं। ये सिद्धांत हमें उस परिवर्तन द्वारा उत्पन्न अवसरों का लाभ लेने की समझ और शक्ति प्रदान करते हैं।

7 आदतें अत्यंत प्रभावकारी लोगों की सही मायने में आपको प्रभावकारी जीवन जीने में मदद करेंगी। ये आदतें एक दूसरे के साथ क्रमवार, व्यक्तिगत एवं पारस्परिक प्रभावकारिता की प्रक्रिया बनाती हैं। इन आदतों को अपनाने से आप निम्न परिणाम की आशा कर सकते हैं –

- अपने जीवन पर नियंत्रण बढ़ाना।
- व्यवस्थित व केंद्रित होना।
- संबंधों को उत्कृष्ट बनाना।
- संवाद को बेहतर बनाना।
- कामकाजी जीवन और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन रख पाना।

7 आदतों का परिचय

आदत 1 | **''प्रोएक्टिव बने''**

अपने जीवन की जवाबदारी लेना।

आदत 2 | **"परिणाम को ध्यान में रखकर कार्य शुरू करें"**

अपने जीवन के उद्देश्य व मिशन को परिभाषित करना।

आदत 3 | **"पहली चीज़ें पहले रखें"**

अधिक महत्व के कार्य को प्राथमिकता दें और करें।

आदत 4 | **"जीत–जीत सोचें"**

हर व्यक्ति जीत सकता है, का एटीट्यूड रखें।

आदत 5 | **"पहले समझें, फिर समझायें"**

लोगों को पूरी निष्ठा से सुनें।

आदत 6 | **"सिनर्जी का प्रयोग करें"**

और अधिक हासिल करने के लिए, मिलकर काम करें।

आदत 7 | **" आरी की धार तेज़ करें"**

कामकाजी जीवन और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन बनाये रखने के लिए अपना लगातार नवीनीकरण करें।

पैराडाइम और सिद्धांत

किसी भी व्यक्ति का अपने आस–पास की दुनिया को देखने का तरीका, समझने का तरीका और अर्थ निकालने के तरीका को पैराडाइम कहते हैं।

यदि आप थोड़ा बहुत बदलाव याने छोटी सफलता और साधारण उन्नति चाहते हैं तो अपना व्यवहार बदलें पर यदि आप बहुत बड़ा बदलाव यानी कि बड़ी सफलता और विशेष उन्नति चाहते तो आप अपना पैराडाइम (नजरिया) बदलें।

पैराडाइम्स बहुत सशक्त होते हैं। सभी पैराडाइम परिवर्तन तत्काल नहीं होते। पैराडाइम परिवर्तन सुविचारित प्रक्रिया है।

सिद्धांत मानवीय व्यवहार के मार्ग दर्शक है। जिनका स्थायी महत्व साबित हो चुका है। सिद्धांत के अस्तित्व के बारे में एक सार्वाभौमिक आंतरिक चेतना और जागरूकता नज़र आती है।

अपने नजरिये को सिद्धांत से जोड़ने पर ही सफलता मिलेगी। नजरिये को बदलना पर्याप्त नहीं है। उसे सिद्धांत से जोड़ना आवश्यक है। सिद्धांत अलग–अलग होते हैं जैसे– व्यवहार, प्रकृति ।

आदतों का परिचय (स्वपहल) – अपने जीवन की जवाबदारी लेना।

पहली आदत को जीवन में उतारने का मतलब है चुनाव करने की आजादी का उपयोग करना और अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाना। जब आप प्रोएक्टिव होते है तब आप चुनाव करते हैं कि परिस्थतियों के जवाब में कैसी प्रतिक्रिया करूँ तक भविष्य में उचित परिणाम मिलें, इससे आपका प्रभाव क्षेत्र बढ़ता है।

अपनी और अपने आस–पास के भाषा पर ध्यान दें और प्रोएक्टिव भाषा एवं व्यवहार का उपयोग करें। जहाँ आप प्रभाव डाल सकते वहाँ ध्यान केंद्रित करें।

जहाँ तक आपका आत्मनियंत्रण है वहाँ तक आपकी आजादी है।

–मेरी वान इबनर ऐकेनबेक

सामाजिक दर्पण से दूर हटे और अपने क्षमता से कार्य करें। करें या होने दें। पहल करना– पहल करने का मतलब है घटनाओं को घटित करवाने की अपनी जिम्मेदारी को पहचानना है। लोगों को जिम्मेदारी के राह पर चलाना। उन्हें गिराना नहीं बल्कि उठाना है। प्रोएक्टिव मानव स्वभाव का हिस्सा है। हालाँकि प्रोएक्टिविटी मानव में सोई हो सकती है, परंतु वे हम में होती जरूर हैं। सकारात्मक ऊर्जा प्रभाव के वृत्त को बड़ा बना देती है। प्रोएक्टिव

व्यक्ति अपने प्रयासों प्रभाव के वृत्त पर केन्द्रित करते हैं। वे उन चीजों पर काम करते है जिनके बारे में वे कुछ कर सकते है। परिणास्वरूप उनके प्रभाव के वृत्त बड़ा हो जाता है।

वायदे करने और निभाने की क्षमता हमारे प्रभाव के वृत्त के केन्द्र में है। प्रोएक्टिव का सार और सबसे स्पष्ट अभिव्यक्ति है कि हम खुद से जो वायदे करते हैं, उन्हें कितनी ईमानदारी से निभाते है। हमारे जीवन का नियंत्रण तत्काल हमारे हाथ में हो सकता है। जब हम कोई वायदा कर सकते हैं और उसे निभा सकते हैं। लक्ष्य बना सकते है और उसे हासिल करने के लिए काम कर सकते है। खुद से वायदे करने और निभाने की शक्ति प्रभावकारिता की मूलभूत आदतों को विकास करने का सार है।

यह जानना कि हम जिम्मेदार हैं और प्रतिक्रिया करने में सक्षम हैं, प्रभावकारिता और इसकी हर आदत के लिए मूलभूत है।

आदत – 2

अंत को ध्यान में रखकर शुरू करें।

पहली आदत कहती आप रचयिता हैं तब दूसरी आदत कहती हैं आप अब रचना करिए।

रचना दो प्रकार से होती है। पहली मानसिक रचना दूसरी वस्ताविक रचना।

सभी चीजों की प्रथम रचना मानसिक होती है। द्वितीय रचना भौतिक। एक अच्छी तरह सोची समझी योजना के द्वारा जो आप करना और पाना चाहते हैं उसका मानसिक चित्र मिलता हैं। दूसरी आदत इसी सिद्धांत पर आधारित हैं कि हर वस्तु का निर्माण दो बार होता है।

सिद्धांत यह है कि सभी चीज दो बनती हैं तो हम अपने प्रभाव के वृत्त के बाहर रहने वाले लोगों एवं परिस्थितियों का स्वयमेव यह शक्ति दे देते हैं कि वे हमारे अधिकांश जीवन को मनचाहा आकार दें। हम स्वयं की प्रथम रचना की जिम्मेदारी ले सकते है और अपनी खुद का जीवन विज़न या मिशन लिख सकते हैं।

मिशन स्टेटमेंट आपकी जीवन के उद्देश्य और मतलब के बारे में आपकी समझ को व्यक्त करता है। ये किसी लेख, कविता, पंक्तियाँ, चित्र या गीत के रूप में भी हो सकता है। यह संचालक संविधान की तरह काम करता है। जिसके द्वारा आप अपने निर्णयों को तौलते है और व्यवहार चुनते हैं। जैसे – आप किसी एक ऐसी व्यक्ति के बारे में सोचें जिन्होंने आप के जीवन में सकारात्मक प्रभाव डाला है। उनमें कौन–कौन से गुण है जो आप अपने में विकसित करना चाहेंगे।

आज से बीस साल से आगे की सोचें आप कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों के बीच हैं वे कौन–कौन हैं आप उनके साथ क्या कर रहे हैं ऐसा सोचकर अपनी जीवन का मिशन स्टेटमेंट लिख डालिये।

आदत –3

पहली चीजें पहली रखें।

पहली आदत कहती है आप रचयिता हैं आप जिम्मेदार हैं। दूसरी आदत प्रथम या मानसिक रचना हैं तीसरी आदत हैं द्वितीय रचना या भौतिक रचना।

पहली और दूसरी आदतें तीसरी आदत के लिए पूरी तरह अनिवार्य हैं। आप प्रोएक्टिव स्वभाव को जाने और सिद्धांत केन्द्रित बने और तीसरी आदत को अपनाकर व्यक्तिगत प्रबंधन का अभ्यास करके हर दिन, हर पल प्राथमिकताओं को समझें और उन पर काम करें।

तीसरी आदत यानी प्राथमिकताओं को समझना और उन पर कार्य करना। आपको महत्वहीन गतिविधियों को पहचानने और दूर करने में मदद करती है। महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने से आपके मिशन में आप अपना समय दे सकते हैं। सप्ताहिक योजना आपको सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य पहचानने में प्राथमिकता देने में समय निर्धारण में और आपकी सर्वोच्च प्राथमिकताओं को पूरा करने में मदद करती है। खुद को साप्तिहिक आधार पर व्यवस्थित करने का संकल्प लें और इसे करने के लिए नियमित समय निश्चित करें।

पहली तीन आदतों से आपका आत्म विश्वास बढ़ेगा और आपकी व्यक्तिगत विजय होगी।

आदत – 4

जीत–जीत सोचें। सबकी जीत सोचना। मेरा भी हित आपका भी हित। जब आप सभी जीत के लिए सहयोग करते हैं। सार्वजनिक विजय की शुरूआत होती है। प्रभावकारी व स्थायी संबंधों के लिए सहयोग द्वारा परस्पर फायदा और सभी को सफलता देने वाला समाधान जरूरी है। जब कोई सुनता है, अपना हाथ बढ़ाता है, प्रोत्साहन के कुछ शब्द बोलता है या किसी का अकेलापन समझने की कोशिश करता है तब बहुत बड़ी बात की शुरूआत होती है।

अपनी मनःस्थिति का आंकलन करना हार–हार नकारात्मक हैं। जीत–हार में प्रतिस्पर्धा और घमंड है। हार–जीत कमजोरी है। यह सोच कहती है मेरी मजबूरी का फायदा उठाओ, सभी उठाते हैं। जीत–जीत में आप साहसी और दयालु दोनों एक साथ होते हैं। यह एक ऐसी दावत है जहाँ जितना खा सको खाओ।

आदत – 5

पहले समझे और फिर समझाये।

पाँचवी आदत का सिद्धांत है। पहले समस्या का निदान बाद में समाधान। पहले समझने का काम सुनने से होता है। अपनी बात रखने से पहले लोगों को समझने की कोशिश करने से लोगों में आप के प्रति विश्वास बढ़ता है।

परानुभूति पूर्वक सुनने का मतलब है। दूसरों की भावनाओं को समझना और अपने शब्दों में व्यक्त करना। अच्छे निर्णय करने की कुंजी समझना है। अगर कोई व्यक्ति पहले ही निर्णय ले लेता है तो वह कभी पूरी तरह नहीं समझ पायेगा।

जब आप दूसरी की बातों को गहराई से सुनना सीख लेंगे। तो आप अनुभूति में जबदस्त भिन्नताएँ देखेंगे। पहले समझने की कोशिश करें..... फिर समझे जाने की। दूसरों का अपनी बात कैसी समझाए जाए यह जानना पाँचवी आदत को दूसरा हिस्सा है।

समझने को कोशिश में परवाह की आवश्यकता होती है। समझे जाने की कोशिश में साहस की जरूरत होती है। जीत–जीत के लिए दोनों ही प्रचुर मात्रा में होना चाहिए। परस्पर निर्भर स्थितियों में हमारे लिए समझा जाना महत्वपूर्ण बन जाता है।

परानुभूति पूर्वक सुनते समय भावनाओं को दर्शाये। दूसरो के कथन की विषय वस्तु को अपने शब्दों में सही–सही दुबरा रखें और फिर परानुभूति पूर्वक वार्तालाप करें।

आदत – 6

सिनर्जी का प्रयोग करें।

सभी आदतों का अभ्यास हमें सिनर्जी की आदत के लिए तैयार करता है। जब सिनर्जी को सही तरीके से समझा जाए तो यह जीवन की सर्वोच्च गतिविधि हो जाती है। यह बाकी सभी आदतों का सच्चा परीक्षण और अभिव्यक्ति बन जाती है। सिनर्जी का परिणाम चामात्कारी होते हैं। हम नये विकल्पों की रचना करते है। बेहतर समाधान के निर्माण के लिए काम कर सकते है।

सिनर्जी भिन्नता को अहमियत देती है। सिनर्जी हासिल करने के आधार की पहली जरूरत हैं भिन्नत को अहमियत देना। अत्यंत प्रभावकारी लोग भिन्नता को सिर्फ बरदास्त नहीं करते बल्कि उससे उत्साहित होते और उसका उत्सव मनाते है। जिन लोगो के पास सिनर्जी का एटिट्यूड होता है वे कहते ये उत्तम रास्ता है।

आदत – 7

आरी की धार तेज करें।

लगातार सीखें, लगातार सुधार व उन्नित करें। जिस सिद्धांत पर आधारित है कि शरीर, दिमाग, दिल व आत्म के पोषण के लिए समय देने से आप हर क्षेत्र में और प्रभावकारी होते हैं। इस प्रकार आप अपने सबसे महत्वपूर्ण का संसाधन का ख्याल रखते हैं वह आप खुद।

आपकी आरी आपका शरीर, दिल, दिमाग और आत्मा है। आप अपना शारीरिक स्वास्थ्य – संतुलित भोजन , व्यायाम , विश्राम और तनाव प्रबंधन के जरिए हासिल करते हैं। दूसरों के भावनात्मक बैंक एकाउंट में लगातार जमा करने से आप सामाजिक और भावनात्मक रूप से बलवान होते हैं। पढ़ने लिखने सोचने और विचार विमर्श से आपकी मानसिक क्षमता बढ़ती है। प्रेरणात्मक साहित्य पढ़ने से ध्यान लगाने से, सेवा करने से और प्रकृति के साथ समय बिताने से आपका आत्मिक विकास होता है। इस प्रकार चारों आयामों में आप नवीनीकरण करने से दैनिक जीवन की चुनौतियों का सामना कर पाते हैं। नवीनीकरण कोई मजबूरी बल्कि एक ऐसा उपहार जिसे आप खुद को देते हैं। यदि आप को एक अच्छा जीवन जीना है तथा कामकाजी जीवन और व्यक्तिगत जीवन में संतुलन हासिल करना है तो आपको अपनी सर्वोच्च प्राथमिकताओं पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए और अपने प्लान के अनुसार कार्य करना चाहिए और चारों क्षेत्रों में लगातार सुधार व उन्नित करने के तरीके ढूढें।

प्रगति करते रहने के लिए हमें सीखना, संकल्प लेना और करना होगा– और दुबारा सीखना, संकल्प लेना तथा करना होगा।

जीवन विद्या

शिक्षा का उद्देश्य–मानव उत्सवपूर्वक जी सके।

उत्सवपूर्वक जीने का अर्थ–

- हर आदमी स्वस्थ।
- हर आदमी समृद्धि पूर्वक जीना।
- प्रत्येक संबंधों में तृप्ति।
- शिक्षा ऐसी हो कि व्यवस्था में भागीदारी निभाने हेतु क्षमतावान हो सके।
- मानव को मानव के रूप में पहचानकर समस्त मानव को उत्सवपूर्वक जीने के लिए वातावरण तैयार करना शिक्षण का मूल उद्देश्य है।
- शिक्षा मानव और प्रकृति के साथ तालमेल पूर्वक जीने की योग्यता उत्पन्न करती है। आज की शिक्षा कहीं मानव समाज को लाभोन्माद, कामोन्माद और भोगोन्माद की ओर प्रेरित करती है। इन तीनों उन्मार को समाज से समूल नष्ट करने के लिए मानवीय शिक्षा को साकार करने की न सिर्फ आवश्यकता है बल्कि अनिवार्यता है।
- आज की शिक्षा ने शिक्षित समाज तो रचा है। पर समझदारी शिक्षा और समझदारी के समन्वित स्वरूप का नाम है। शिक्षा का सही स्वरूप कैसा हो? जिससे नए समाज की स्थापना की जा सके। मान्यताओं और व्यवधानों में क्या–क्या कमियाँ हैं? उसे कैसे दूर करेंगे? इसका विकल्प जीवन विद्या प्रदान करती है।

पृथ्वी में चार अवस्थाएँ हैं –

1. पदार्थ अवस्था 2. प्राण अवस्था 3. जीव अवस्था 4. ज्ञान अवस्था

इसे इम इस प्रकार देखते हैं–

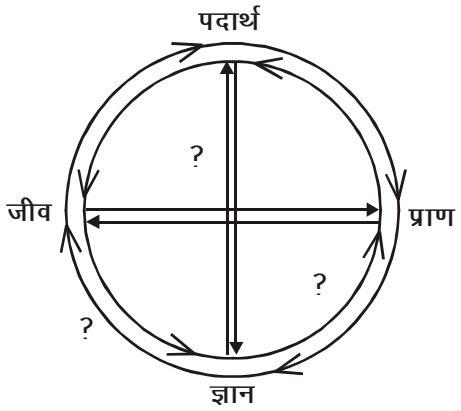

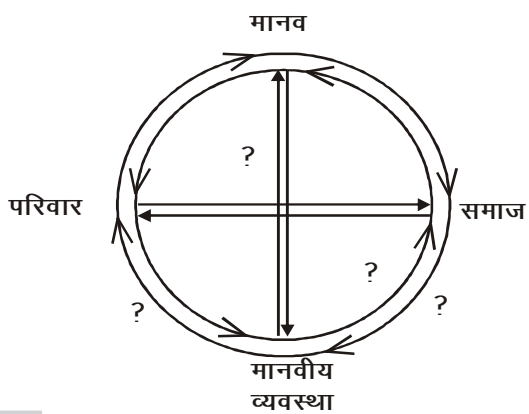

इस चित्र के माध्यम से हम यह समझते है कि

- **प्रकृति की तीन अवस्थाएँ हैं–** 1. पदार्थ अवस्था 2. प्राणावस्था 3. जीवास्था एक दूसरे के पूरक हैं।
- इनके आचरण निश्चित है।
- प्रकृति की चौथी अवस्था जो मानव है, वह अपने अनिश्चित आचरण के कारण अन्य अवस्थाओं के साथ संतुलन नहीं बैठा पाया।
- ध्यान देने योग्य बात यह है कि व्यक्ति जितना अधिक शिक्षित हुआ, प्रकृति का असंतुलन उतना ही अधिक बढ़ा है। Global Warning आज की सबसे बड़ी समस्या है। केवल प्रकृति ही नहीं वरन् परिवार और समाज में भी असंतुलन ही दिखाई देता है।

इसका यह अर्थ होना है कि शिक्षा ने हमको विषयों की जानकारी दे दी है। लेकिन उन विषयों को व्यवहारिक जीवन में कैसे प्रयोग करना है? यह भाग छूटा गया है। नहीं तो, Global Warning और गृह कलह जैसी समस्याएँ होती ही नहीं। और यदि इन समस्याओं पर आज ध्यान नहीं दिया गया तो अगले 50 वर्षों में पृथ्वी को नष्ट होने से कोई नहीं बचा सकता।

इन सब समस्याओं को ध्यान में रखते हुए मूल्य शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। मूल्य शिक्षा के ''जीवन विद्या'' बेहतर विकल्प के रूप में हमारे सामने है। जीवन विद्या मुख्यतः मानवीय संचेतनावादी मूल्य शिक्षा है। अर्थात् यह शिक्षा मानव को केन्द्र में रखकर दी जाएगी। साथ ही मानव–मानव के मध्य संबंध, मानव और प्रकृति के मध्य संबंधों पर ज़ोर देती है। यह भी बताता है कि प्रत्येक मानव गलती करने का अधिकार और उसे सही करने के अवसर लेकर जन्म लेता है।

अब हमें शिक्षा के Contant (विषयवस्तु) के विषय में सोचने की ज़रूरत है, जो–

1. हमें उत्सवपूर्वक जीने में मदद कर सके। अर्थात्
   - हम सभी मानव स्वस्थ रहें।
   - सभी मानव समृद्धि से जिएँ
   - मानव–मानव के मध्य संबंधों में तृप्ति हो
2. हमारी उपयोगिता सिद्ध करने में मदद कर सके।
3. हमें मानव को प्रकृति से प्राप्त वरदानों के (असीमित क्ष, अ. सं, कल्प. कर्म) सही उपयोग करने के लिए दिशा दे सके।

''जीवन विद्या में इन सभी आयामों पर गहराई से चिंतन एवं अध्ययन किया गया है। एक जिम्मेदार शिक्षक होने के नाते हमारी उपयोगिता यह है कि हम इसे बच्चों एवं समाज तक ले जाएँ।

•••

हमारी विकास यात्रा

छत्तीसगढ़ राज्य में हमनें 2007–08 में ECCE (शिशु शिक्षा एवं देखभाल) की नीति का निर्माण राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की ओर से राज्य स्रोत समूह का गठन किया गया। जिसमें शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग तथा यूनीसेफ के स्त्रोत सदस्य शामिल किए। शिक्षा सचिव के मार्गदर्शन में एस.आर.जी. ग्रुप के द्वारा 2008 में पाठ्यक्रम का निर्माण किया। जिसमें अन्य राज्य के विशेषज्ञों का मार्गदर्शन भी लिया गया।

शिशु शिक्षा एवं देखभाल राज्य स्रोत केन्द्र, सृजन आंनद विकसित किया गया।

पाठ्यक्रम के क्रियान्वयन हेतु पाँच थीम बेस्ड अधिगम सामग्री का निर्माण कर फील्ड टेस्ट किया। क्षेत्र परीक्षण कांकेर, कोरबा, दुर्ग जिले में किया गया। क्षेत्र परीक्षण के अनुभव के आधार पर सामग्री में संशोधन कर 50 थीम बेस्ड अधिगम सामग्री का निर्माण किया।

आँगनबाड़ी केन्द्रों में लागू करने से पहले पॉयलेटिंग करने का निर्णय लिया। पॉयलेटिंग हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के पाँच जिलों रायपुर (10), कोरबा (5), कोरिया (5), कांकेर (5), दुर्ग (5) का चयन किया गया। कुल 30 आँगनबाड़ी केन्द्रों में पॉयलेटिंग की गई।

इनकी कार्यकर्ताओं को एस.आर.जी. के साथ सात दिवसीय प्रशिक्षण ग्राम–ओटेबंद, जिला– दुर्ग में दिया। जिसमें वर्ल्ड विज़न दुर्ग का सराहनीय सहयोग मिला। प्रशिक्षण की विशेषता रही कि प्रतिदिन आँगनबाड़ी केन्द्र में जाकर शिशुओं के साथ कार्डों की गतिविधि करायी गयी। चयनित आँगनबाड़ी केन्द्रों को 8–10 थीम के कार्ड तथा अंक कार्ड वितरित किये गये। इस बीच एस.आर.जी. के सदस्यों द्वारा आँगनबाड़ी केन्द्रों की मॉनीटरिंग की गई।

दो माह बाद समीक्षा एवं फीड बैक हेतु पॉयलेटिंग केन्द्रों की आँगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं पर्यवेक्षकों की दो दिवसीय बैठक की गई। उनका अनुभव इस तरह से रहा–

कांकेर

पॉयलेटिंग के प्रशिक्षण के बाद शिशुओं में शिशुओं की ललक बढ़ी है। पहले भी हम पढ़ाते थे लेकिन यहाँ हमें विषय, कहानी, आकार, बालगीत ही बताते थे। अभी हमको 8 थीम मिली हैं। पाँच विषयों से शिशु सीखेंगे तो कितने अच्छे से सीखेंगे। शिशुओं को गाँव से बाहर ले जाने से माता–पिता को अनुभव हो रहा है कि हम शिशुओं को बता नहीं पा रहे है। पाँचों विकास में प्रतिदिन कार्य हो रहा है। शिशुओं को नया–नया सीखने मिल रहा है। हर थीम में नया–नया है। मैं तो इस ग्रुप को बहुत धन्यवाद दूँगी।

दुर्ग

हम लोग एक दिन लेट प्रशिक्षण लिये। हम लोग प्रशिक्षण जितने भी लिये हैं। उनसे यह अलग है। पाँच विकास से सिखाना है बताया गया है। इस थीम में क्रमबद्धता है। व्यक्तिगत सामाजिक विकास पूछना फिर मनोरंजन, उछल–कूद हेतु शारीरिक विकास हो रहा है। भाषा विकास में छोटे कार्ड के माध्यम से शिशु शब्द अक्षर बहुत जल्दी पहचान रहे हैं। सृजानात्मक में शिशु नये चीजें बना रहे हैं।

हम लोगों की क्षमता बढ़ी हैं। दर्ज संख्या में वृद्धि है। मेरे से पहले आँगनबाड़ी में शिशु आने लगे हैं। उनका उत्सह बढ़ गया है। पालक भी समझ गये हैं। अलग–अलग विषय पढ़ा रहे हैं। कुछ पालक प्राइवेट स्कूल में अपने बच्चे को ले गये थे वापस लाये हैं।

रायपुर

शिशु रंगीन चित्र से आकर्षित हुए हैं। उत्साह के साथ देखते हैं। कार्ड को देखते हैं। स्वयं बताते भी हैं। पहले हम खुद नहीं जानते थे कि हमने पाँचों विकास सिखाया है या नहीं कार्ड मिलने से दिशा मिल गई है। कार्ड की जितनी तारीफ की जाए कम है। शिशु जो पढ़ते नहीं थे वे भी पूछते हैं यह क्या है।

कोरिया

अपने केन्द्र में बैठक की माता–पिता को दिखाए जो शिशु नहीं आ रहे थे वे भी आने लगे। हम यहाँ से सीख के गये हैं और बच्चों को भी सीखा रहे हैं।

चयनित आँगनबाड़ी केन्द्र की कार्यकर्ताओं ने थीम बेस्ड सामग्री की अच्छाई एवं कमियाँ भी बतायीं जो निम्न हैं–

अच्छाई :

- 50 विषय के बारे में जानकारी दे सकते हैं।
- कार्यकर्ता भी सीखती हैं।
- फूल में बच्चे तरोई, कद्दू का फूल भी बताते हैं।
- गाँव के अनपढ़ माता–पिता, समुदाय को भी बता सकते हैं।
- शिक्षक भी मानने लगे हैं। प्रेक्टिल ज्ञान होगा।
- कार्ड से बच्चे बहुत सीख रहे हैं।
- बच्चे कार्ड के रंग भी स्वयं बताते हैं।
- बच्चों की स्वयं उपलब्धि बढ़ी हैं।

कमियाँ:

- कार्डों में चित्रों की स्पष्टता कम रही।
- कुछ चित्र ग्रामीण परिवेश के अनुरूप नहीं थे।
- दूर–पास कार्ड में आधार नहीं दिया गया।

00––00

थीम – 1

1

अम्मा की गोदी तो भैय्या,
हर गोदी से न्यारी है।
अम्मा की गोदी से बढ़कर,
कोई जगह न प्यारी है।
वहाँ न मुझको लगता डर
वह तो है मेरा बिस्तर।।

2

माताजी के भाई को मामाजी हम कहते हैं,
मामाजी जब आते हैं, खूब मिठाई लाते हैं।
पापाजी के भाई को चाचाजी हम कहते हैं,
चाचाजी जब आते हैं, बैट–बॉल ले आते हैं।
पापाजी की बहन को बुआजी हम कहते हैं,
बुआजी जब आती हैं, टॉफी खूब खिलाती हैं।
माताजी की बहन को मौसीजी हम कहते हैं,
मौसीजी जब आती हैं, गुड्डा–गुड्डी लाती हैं।।

थीम – 2

1

छोटा–सा यह प्यारा घर।
छोटा–सा यह न्यारा घर।
रहते इसमें मिलकर सारे।
जैसे आसमान में तारे।

2

कुएँ में पानी, मम्मी मेरी रानी।
पापा मेरे राजा, फल खाएँ ताजा।।
सोने की खिड़की, चाँदी का दरवाजा।
उसमें से निकला, मेरा भइया राजा।।

3

एक चिड़िया के बच्चे चार,
उड़ते थे वे पंख पसार।
एक गया पूरब की ओर,
एक गया पश्चिम की ओर।
एक गया उत्तर की ओर,
एक गया दक्षिण की ओर।
घूम लिया हमने जग सारा,
अपना घर है सबसे प्यारा।।

थीम –3

1

सबसे प्यारा मेरा गाँव,
सबसे न्यारा मेरा गाँव।
दादी, नानी कहें कहानी,
सुनते गुड्डे गुड़िया रानी।।

2

आओ गाँव जायें हम,
नदी की सैर करें हम।
सीपी–मछली लाएँ हम,
आँगनबाड़ी सजायें हम।।

3

लौटे किसान गाँव में,
घर–घर चूल्हे जागे।
पंछी लौटे अपने घर में,
बच्चे आगे–आगे।।

थीम – 4

एक आँगनबाड़ी हमारी,
है बड़ी प्यारी–प्यारी।
जहाँ खेलते हैं हम खेल,
छुक, छुक, छुक चलती है रेल।
रानी है जब रोती,
तीन खिलौने देती।
आँगनबाड़ी दूर है,
जाना जरूर है।

मम्मी को टाटा,
पापा को बॉय–बॉय।।

थीम – 5

1

रिंकी पिंकी गईं बाज़ार,
लाई वहाँ से ढेर अनार।
छम्मक–छक्का दावत हुई,
ज़्यादा खाकर आफत हुई।।

2

हाथी दादा ओढ़ लबादा, पहुँच गए बाज़ार।
जूते की दुकान देखकर, जूते मांगे चार।।
कालू जूतेवाला बोला, बड़ा तुम्हारा माप।
इतने बड़े जूते न बनते, दादा कर दो माफ।।

थीम – 6

1

बड़े मजे की बात है, बच्चों
बड़े मजे की बात है।
दो छोटी आँखे हमारी
दिनभर देखा करती हैं
सिर्फ रात को सोती,
दिनभर काम करती हैं।
बड़े मजे की बात है।
छोटी–सी यह जीभ हमारी
बढ़िया–बढ़िया खाती है
लड्डू पेड़ा दूध मलाई
झट से चट कर जाती है
बड़े मजे की बात है।
छोटी सी यह नाक हमारी
सूंघ–सूंघ सुख पाती है,
सोने पर भी सांसे भरती
कभी नहीं थक पाती है
बड़े मजे की बात है।
दो छोटे कान हमारे
दिनभर बातें सुनते हैं
जब दादाजी इन्हें खींचते
लाल गरम हो जाते हैं
बड़े मजे की बात है
दो छोटे पैर हमारे
चलते, कूदा करते हैं
लुका–छिपी का खेल हुआ तो
खूब चौकड़ी भरते हैं
बड़े मजे की बात है।
दो छोटे हाथ हमारे
ताली खूब बजाते हैं
करते हैं प्रणाम इसी से
अब हम घर को जाते हैं।

2

बिल्ली खुशी से गाती है,
जब वो मुँह को धोती है।
जो कोई मुँह को धोता है,
अच्छा बच्चा होता है।
बिल्ली खुशी से गाती है,
जब वो ब्रश को करती है।
जो कोई ब्रश को करता है,
अच्छा बच्चा होता है।
मैं एक छोटी कठपुतली
रोना मुझको आता नहीं
खाना खाऊँ बड़े मजे से
रोटी पकाना आता नहीं
मैं एक छोटी कठपुतली
दूध शर्बत पीऊँ मजे से
शर्बत बनाना आता नहीं
मैं एक छोटी कठपुतली

थीम – 7

बंदर मामा चले नहाने,
सुस्ती अपनी दूर भगाने।
मुँह में दातुन दबाकर,
साबुन कंघी कपड़े लेकर।
बंदर मामा चले नहाने,
सुस्ती अपनी दूर भगाने।।

2

पानी कहता मुझे ढँक दो,
भोजन कहता मुझे ढँक दो।
मक्खी देख मैं रोता हूँ,
पेट दर्द से सोता हूँ।
थाली को पंखा झल दो,
पानी को ढक्कन ढँक दो।
फल को कपड़ा ढँक दो,
मिठाई को जाली ढँक दो।
मक्खी देख मैं रोता हूँ
पेट दर्द से सोता हूँ।

थीम – 8

1

देखो घड़ी समय बताती,
बिना किए आराम।
फूलों पर तितली मंडराती,
रोज़ सुबह और शाम।
ऐसे ही बनो तुम सब,
जीवन में आएगा काम।।

2

सुबह सवेरे सैर को जाओ
मंजन करो और नहाओ
पूजा करके फिर कुछ खाओ
हँसते–हँसते पढ़ने जाओ।।

थीम – 9

1

अटकन – बटकन दही चटाका,
लउहा – लाटा बनके काटा।
चुहूर – चुहूर पानी आवे,
चल–चल बेटी गंगा जाबो।
गंगा ले गोदावरी,
पाका–पाका बेल खाबो।
बेल के डारा टूट गे।

2

गोबर दे बछरू, गोबर दे,
चारों खूँट ला, लीपन दे,
चारों देवरानी ला, बइठन दे।
अपन खाथे गुदा गुदा, हमला देथे बीजा,
ये बीजा के का करहूँ, रही जाहूँ तीजा,
तीजा के बिहान दिन, सरी सरी लुगरा।
हेर दे भौजी, कपाट के खीला,
केंव केंव करे, मंजूर के पीला,
एक गोड़ म लाल भाजी, एक गोड़ खजूर।
कतेक ल मानवँ, मैं देवर ससुर।
आले आले डलिया, पाके बुन्देलिया।
राजा घर के पुतरी, खेलन दे फुगड़ी।
फुगड़ी रे फू फू, फुगड़ी रे फू।

थीम – 10

1

सच कहती हैं मेरी नानी,
उठो सवेरे, पियो पानी।
सुबह उठकर जो पानी पीता,
खुश होकर वो हरदम जीता।।

2
हुआ सवेरा निकला सूरज,
शाम को घर जाएगा।
जग–मग, जग–मग चंदा मामा,
तारों के संग आएगा।

3
बना दूध से तन मेरा,
गैया मेरी दादी।
मेरी सूरत ऐसी लगती,
जैसे उजली खादी।
चंदा जैसा गोल–गोल हूँ,
सूरज सा चमकीला।
अपना नाम बताऊँ तो,
तुम मत करना हल्ला।
लार सम्भालों अपनी,
मैं हूँ प्यारा रसगुल्ला।

4
घड़ी बोलती टिक–टिक,
समय गवाओं नहीं अधिक।
झट–पट अपना काम करो,
खेलो कूदो मौज करो।
चिड़िया बोली चीं–चीं–चीं,
सुबह हो गई जागो जी।
दिये पाठ को याद करो।
सब जीवों से प्यार करो।।

5.
जगमग–जगमग चमके तारे,
आसमान में दमकें तारे।
नन्हें–नन्हें प्यारे–प्यारे,
चंदा के हैं राजदुलारे।
कितने सारे चमके तारे,
टिम–टिम करते हैं सारे।
कभी नहीं ये हिम्मत हारे,
अंधियारे में चमके तारे।
आँख मिचौली खेलें तारे,
सबको पास बुलाते तारे।

थीम – 11

1
आओ करे जंगल की सैर, घूम घाम देखें सबको।
कहीं दिखेगा बब्बर शेर, देखेगा जो आँख तरेर।
भालू नाच दिखायेगा, बंदर मुँह बिचकायेगा।
बगुला ढोंग रचा रहा, हिरण घास को चर रहा।
खरगोश दौड़ लगा रहा, मछली जल में तैर रही।
आओ करें जंगल की सैर।।

2
बंदर चला जब ब्याह रचाने,
भालू आया ढोल बजाने।
हिरण झूमकर नाच दिखाया,
घोड़ा अपना गीत सुनाया।

3
भालू बाबा ढोल बजाए,
खरगोश जी जब दौड़ लगाए।
लोमड़ी मौसी ताल मिलाए,
बंदर ठुमके नाच दिखाये।।

4
घोड़ा नाचे हाथी नाचे,
नाचे सोन चिरईया।
किलक किलक कर बंदर नाचे,
ताता ताता थैया।
ठुमक ठुमक कर भालू नाचे,

ऊँट, मेमना गैया।
आ पहुँचे जब शेर नाचने,
मच गई हाय रे दैया।।

5

सुनो–सुनो एक बात सुनो,
जंगल की है बात सुनो।
एक शेर जंगल की राजा,
उसके साथ था भालू राजा।
हाथी भी है, साथी सबका,
बंदर भी है मामा उसका।
हिरण चीता और खरगोश,
भागे सब जंगल की ओर।।

थीम – 12

हम तो गये बाजार,
लेने को आलू।
आलू–वालू कुछ ना मिला,
पीछे पड़ा भालू।
हम तो गये बाजार,
लेने को ककड़ी।
ककड़ी–वकड़ी कुछ ना मिली,
पीछे पड़ी मकड़ी।

थीम – 13

1

मुखर मेढकी चतुर बड़ी,
शहर घूमने निकल पड़ी।
केले पर जो पाँव पड़ा,
बीच सड़क में फिसल पड़ी।।

2

चूहे की ये देखो मूँछ,
पूँछ से लगती लंबी मूँछ।
मूँछ कुतर दी चूहिया ने,
पकड़ी पूँछ बिलैया ने।।

3

मछली रानी, मछली रानी,
बोल नदी में कितना पानी।
जल में रहकर क्या खाती हो,
या भूखी ही रह जाती हो।।

4

एक अजूबा देंखे आप,
बीन की धुन पर नाचे साँप।
जल में रहता, थल में रहता,
पेड़ों पर भी रहता साँप।।
जहर बहुत होता है इसमें,
कभी न छेड़ें इसको आप।।

थीम – 14

1

भुन–भुन करता भौंरा आया,
सबको अपना गीत सुनाया।
झींगुर, चींटी ताल मिलाये,
तितली, टिड्डा नाच दिखाये।
मच्छर ने एक धुन सुनाया,
सबने मिलकर नाच दिखाया।

2

चीनी दानी में चींटा–चींटी,
करते बातें मीठी–मीठी।
चींटा बोला, चींटी रानी,
चलो सुनाओ आज कहानी।

थीम – 15

1

नन्हीं चिड़िया आई है,
गर्मी से घबराई है।
उसे डाल पर बैठाओ,
पत्ती से फिर सहलाओ।
क्या आ जाऊँ पास तुम्हारे।।

2

मुर्गा बोला कूकडूँ कूं, चिड़िया बोली चूँ चूँ चूँ,
कोयल बोली कुहू कुहू, कहे कबूतर गुटर गू।
काँव काँव कौआ बोला, तोता बोला टें टें टें,
क्वेंक–क्वेंक कर बतख बोली, पिल्ला
भागा कें कें कें।।

3

मैना बोली तोते से, सैर शहर की करना है,
तोता बोलना मैना से, शहर से जंगल अच्छा है
जंगल में हरियाली, साफ हवा मतवाली है,
शहर जाने से अच्छा, हमारा घर अच्छा है।।

थीम – 16

1

ऊपर पंखा चलता है, नीचे बेबी सोती है,
सोते सोते भूख लगी, खा ले बेटी मूंगफली,
मूंगफली में दाना नहीं, हम तुम्हारे मामा नहीं,
मामा गये दिल्ली, दिल्ली से लाये बिल्ली,
बिल्ली ने मारा पंजा, मामा हो गये गंजा।

2

अच्छा लगता है गुड़िया को,
ट्रिन–ट्रिन बजता टेलीफोन,
जब बजता है इसे उठाकर,
पूछती है हैलो कौन।

थीम – 17

1

रानी के घर आया रेडियो,
दिनभर बोलता रहता रेडियो।
नये गाने सुनाता रेडियो,
नई कहानी सुनाता रेडियो।

2

चूहे ने खोली एक दुकान,
घर्र–घर्र करता रेडियो वहाँ।
ट्रिन–ट्रिन करता फोन जहाँ,
ओले–ओले टी.वी. करता,
धम–धम करता टेप।
बिजली बोली आओ,
हम सब मौज मनायें।
अपनी दोस्ती को बढ़ायें।

थीम – 18

मम्मी पापा गए बाज़ार,
वहाँ खरीदा एक हार।
दो चूड़ियाँ, तीन अंगूठी,
लगती हैं सभी अनूठी।।
चार थाली, पाँच कटोरी,
सब हैं प्यारी–प्यारी।।
पाँच धातुओं से मिलकर,
बनती हैं मूर्ति न्यारी–न्यारी।।

थीम – 19

1

इंजन दादा, इंजन दादा छुक छुक छुक चला,
पटरी नहीं बिछाई रे, जोड़ कैसे नहीं डाला,
कैसे मैं चलूँ रे, कैसे मैं चलूँ।
इंजन दादा, ...
कोयला नहीं डाला रे, पानी नहीं डाला,
कैसे मैं चलूँ रे, कैसे मैं चलूँ।
इंजन दादा, ...
लोग नहीं बैठे, सिग्नल नहीं हुआ
लोग मैं चलूँ रे, कैसे मैं चलूँ रे।

2

हमार बाबा, मोटर गाड़ी चलावे,
औरों के गाड़ी में पों–पों बजत है,
हमार बाबा, फूटा टीना बजावे,
औरों के गाड़ी में गद्दा बिछत है,
हमार बाबा फटी कथरी बिछावे,
हमरा बाबा मोटर गाड़ी चलावे।

3

सड़क बनी है लम्बी चौड़ी,
उस पर जाती मोटर गाड़ी।
सब बच्चे किनारे से जाना,
बीच सड़क में कभी न आना।
जाओगे तो दब जाओगे,
चोट लगेगी पछताओगे।।

4

मम्मी मुझे छोटी सी मोटर मंगा दो
मोटर चलाऊँगा पम पम बजाऊँगा।
मम्मी मुझे छोटी सी ट्रेन मंगा दो
ट्रेन चलाऊँगा सीटी बजाऊँगा।
मम्मी मुझे छोटी सी बस मंगा दो।
बस चलाऊँगा पों–पों बजाऊँगा।

थीम – 20

1

दादा जी जरा धीरे चलो।
थोड़ा दाँया देखो।
थोडा बाँया देखा।
तब जेबरा क्रॉसिंग पर चलो।

2

सुनिए मच्छर रामजी,
बुरे तुम्हारे काम जी।
मच्छरदानी लगायेंगे,
तुमको हम भगायेंगे।

3

लाल बत्ती कहती रुको–रुको,
पीली बत्ती कहती देखकर चलो।
हरी बत्ती कहती, चलो–चलो,
हमेशा नियमों का पालन करो।

थीम – 21

एक बड़े राजा की बेटी,
दो दिन से बीमार पड़ी।
तीन संतरी दौड़े आए,
चार दवा की पुड़िया लाए।
पाँच मिनट में गरम कराई,
छः–छः घंटे बाद पिलाई।
सात मिनट में आँखें खोली,
आठवें दिन राजा से बोली।
नवें दिन कुछ हिम्मत आई,
दसवें दिन वह दौड़ लगाई।

थीम – 22

मुनमुन नाम की एक लड़की हैं।
रोज सबेरे उठकर ब्रश करती हैं।
रोज सबेरे नहाकर अच्छे कपड़े पहनती है।
कंघी करती है, मोजा पहनती है।
मुनमुन रोज आंगनबाड़ी जाती है।
खेलने, पढ़ने और सीखने जाती है।
मुनमुन रोज अपने खिलौने से खेलती है,
और दूसरे बच्चों को भी देती है।

थीम – 23

शुरू हुआ भाई शुरू हुआ।
देखो सर्कस शुरू हुआ।
बैठ साइकिल पर चाचा की,
सोनू चला देखने सर्कस।
रानी भी संग में चली,

मोहन मामा चले झटपट।
टोपी पहनी थी हाथी ने,
भालू साइकिल चला रहा।
शेर भी कैसी पलटी मारे,
बंदर करतब दिखा रहा।
जोकर पहने वस्त्र रंगीले,
काले पीले हरे और नीले।
खेल दिखाकर हंसा रहा,
खुशियाँ सबको दिला रहा।

थीम – 24

1
हम छोटे धोबी हैं,
हम छोटे कपड़े धोते हैं।
हम छोटे हलवाई हैं,
बढ़िया मिठाई बनाते हैं।
हम छोटे माली हैं,
अच्छी माला बनाते हैं।
हम छोटे कुम्हार हैं,
अच्छे बर्तन बनाते हैं।
हम छोटे डॉक्टर हैं,
छोटी सुई लगाते हैं।
2
बने डॉक्टर छोटे भैया,
फीस माँगते दस रुपैया।
जब ईलाज को पहुँची गुड़िया,
उसे थमा दी मीठी पुड़िया।

थीम – 25

1
सवेरे–सवेरे, यारों से मिलने
बन–ठन के निकले हम, स्कूल चलें हम
रोके से न रूकें, मर्जी से चलें हम
बादल–सा गरजे हम, सावन–सा बरसे हम
सूरज–सा चमके हम, स्कूल चलें हम
स्कूल चलें हम।
2
अटकन–बटकन दही चटाकन
बेरा होगे नहा के आथन
नहा के बासी खाबोन
बासी खाके जाबोन
जाबो स्कूल झपकन
स्कूल में जाके पढ़थन लिखथन
छुट्टी होगे मजा उड़ाथन।

थीम – 26

1
अच्छा सा एक बीज लगा दो
पेड़ वही बन जायेगा
छोटा सा दीप जला दो
अंधकार मिट जायेगा।
2
हूँ मैं छोटा सा माली
पौधा लगा के खाद डाली
क्यारी मेरी प्यारी–प्यारी
सब्जी बोई न्यारी–न्यारी

गीत

आओ भैया पेड़ लगायें
धरती में हरियाली लायें
हरी–भरी धरती हो जाती
सुन्दर लगती, सबको भाती
बादल का भी मन ललचाती
सबको अपनी ओर लुभाती
आओ भैया पेड़ लगायें।

अभिनय गीत

मैं भी बगीचा लगाऊँगा
हरे–भरे सब पौधे होंगे
रोज पौधों में पानी दूंगा
रंग बिरंगे फूल खिलेंगे
उन पर मीठे फल लगेंगे
खूब मजे से खाऊँगा
मैं भी बगीचा लगाऊँगा।

थीम – 27

1.
बड़ा–बड़ा है नीम का पेड़,
मुड़ी–मुड़ी कद्दू की बेल।
बड़ी कटीली बेर की झाड़ी,
धान का पौधा, सुंदर बाली।।

2.
बड़ की जड़ में झूला झूलें,
चले गाजर को हम खा लें।
फूलों का गुलदस्ता बनाया,
गमलों से है घर सजाया।।

3.
बूढ़ा दादा बरगद देखो,
आम, नीम, जामुन को देखो।
छोटे–छोटे पौधे प्यारे,
हरियाली बिखराते सारे।।

थीम – 28

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौरों से नित गाना।
पौधे की झुकी डालियों से नित,
सीखो शीश झुकाना।।

थीम – 29

1
जामुन देखो काली काली,
लगी हुई है डाली डाली।
डाल पकड़कर इसे हिलायें,
जामुन गिरती टप टप टप।
बीनो भाई झटपट झटपट,
चलो चलें अब नदी किनारे।
धो धोकर अब खायें प्यारे।।

2
फल खाओ भई फल खाओ,
बीमारी को दूर भगाओ।
फल होते हैं न्यारे–न्यारे,
इनको खाते हम सब प्यारे।

3
मैं और भैया गये बाजार,
वहाँ से लाये एक अनार।
दोनों मिलकर खायेंगे,
और सुंदर बन जायेंगे।

4
पका तरबूज लाल–लाल,
खाये भैया रामलाल।
हुये ताजा गोल–गोल,
जैसे रखा तबला–ढोल।

थीम – 30

1
दीदी आज पढ़ाओ ना,
कोई गीत सुनाओ।
लायी हूँ मैं लाल गुलाब,
जूड़े में सजाओ ना।

2
हरे रंग का तोता हूँ,
लाल मिर्च खाता हूँ।
मीठा गीत सुनाता हूँ,
टें टें टें करता हूँ।
3
गुब्बारे वाला आया है,
सुन्दर गुब्बारे लाया है।
लाल, हरे, नीले, पीले,
चाँद सितारे से चमकीले।
4
दौड़े लाल टमाटर सरपट,
हरे मटर भी आये झटपट।
गोभी सफेद लुढ़कती आयी,
हरी धनिया भी दौड़ लगायी।
5
काले बादल छाये घनघोर,
इसे देखकर नाचे मोर।
रंग बिरंगे पंख वाला,
नाच रहा है सुन्दर मोर।

थीम – 31

1 रसोई के अंदर, रखा एक सिलेण्डर।
बिल्ली मौसी आई, झटपट खीर पकाई।
चूहे राजा आए, दोनों मिलकर खाए।
2. आलू कचालू बेटा कहाँ गये थे,
सब्जी की टोकरी में सो रहे थे।
बैंगन ने धक्का दिया रो रहे थे,
नीबू ने प्यार किया हँस रहे थे।।

थीम – 32

गोबर दे बछरू गोबर दे,
चारों खूँट ला लीपन दे,
चारों देवरानी ला बइठन दे।
अपन खाथे गुदा गुदा, हमला देथे बीजा,ये
बीजा का करहूँ, रही जाहूँ तीजा,
तीजा के बिहान दिन, सरी सरी
लुगरा।
हेर दे भौजी, कपाट के खीला,
केंव केंव करे, मंजूर के पीला,
एक गोड़ म लाल भाजी, एक गोड़ खजूर।
कतेक ल मानवँ मैं देवर ससुर,।
आले आले डलिया, पाके बुन्देलियाँ।
राजा घर के पुतरी, खेलन दे फुगड़ी।
फुगड़ी रे फू फू, फुगड़ी रे फू।

थीम – 33

1
कोमल अंगुली जैसी देखो,
सुन्दर भिण्डी हरी हरी।
कद्दू लौकी को भी देखो,
कैसी ऊपर बेल चढ़ी।
गोभी का है सुन्दर फूल,
जाना नहीं टमाटर भूल।
परवल, टिण्डा, बैंगन, सेम,
पालक, मेथी से कर प्रेम।
हरी सब्जियाँ हैं गुणकारी,
लगती हैं सबको प्यारी।
2
आलू मटर का हुआ मुकदमा,
बैंगन ने दी गवाही – 2
गोभी बेचारी का तंबू तना था,
घुईयां ने खेमें बनायी – 2
तुरई बिचारी का लड़का बीमार था।
करेले ने दी दवाई – 2
मिर्ची और मूली का झगड़ा मचा था,

गाजर ने दे दी सफाई– 2
भिण्डी बेचारी अकेली खड़ी थी,
लौकी बनी उसकी मौसी – 2
सेम टमाटर सैर को निकले,
शलजम ने मोटर चलाई – 2
शलजम की मोटर बिगड़ गई तो,
कद्दू ने मोटर धकेली – 2

3

देखो सब्जी वाला आया,
भांति भांति की सब्जी लाया।
भिण्डी, अरबी, आलू ले लो,
गोभी टमाटर शलजम ले लो।
धनिये की चटनी पिसवाओ,
खूम मजे से खाना खाओ।

देखो देखो दीवाली आई,
मीना ने फुलझड़ी जलाई।
चुनमुन चकरी लेकर आई,
मुनमुन ने फिर उसे चलाई।।

थीम – 35

1

जंगल में जानवर खेलते हैं, खेलते हैं
हम भी खेलेंगे वैसे
हाथी सूँड़ हिलाता है, हम भी करेंगे वैसे
जंगल में जानवर खेलते हैं, खेलते हैं
बंदर ताली बजाता है, हम भी करेंगे वैसे
जंगल में जानवर खेलते हैं, खेलते हैं
खरगोश कान हिलाता है, हम भी करेंगे वैसे
जंगल में जानवर खेलते हैं, खेलते हैं
भालू नाच दिखाता है। हम भी नाचेंगे वैसे

2

आओ आपस में मिल बच्चों
चलो–चलें हम जंगल की ओर
कहीं दिखेगा बब्बर शेर
देखेगा जो आँख तरेर
हाथी, सूंड हिलाता होगा
भालू हाथ दिखाता होगा।
खरगोश दौड़ लगाता होगा
हिरण घास पर चरता होगा
जल में होगी मछली रानी
चलो चलें हम देखें पानी।।

थीम – 36

1

धार धार से बातें करती,
सबकी खाली गागर भरती।
पानी हमें पिलाती नदियाँ,
सबकी प्यास बुझाती नदियाँ।

2

कछुआ ने नदी के जल में,
खूब मिलाया शक्कर।
सब जीवों को न्यौता देकर,
पिलाया मीठा शरबत

3

नदी तालाब देखकर मछली,
दूर तैरते जाती मछली।
बगुला से डर जाती मछली,
बीच धार में रहती मछली

थीम – 37

1

भालू चढ़ा पहाड़ पे, पहाड़ पे, पहाड़ पे
भालू चढ़ा पहाड़ पे, पहाड़ पे, पहाड पे
आगे देखा पीछे देखा,

ऊपर देखा, नीचे देखा।
हरी हरी घास थी,
घास के सिवा कुछ न मिला।
भालू चड़ा पहाड़ पे, पहाड़ पे, पहाड़ पे।

2

रमेश का सपना
रमेश सुबह सुबह मैदान की
तरफ निकला। वह विमान पर
सवार हो गया, उसके साथ
उसकी बहन निशा भी थी। बैठते
ही विमान पहाड़ की ओर उड़ने
लगा। दोनों ने खिड़की से
झाँककर देखा। बहुत ऊँचा पर्वत
था। बड़े बड़े वृक्ष थे। बहुत से
जानवर दिखाई दे रहे थे। एक
स्थान पर पानी की मोटी धार
दिखाई दे रही थी। जहाज उड़ते
हुए ऊपर पहुँच गया। तभी
माँ ने जोर से आवाज दी रमेश
की नींद टूट गई।

थीम – 38

मोर है मेरा नाम रे, जंगल मेरा धाम रे,
बदली मुझको अच्छी लगती।
भला न लगता घाम रे,
मोर है मेरा नाम रे, जंगल मेरा धाम रे।
रंग बिरंगे पंख है मेरे, भले न मेरे पांव रे।।

थीम – 39

1

चंदा रे चंदा कहाँ गए थे,
नीम के पेड़ में छुप गये थे।
नीम का पेड़ हरा भरा,
धरती के नीचे खजाना भरा।

2

चाँद भाई रात आई,
तुम भी आए, तारे लाए।
चमक तुम्हारी चम चम,
तारे टिमके टिम–टिम।

3

बड़े सेवरे मुर्गा बोला,
चिड़ियों ने अपना मुँह खोला।
आसमान पर लगा चमकने,
लाल–लाल सोने का गोला,
ठंड़ी हवा बही सुखदायी,
सब बोले दिन निकला भाई।

4

आसमान में सूरज एक,
घर में मेरे पापा एक।
आसमान में चंदा एक,
जैसी मेरी मम्मी एक।।

5

चंदा मामा दूर के,
पुए पकाए गुड़ के।
आप खाए थाली में,
मुन्ने को दे प्याली में।
प्याली गई टूट,
मुन्ना गया रुठ।
बजा–बजा के तालियाँ,
मुन्ने को मनायेंगे।
दूध मलाई खिलायेंगे,

6

चंदा मामा टा टा, तारा मामा आ आ,
बड़े बुरे हैं चंदा मामा, कभी न आते खाने खाना,
मामी आती कभी, कभी कहानी कहती

थीम – 40

1

नीली, पीली, लाल पतंग,
उड़ी चली हवा के संग।
लम्बी हो इसकी डोर,
चले आसमान की ओर।।

2

चली है हवा सर सर,
कपड़ा सूखे फर फर।
फल गिरे पट पट,
खिड़की बजे खट खट।।

3

आगे जाता, पीछे जाता,
झूला मेरा हवा में उड़ता।
साँय साँय हवा चलती,
हमको यह मस्तानी लगती।
आगे जाता, पीछे मुड़ता,
झूला मेरा हवा में उड़ता।

4

हवा में पेड़ झूमते हैं झूमते हैं।
हम भी झूमेंगे ऐसे।।
हवा में कागज उड़ते हैं उड़ते हैं।
हम भी उड़ेंगे ऐसे।।
हवा में पंखें घूमते हैं घूमते हैं
हम भी घूमेंगे ऐसे।।
हवा में पत्ते गिरते हैं, गिरते हैं।
हम भी गिरेंगे ऐसे।।
हवा में चिड़ियाँ उड़ती हैं, उड़ती हैं।
हम भी उड़ेंगे ऐसे।।
हवा में पतंग उड़ती है, उड़ती है।
हम भी उड़ेंगे ऐसे।।

थीम – 41

1

आओ बच्चों आओ, मछली बनेंगे।
मछली बनेंगे,मछली जैसे तैरेंगे।
आओ बच्चों आओ, मेढ़क बनेंगे।
मेढ़क बनेंगे, मेढ़क जैसे कूदेंगे।

2

पानी बरसा छम–छम–छम,
छाता लेकर निकले हम।
बादल गरजे ढ़म–ढ़म–ढ़म,
बिजली चमके चम–चम–चम।
पैर फिसल गया गिर गये हम,
छाता ऊपर, नीचे हम।

3

बरखा आई बरखा आई।
देखो मुन्नी बरखा आई।
बिजली लाई बादल लाई।
रिमझिम रिमझिम पानी लाई।।

4

बादल गरजे धम–धम–धम,
बिजली चमके चम चम चम।
पानी बरसे छम–छम–छम,
ढोल बजाओ ढम–ढम–ढम।

थीम – 42

1

हम छोटे धोबी हैं, कपड़े अच्छे धोते हैं।
धोते हैं, धोते हैं रोज कपड़े धोते हैं कपड़े अच्छे धोते हैं।
हम छोटे दर्जी हैं। कपड़े अच्छे सीते हैं।
सीते हैं, सीते हैं हम रोज सीते हैं कपड़े अच्छे सीते हैं।

छोटी–सी मुन्नी, लाल–लाल चुन्नी।
लाल–लाल सूट, काले–काले बूट।
आँगनबाड़ी जाती हूँ, सबको टाटा करती हूँ।

थीम – 43

1

चीनी चाची रस पिलाकर,
कहती बेटे प्यारे।
थाली में लगते हो ऐसे,
ज्यों अम्बर के तारे।

2

चंदा जैसा गोल गोल हूँ,
सूरज सा चमकीला।
आसमान से बहुत दूर हूँ,
मीठा और रसीला।

3

माँ मुझे साबुन दो, नदी नहाने जाऊँगी।
कपड़ा धोकर आऊँगी, गंजी का भात खाऊँगी।
आंगनबाड़ी जाऊँगी, अच्छी बच्ची कहलाऊँगी।
माँ मुझे साबुन दो, नदी नहाने जाऊँगा।
कपड़ा धोकर आऊँगा, गंजी का भात खाऊँगा।
आंगनबाड़ी जाऊँगा, अच्छा बच्चा कहलाऊँगा।

4

एक था बंदर मस्त कलन्दर,
बैठा था गाड़ी के अंदर।
गाड़ी करती पों–पों–पों,
बंदर करता खों.–खों–खों।

थीम – 44

1

नाच रही है वर्षा रानी,
यहाँ–वहाँ बस पानी–पानी।
बिजली कड़के ज़ोर से,
डर लगता है शोर से।
लेकिन मोर नाचता कैसे,
चलो, पूछ लें मोर से।
या बतलायेगी फिर नानी,
नाच रही है वर्षा रानी।

2

गर्मी आई, गर्मी आई,
धरती कितनी तपती भाई।
बर्फ मँगाओ, शर्बत लाओ,
ठंडे–ठंडे, हर–हर गंगे।
सब रहते है अधनंगे,
आंधी अंधड़, कड़–कड़, खड़–खड़।
लू की मोटर दौड़े सरपट

3

ठंडी–ठंडी साँस छोड़ती, सर्दी मौसी आई,
लगी पूछने घर में कितने, कंबल और रजाई।
कितने स्वेटर, कितने मफलर, कितने शाल दुशाले,
उसके आते ही मम्मी ने, बाहर सभी निकाले।
थर–थर करती बोली मौसी, ये तो कम है भाई,
और मँगाओ और मँगाओ, कंबल और रजाई।

1

मेले में झूला झूलेंगे,
ज़ोर से झूला झुलओं।
नहीं डरेंगे हम,
मेले में सर्कस देखेंगे हम।
खायेंगे मिठाई घूमेंगे हम।।

2
रंग बिरंगे कपड़े पहने,
लोग सजे हैं मेले में।
तरह–तरह के खेल खिलौने,
मिल रहे हैं मेले में।।

थीम – 46

1
देखो राखी वाला आया,
सुंदर–सुंदर राखी लाया।
राखी का त्योहार है आया,
देखो सबके मन को भाया।
2
जंगल में मन रही दीवाली,
न्यौता देती कोयल काली।
चले पटाखे, चौंका हाथी,
बंदर बैठा बजाए ताली।।
3
होली आई, होली आई,
रंगों की बौछार लाई।
गुड़िया ने गुलाल लगाया,
गुड्डे ने भी रंग बरसाया।।
4
मिलकर ईद मनाते,
दूध सेवँइया खाते।
एक साल में आती ईद,
सबको गले मिलाती ईद।।

थीम – 47

रामू ने एक जुगत लगाई,
बांस से गेड़ी बनाई।
गेड़ी ले चौपाल में आया,
रामू ने फिर उसे चलाया।
चली तो चरमर आवाज़ आई,
गन्नू, मन्नू ने दौड़ लगाई।
बारी–बारी से सबने चलाई।
रामू ने एक जुगत लगाई।।

थीम – 48

झुमका देखो नाच रहा,
कानों को सहला रहा।
नागमोहरी हँस रही,
हाथों को दबा रही।
चुड़ियाँ देखो खनक रहीं,
अंगूठी भी चहक रही।
पैरी ने भी ताल मिलाई,
पायल ने घुंघरू खनकाई।
यह देख पुतरी हँसने लगी,
सुँड़रा ने भी दाँत दिखाई।

थीम – 49

1
बंटी भैया बजाए ढोल,
बबली नाचे गोल–गोल।
पप्पू दिखाए बंदर का खेल,
गप्पू चलाए छुक–छुक रेल।
2
मैं हवाई जहाज बनाऊँगा,
दोस्तों के साथ चाँद पर जाऊँगा।
माँ, दीदी, नाना–नानी, को भी,
उस पर बैठाकर घुमाऊँगा।
3
छोटी–सी मेरी गुड़िया रानी,
हरदम करती मनमानी।
मैंने उसे जब सुनाई कहानी,
कहानी सुन बोली गुड़िया रानी।
मैं सुनूँगी रोज कहानी।
ऐसी प्यारी गुड़िया रानी।

4

मेरी छोटी सी पतंग,
उड़ी चली हवा के संग,
इन्द्रधनुष के सारे रंग,
देख के बच्चे हो गये दंग।

5

सो जा मुन्ना राजा सो जा,
लाल पलंग पर सो जा।
मम्मी पापा आयेंगे,
खेल–खिलौने लायेंगे।

थीम – 50

आओ भैया पेड़ लगायें,
धरती में हरियाली लायें,
हरी–भरी धरती हो जाती,
सुन्दर लगती सबको भाती।

000–000

थीम – 1

रामू के दादा जी

रामू और रानी के साथ उनके दादाजी रहते थे। दादाजी दोनों को रोज कहानी सुनाया करते थे। सुबह उठकर दोनों तैयार होते थे। वे अपने दादाजी के साथ आँगनबाड़ी जाते थे। दोपहर को दादाजी फिर दोनों को लेने जाते थे। दोनों दादाजी के साथ बातें करते हुए घर वापस आते थे।

एक दिन रामू के चाचा शहर से गाँव आये। चाचा दादाजी को अपने साथ लेकर चले गये। अब रामू उदास रहने लगा। वह रात को घर की छत की तरफ देखकर रोता था। वह आँगनबाड़ी भी बहुत उदास होकर जाता था। रानी घर के दरवाजे पर चुपचाप बैठ कर लोगों को आते जाते देखते रहती थी।

एक दिन माँ ने पूछा – रामू तुम उदास क्यों हो? रामू कहता है, चाचाजी के घर से दादाजी को लेकर आओ। माँ कहती है – बेटा चाचाजी के घर पर दादाजी रहेंगे। रानी बहुत जिद करती है कि दादाजी को बुलाओ।

रामू और रानी एक दिन जब सुबह उठते हैं, तो उन्हें दादाजी बिस्तर के पास बैठे हुए दिखते हैं। रामू अपने दादाजी के गले लग जाता है। रामू और रानी दोनों दादाजी को प्यार करते हैं। दोनों बहुत खुश होते हैं।

थीम – 2

आज बड़े काले–काले बादल छाये थे। सभी को तेज बारिश होने की उम्मीद थी। इसलिए सभी अपने घरों को ठीक करने में लगे थे।

लेकिन बंटी सारा दिन उछल– कूद करता, सभी को परेशान करता। सभी जानवर (बया, गौरय्या, गिलहरी, चूहा, लोमड़ी) बंटी को समझाते हैं। तुम भी अपने लिए घर बनाओ। बरसात के मौसम में तुम क्या करोगे, कहाँ रहोगे?

पर बंटी ने किसी की बात नहीं सुनी। अब बादल फट पड़े। तेज बरसात होने लगी। सारे जानवर, पक्षी अपने घर में चले गये। अब बंदर अकेले रह गया और वह पानी में भीगने लगा। उसने सोचा कि अब मैं भी अपना घर बनाऊँगा।

2

चिंटू के मामा का घर बहुत बड़ा था। घर में गाय, भैंस, बकरी आदि थे।

घर में चिंटू के मामा–मामी के अलावा उसके कुछ दोस्त भी आये थे।

दूसरे दिन चिंटू सभी को खेत घुमाने ले गया, खेतों में धान की फसल लगी थी। ऐसा सुंदर दृश्य देखकर बच्चे खुश हुए।

खेतों के आगे घने जंगल थे, जहाँ बहुत सारे जानवर थे। जंगल में हाथी, हिरण, बंदर आदि जानवरों को देखकर वे बहुत खुश हुए।

थीम – 3

गाँव में एक मदारी आया। संग में उसके भालू था।

भालू का लंबा मुँह था। छोटे–छोटे कान थे। लंबे काले बाल थे। उसे देखकर बच्चे डर कर भागने लगे। तब मदारी ने डमरू बजाया, फिर खेल दिखाया, टोपी पहनकर नाच दिखाया। बच्चे खुशी से नाचने लगे। भालू आया, भालू आया।

थीम–4

एक दिन चंदा जिद करने लगी, मैं आँगनबाड़ी नहीं जाऊँगी। माँ के साथ गाँव जाऊँगी।

चंदा के भाई श्याम ने उससे कहा कि चलो झूला झूलेंगे, आँगनबाड़ी में दीदी ने नया झूला लगाया है।

चंदा श्याम के साथ आँगनबाड़ी गई। श्याम ने चंदा को झूला झुलाया।

थीम – 5

एक दिन दादाजी ने सोनू और मीनू को पैसे दिये और बाज़ार जाने को कहा। दोनों सबसे पहले खिलौने की दुकान पर गए। मीनू ने गुड़िया और सोनू ने गेंद खरीदा। घूमते–घूमते वे फल की दुकान पर गए। वहाँ उन्होंने कुछ फल खरीदे। सामने ही मिठाई की दुकान थी। वहाँ से कुछ मिठाई खरीदी। मिठाई की दुकान से वे निकले तो उन्हें एक लड़की रोती हुई दिखाई दी। उन्होंने उसे घर पहुँचाया।

घर जाकर उन्होंने दादाजी को सारी बातें बताई। दादाजी बहुत खुश हुए

थीम – 6

चीकू को भुट्टा बहुत पसंद था। उसकी मम्मी उसे रोज एक भुट्टा खाने को देती थी। चीकू को समझाती थी, ज्यादा भुट्टा खाने से पेट में दर्द होगा और दस्त होंगे। एक दिन चीकू मम्मी के बाजार जाने के बाद दोबारा भुट्टा खा रहा था। मम्मी के आने पर उसने भुट्टा को कहीं छुपा दिया। जब मम्मी काम करने लगी, तो चीकू छुपा हुआ भुट्टा निकालकर खाने लगा। उसने जैसे ही भुट्टा खाया, भुट्टे में लगी हुई चींटियाँ उसके मुंह में लगी और काटने लगी वह जोर–जोर से रोने लगा। उसकी मम्मी आई और रोने का कारण पूछा, तब चीकू ने सारी बातें बताई। उसकी मम्मी उसे दवा लगाई और समझाई।

2.

रामू सोया हुआ था। उसने सपने में देखा कि उसके सारे अंग आपस में लड़ रहे थे। पेट कह रहा था, मैं भोजन पचाता हूँ, तभी तुम सब अपना काम करते हो। तभी हाथ ने कहा, तुम झूठ बोलते हो। मैं भोजन को मुँह तक नहीं ले जाता, तो तुम भोजन कहाँ से पाते। तभी दाँत और जीभ चिल्लाकर बोले, हमारी तो कोई सुनता नहीं, जब तक हम चबाएंगे नहीं, तब तक भोजन पचेगा ही नहीं। इसके बिना तो सभी बीमार पड़ जाओगे। पैर ने कहा, मैं चलूँगा ही नहीं, तो भोजन कहाँ से मिलेगा? इसी तरह आँख, कान, नाक सभी अपनी बातें रखने लगे और लड़ने लगे। और सभी ने अपना काम करना बंद कर दिया।

काफी समय बाद राजू नहीं उठा। उसे जोर से भूख लग रही थी। हाथ ने कहा, मैं सुन्न पड़ रहा हूँ। पैर ने कहा, मुझमें चलने को ताकत नहीं है। जीभ ने कहा, मुझे स्वाद के लाले पड़ गये। पेट ने कहा, मैं भूख के मारे तड़प रहा हूँ। तभी मस्तिष्क ने सभी अंगों को समझाया कि सभी मिलजुलकर काम करोगे तभी शरीर स्वस्थ

रहेगा। सभी को बात समझ में आ गई। तभी राजू उठा, हाथ धोकर पेट भर भोजन किया।

थीम – 7

पुरेना गाँव की आँगनबाड़ी में कल शिशु मेला होने वाला था। गाँव के सभी लोग खुश थे। दीदी ने सभी बच्चों को समझाया। सरिता एवं उसकी सहेलियों ने आँगनबाड़ी के बाहर की सफाई की। रमेश एवं उसके दोस्त ने आँगनबाड़ी के अंदर की सफाई की। दरवाजे के पास संगीता की माँ ने आकर रंगोली बनायी। दूसरे दिन शिशु मेला हुआ। सभी मेहमानों ने आँगनबाड़ी की साज–सजावट देखी। सबने आँगनबाड़ी की प्रशंसा की।

थीम – 8

जंगल में जानवरों की सभा रखी गई। हाथी को सभापति चुना गया। सबने अपनी–अपनी परेशानियाँ बताईं और उनका हल ढूँढ़ा। खरगोश की बारी आयी। वह बोला, मेरा तो जीना कठिन हो गया है। भालू अपने घर का कचरा मेरे घर के सामने फेंक देता है। कभी बंदर केला खाकर छिलका फेंक देता है। मैं जंगल छोड़कर चला जाऊँगा।

हाथी ने भालू की ओर देखा। भालू डरकर बोला, सभी जानवर ऐसा ही करते हैं, तो मैंने क्या गलती की? हाथी बोला, गलती सभी ने की है। इसका सभी को पछतावा हुआ और सभी ने एक–दूसरे के घर के सामने का कचरा साफ किया।

थीम – 10

रामू रोज देर से सो कर उठता था। देर से नहाता था, फिर बिना नाश्ता किये स्कूल चला जाता था। रोज स्कूल देर से जाता था। उसकी मैडम रोज डाँटती थी। दोपहर को ध्यांह भोजन के समय वह अपना गृह कार्य करता था।

वह खाना नहीं खाता था। छुट्टी के बाद रास्ते में खेलते रहता था। शाम को चार बजे घर आता था। रामू एक दिन बीमार पड़ गया। उसके पेट में दर्द होने लगा। डॉक्टर ने कहा कि तुम रोज सुबह जल्दी उठा करो। समय पर नाश्ता किया करो। दोपहर को समय पर खाना खाओ। तुम्हारा पेट दर्द ठीक हो जायेगा। अब रामू समय पर अपना सब काम करता है।

2

मीतू का एक दोस्त था। उसका नाम डॉगी था। मीतू उसे बहुत प्यार करती थी। मीतू उसे खाना खिलाती थी। रोज रात को मीतू उसे अपने पास सुलाना चाहती थी। डॉगी रोज भागकर दरवाजे के पास सो जाता था।

एक बार मीतू बहुत रो रही थी। वह डॉगी को बुलाती है, अपने पास सोने के लिए। डॉगी उसके पास नहीं आता। डॉगी उससे कहता है कि मुझे घर की चौकीदारी करनी है। मैं रात को नहीं सोता हूँ।

मैं तुम्हारे साथ सुबह खेलूँगा। मीतू उसकी बात समझ जाती है। अपने बिस्तर पर जाकर सो जाती है।

थीम – 11

गर्मी के दिन थे। जंगल में आम और तेंदू फले थे। चीकू बंदर को बुखार आ रहा था। उसे आम खाने की इच्छा हो रही थी। वह पेड़ पर चढ़ नहीं पा रहा था। मिंटी बंदरिया उसे देख रही थी। मिंटी पेड़ पर चढ़ कर आम तोड़कर नीचे फेंक दी और तुरंत नीचे उतर गई। गिरे आम को उठाकर चीकू बंदर को उसने दिया।

चीकू आम खाया। उसे बहुत अच्छा लगा। दूसरे दिन चीकू ऊपर आम को देखते हुए बैठा था। उसी समय दारा हाथी आया। दारा कुछ तेंदू लाया था। चीकू तेंदू खाकर बहुत खुश हुआ। चीकू ने दारा से कहा– आज मैं बहुत खुश हूँ। पर मैं स्वयं आम तोड़कर खाना चाहता हूँ।

दारा कहता है– चलो मैं तुझे आम खिलाता हूँ। मेरी पीठ पर बैठ जाओ चीकू दारा के पीठ पर बैठ जाता है। दारा उसे सूँड़ से उठाकर पेड़ की टहनी तक ले जाता है। चीकू आम अपने हाथों से तोड़कर खाता है। वह सूँड़ को छोड़कर पेड़ की टहनी पर बैठ जाता है। वह खुशी से खीस–खीस करता है।

दारा कहता है – देखो दोस्त, तुम्हारी मदद मैं हमेशा करूँगा। तुम चिंता क्यों करते हो। मिंटी बंदरिया भी खीस–खीस करती हुई खुश होती है। वह कूदती हुई चीकू के पास आ जाती है। थोड़ी देर में चीकू और मिंटी हाथी के पीठ पर बैठ कर वापस आ जाते हैं।

थीम – 12

चूहे की शादी

– चीकू चूहा दूल्हा बना।

– गाय माता ने चीकू को सजाया।

– ऊँट ने चीकू को घोड़े पर बिठाया।

– चीकू की बारात में भेड़, कुत्ता, गधा, ऊँट आये।

– इधर बकरी ने मीठी चुहिया को सजाया।

– खरगोश मीठी दुल्हन को लेकर आया।

– मीठी चुहिया ने चीकू के गले में जयमाला डाली।

– बैल, बकरी, सुअर, ने सबको दावत कराई।

– मीठी ने दावत करते समय बिल्ली को ताकते देख लिया।

– मीठी ने चीकू का हाथ पकडकऱ कहा–चलो दूल्हे राजा बिल्ली आने वाली है।

– चीकू मीठी को लेकर अपने घर चला गया।

थीम – 13

एक नदी के किनारे मेढक, चूहा, गिलहरी, बिच्छू, नेवला आदि प्रतिदिन सुबह मिलते थे और बहुत हँसते थे। हँसी की आवाज सुनकर नदी की मछली झाँक कर उन्हें देखती थी और उदास होकर चली जाती थी। मेढक और कछुआ ने मछली से कहा– तुम हमारी दोस्त बनोगी, तो सबको खुशी होगी। मछली ने हाँ कर दी। दूसरे दिन कछुआ ने मछली को सभी दोस्तों से मिलवाया। नये दोस्तों से मिलकर सभी बहुत खुश हुए।

थीम –14

एक पेड़ पर चींटी और कोयल रहते थे। एक दिन अचानक चींटी पानी में गिर गई। कोयल को दया आ गई। उसने सूखा पत्ता नीचे गिराया।

चींटी उस पर बैठ गई। कुछ देर बाद पेड़ पर चली गई। एक दिन शिकारी कोयल को मारने आया। उसने बंदूक से निशाना लगाया। चींटी ने शिकारी को ज़ोर से काटा। शिकारी का निशाना चूक गया और बंदूक की आवाज़ सुनकर कोयल उड़ गयी।

थीम – 15

हरयिल तोता जंगल में आया। भूख मिटाने के लिए वह एक आम के पेड़ पर बैठा। बरसात के कारण वह पेड़ पर ही बैठा रहा। उसी बीच हरियल तोता और आम में गहरी दोस्ती हो गई।

बारिश थम गई और तोता अपने घर वापस जाने लगा। आम को बहुत दुःख हुआ। हरियल तोते ने कहा – जब भी तुमको मेरी जरूरत होगी तो मुझे बुलाना। आम ने कहा– तुम मेरी क्या मदद करोगे ? तुम तो छोटे से पक्षी हो।

एक दिन लकड़हारे आम के पेड़ को काटने आए। पेड़ घबरा गया। सभी आम जोर जोर से चिल्लाने लगा।

चील ने आम के चिल्लाने की आवाज सुनी और हरियल तोते को बताई। तोते ने चील से कहा कि तुम अपने सभी बहनों को लेकर आम दादा के पास पहुँचो। चील और तोते लकड़हारे को चोंच गड़ाने लगे। लकड़हारे अपनी कुल्हाड़ी छोड़कर भागे।

थीम – 16

मछली के घर रेडिया आया

रामपुर नाम का एक गाँव था। वहाँ एक सुंदर नदी थी। नदी में प्यारी प्यारी मछली रानी रहती थी। मेंढ़क, कछुए, मगर भी रहते थे। एक बार रानी मछली के घर में रेडियों आया। रेडियो से गाना सुनकर सभी को मजा आया। तालाब में रहने वाले सभी दिनभर गाना और समाचार सुनते थे। सभी ताली बाजाकर खुश होते थे।

अचानक समाचार आता है कि नदी की मछलियों को पकड़ने के लिए कल जाल डाला जायेगा। रानी मछली डर जाती है। वह तुरंत सभी मछलियों को मोबाइल से यह बात बताती है दूसरे दिन नदी में जाल डाला जाता है। सभी मछिलयाँ दूर जाकर छुप जाती हैं। सभी मछुवारे शाम तक बैठे रहते हैं। उनके जाल में एक भी मछली नहीं फँसती। वे चले जाते हैं।

थीम – 17

मुनमुन नाम की एक चिड़िया थी। वह रोज घूमने जाती थी। वह एक दिन छमछम बंदरिया के घर बैठने गयी। वहाँ टी.वी. का गाना, सिनेमा देखकर मुनमुन खुश हो गयी। वहाँ पड़ोस के भालू, बंदर, तोता सभी लोग खुशी से नाचने और गाने लगे।

थीम – 18

एक लकड़हारा था। वह नदी किनारे लकड़ी काटने गया। लकड़ी काटते–काटते लकड़हारे की कुल्हाड़ी नदी में गिर गई। लकड़हारा दुःखी हो गया। तभी जल देवता नदी से बाहर आये। देवता नेलकड़हारे से रोने का कारण पूछा लकड़हारे ने सारी बात उन्हें बता दी। नदी के देवता ने नदी से सोने की कुल्हाड़ी निकालकर लकड़हारे को दी। लकड़हारे ने उसे लेने से मना कर दिया। फिर देवता ने चाँदी की कुल्हाड़ी निकालकर दी। लकड़हारे ने उसे भी लेने से मना कर दिया। अब नदी के देवता ने लकड़हारे

को उसकी लोहे की कुल्हाड़ी निकालकर दी। लकड़हारा खुश हो गया। उसने कहा, हाँ यही मेरी कुल्हाड़ी है। लकड़हारे की ईमानदारी से खुश होकर नदी के देवता ने तीनों कुल्हाड़ी लकड़हारे को दे दी।

थीम – 20

आँगनबाड़ी के सामने सड़क पर सभी बच्चे खेल रहे थे। दीदी ने आकर उन्हें समझाया, लेकिन बच्चे नहीं माने। लीना साइकिल चलाते हुए आ रही थी। अचानक साइकिल का ब्रेक टूट जाता है। झुमरू सामने से आ रहा था। झुमुरू के पैर पर चोट लग गई। सभी बच्चे उसे घेरकर खड़े हो जाते हैं। भीड़ देखकर दीदी आती है और सबको सुरक्षा के बारे में बताती है। सब बच्चे मैदान में खेलते हैं।

थीम – 21

एक दिन चीनू की माँ चीनू, विक्की और उनके छोटे भाई बबलू को घर पर छोड़ कर बाहर गई थी। वे दोनों घर पर अपने छोटे भाई के साथ खेल रहे थे कि बबलू को बार–बार दस्त होने लगे।

चीनू और विक्की परेशान हो गए कि वे क्या करें? तभी सीमा दीदी घर पर आईं। चीनू ने सारी बातें दीदी को बताई। दीदी ने बबलू को एक गिलास पानी में एक चम्मच शक्कर और चुटकी भर नमक मिलाकर पिलाया।

धीरे–धीरे बबलू की तबियत ठीक होने लगी। शाम तक बबलू की तबियत बिल्कुल ठीक हो गई। चीनू और विक्की खुश हो गए।

थीम – 22

सीमा अपने टॉमी से बहुत प्यार करती थी। वह अपने टॉमी के लिए सुंदर पट्टा खरीदना चाहती थी। वह बाजार गई। उसके साथ टॉमी भी गया। सीमा एक दुकान में जाकर बोली –भैया मेरे टॉमी के लिए पट्टा मिलेगा क्या? उसने कहा– नहीं, यहाँ तो किराना सामान मिलता है। सीमा दूसरी दुकान पर गयी और बोली– भैया मेरे टॉमी के लिए पट्टा मिलेगा क्या? उसने कहा– नहीं, यहाँ तो जूते, मोजे मिलते हैं। सीमा तीसरी दुकान पर गयी बोली– दीदी, मेरे टॉमी के लिए पट्टा मिलेगा क्या? वह बोली– नहीं, यहाँ तो सब्जी मिलती है, फिर वह आगे बढ़ गई। चौथे दुकान पर गई और बोली– भैया मेरे टॉमी के लिए पट्टा मिलेगा क्या? तब भैया ने कहा – हाँ–हाँ। बिल्कुल मिलेगा। उसने सीमा को रंग–बिरंगा पट्टा दिखाया। सीमा अपने टॉमी के लिए पट्टा लेकर बहुत खुश हुई।

थीम – 23

निमोरी गाँव में सर्कस आया। कालू सर्कस देखने गया।सर्कस में करतब दिखाने वाले भोला को चोट लग जाती है। कालू उसकी सहायता के लिये दौड़ जाता है। दोनों में दोस्ती हो जाती है दूसरे दिन भोला आँगनबाड़ी में कालू से मिलने चला आता है। सर्कस वाले बच्चे को देखकर आँगनबाड़ी के सब बच्चे खुश हो जाते है।

2

जंगल में एक शेर था। एक दिन एक शिकारी ने शेर को तीर मारा। शेर घायल हो जाता है। वह दर्द से जोर–जोर से कराहने

लगता है। सभी जानवर आकर उसे दूर से देखते हैं। हाथी आता है। वह शेर के तीर को निकाल देता है। हाथी पेड़ के पत्तों से दवा बनाता है। वह दवाई को शेर के घाव में लगाता है। सभी जानवर नदी से मछली पकड़कर लाते हैं और शेर को खाने को देते हैं। शेर खुश हो जाता है। शेर से सभी जानवरों की दोस्ती हो जाती है। शेर ठीक हो जाता है। शेर के पीठ पर बंदर और खरगोश बैठते हैं। हाथी की पीठ पर लोमड़ी बैठती है। साथ में हिरण भी रहता है। सभी नदी के किनारे जाते हैं। साथ में पानी पीते हैं और शेर को मछली खिलाते हैं।

थीम – 24

नन्हीं गिलहरी से मीकू बंदर ने कहा– तुम चाय पीओगी। गिलहरी बोली– हाँ। मीकू बोला– तुम कुल्हड़ ले आओ। गिलहरी कुल्हड़ लेने निकल पड़ी। रास्ते में किसान मिला। गिलहरी ने किसान से कहा– ''मुझे कुल्हड़ दे दो'' किसान बोला– मैं तो किसान हूँ, तुम्हें अनाज दे सकता हूँ।

गिलहरी लुहार के पास गई और बोली– मुझे कुल्हड़ दे दो। लुहार बोला– मैं तो लुहार हूँ। कुल्हाड़ी दे सकता हूँ। गिलहरी आगे बढ़ी रास्ते में उसे कुम्हार मिला। गिलहरी कुम्हार के पास गई और बोली– मुझे कुल्हड़ दे दो। कुम्हार ने कहा– अभी देता हूँ। गिलहरी कुल्हड़ लेकर मीकू के पास गई, फिर दोनों ने मिलकर चाय पी।

थीम – 27

एक समय की बात है। रामू के दादाजी बीमार हो गये। उस साल खेतों पर धान की बोवाई नहीं हो पाई। रामू ने सोचा कि मैं केले का पेड़ लगा देता हूँ। पास के तालाब से पानी लाकर डाल दूँगा। रामू के पास पेड़ खरीदने के लिए पैसे नहीं थे। वह गाँव में घूम–घूम कर केला का पेड़ मांगता है और उसे लाकर अपने खेत में लगाते जाता है। उसके दादाजी भी खेतों पर आकर बैठ जाते थे। धीरे–धीरे पौधे बड़े हो गये। उस पर बहुत सारे केले लग गये। खेतों पर ही लोग केला खरीदने आने लगे। अब दादाजी और रामू बहुत खुश थे।

थीम – 28

एक गाँव में सुन्दर बगीचा था। उस बगीचे में सुंदर–सुंदर फूल खिलते थे। बगीचे की देखभाल एक माली किया करता था। उस बगीचे के पास एक शरारती लड़का रहता था। हर रोज जब माली सो जाता तो बच्चा चुपके से बगीचे में घुस जाता और सारे फूल भी तोड़कर इधर उधर फेंक देता। माली चिंतित हो जाता कि सारे फूल कौन ले जाता है ? उधर सारे फूल परेशान रहते कि हम बर्बाद होने के लिए थोड़े ही बने हैं। हम तो बहुत सुन्दर हैं। घर और बगीचे की खूबसूरती बढ़ाते हैं परन्तु ये नटखट बच्चा है। सारे फूलों ने अपनी परेशानी फूलों के राजा गुलाब को बतायी। गुलाब को एक उपाय सूझा। उसने कहा– जब शरारती बच्चा बगीचे में आएगा। तुम सारे फूल छिप जाना और मैं खिले रहूँगा। सभी ने ऐसा किया। उसे गुलाब का फूल दिखाई पड़ा। बच्चे ने सोचा चलो चुपके से गुलाब का फूल तोड़ लूँ। चुपके से शरारती बालक ने गुलाब को तोड़ना चाहा, गुलाब ने झट से अपना कांटा उस बच्चे को चुभा दिया। बच्चा रोने लगा और माली की नींद खुल गयी। माली ने बच्चे को समझाया। बच्चे को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसने कहा अब कभी फूलों को नहीं

तोडूँगा। सारे फूल बच्चे की बात को सुनकर खुश हो गए और खुशी से नाचने गाने लगे।

थीम – 29

सोनू ने रात को जब सुन्दर सपना देखा। उसने देखा कि उसके बगीचे में एक अनोखा पेड़ लगा है। जिसमें सभी प्रकार के फल जैसे – आम, केला , अनार, संतरा, अंगूर, जामुन, बेर, अमरूद आदि लगे हुये हैं। यह सब देखकर उसके मुँह में पानी आ गया। उसने पेड़ के फलों को तोड़कर पेट भर खाया। सुबह होते ही उसकी माँ ने उसे जगा दिया। उसे दुख हुआ कि उसका सुन्दर सपना टूट गया।

2

किसी जंगल में मिट्ठू नाम का बंदर रहता था। वह अपनी माँ के लिये केला लाने जंगल की ओर निकल पड़ा। उसने केले के एक गुच्छे को तोड़ लिया लेकिन यह बहुत वजनदार था। उसने सोचा कि कुछ केले खायेंगे तो वजन अपने आप कम हो जायेगा। उसने केला खाना शुरू किया। अचानक बाघ के दहाड़ने की आवाज सुनाई दी। बंदर डर के मारे गिर पड़ा। उसके ऊपर केले का गुच्छा गिर पड़ा। जैसे ही बंदर के ऊपर बाघ झपटा, बाघ केले के छिलके से फिसल कर गिर गया। मिट्ठू खुश हुआ और उसने केले खाने शुरू कर दिया।

थीम – 30

जंगल में सफेद रंग का हाथी रहता था। उसे रंग खेलना पसंद नहीं था। इसलिए हर होली पर वह दरवाजा बंद करके सो जाता था। जंगल के सभी जानवर बंदर, भालू, चूहा, खरगोश उसे रंगना चाहते थे, चूहा अंदर जाकर कुछ रंग उसके नहाने के पानी में मिला देता है। कुछ रंग उसके तौलिये में मिला देता है।

हाथी जब सोकर उठता है तब पानी में नहाता है। सफेद हाथी रंग–रंग हो जाता है। तौलिये से मुँह पोछता है, तो पूरा मुँह रंग जाता है। वह गुस्से से बाहर निकलता है, तो सभी जानवर ताली बजाते हैं और होली का त्यौहार मनाते हैं।

थीम – 31

कड़ाही और झारा के बीच में बहुत प्यार था। दोनों एक दूसरे के बिना नहीं रहते थे। एक दिन झारा कहता है कि मेरे बिना तुम कुछ नहीं कर सकते हो कड़ाही कहती है अरे मेरे बिना तुम कछ नहीं कर सकती हो। तेल गरम हो रहा था। उसमे पुड़ी तलने के लिए डालते हैं, लेकिन झारा भाग जाता है। पुड़ी चिल्लाती है कि मैं जल रही हूँ, मुझे बाहर निकालो। झारा आकर कहता है, देखो मेरे बिना कोई काम नहीं होता। अगले दिन आलमारी में कड़ाही छुप जाती है। घर के लोग उसे ढूँढ़ते हैं। झारा देखता है कि उसे भी कोई नहीं उठा रहा है। कड़ाही कहती है कि मेरे बिना भी किसी का काम नहीं बनता। दोनों के बीच फिर से दोस्ती हो जाती है।

थीम – 32

आलसी कौआ

एक कौआ था और एक गिलहरी थी। एक बार दोनों ने सोचा चलो हम खेती करेंगे। दोनों ने खेती के लिए तैयारी शुरू कर दी। कौआ बोला– मैं पूड़ी खाकर, पानी पीकर, सोकर आता हूँ। फिर मैं काम करूँगा। गिलहरी ने खेत में बीज बोया। बारिश के बाद पौधे बढ़ गये। फसल पक गई। अब गिलहरी फसल काटने को

तैयार हो गई, परन्तु कौआ आलस्य के कारण कुछ नहीं कर पाया। गिलहरी अपनी फसल काटकर ले आई और कौआ केवल कांव कांव करता रह गया।

थीम – 33

एक बार कद्दू राजा ने फल और सब्जियों को अपने दरबार में बुलवाया। एक तरफ फल बैठे और दूसरे तरफ सब्जियाँ। टमाटर देरी से आता है और वह फल के स्थान पर बैठ जाता है। सारे फल उसे भगाते है। वह कद्दू राजा से कहता है, मैं फल हूँ। गोभी कहती है इधर आओ तुम तो हमारे साथी हो। आलू कहता है तुम्हारे बिना तो मेरी सब्जी नहीं बनती है। मटर कहता है तुम्हारे बिना तो मेरी सब्जी कोई नहीं खाता है। तुम अपने आप को फल कहते हो, सारी सब्जियाँ जोर से कहती हैं हाँ तुम सब्जी हो, भले ही तुम फल जैसे लगते हो। कद्दू राजा कहता है कि टमाटर तुम सब्जी हो तुम्हारे साथ ही सभी सब्जियाँ बनाई जायेंगी। तुम्हें यह सम्मान दिया जाता है।

थीम – 34

एक जंगल था। जिसमें सभी जानवर आपस में मिल जुल कर रहते थे। एक दिन जंगल में आग लग गई। सभी जानवर डर के मारे इधर उधर भागने लगे।

तभी खरगोश ने कहा– डर कर भागने से काम नहीं चलेगा। हमें मिल जुल कर आग को बुझाना चाहिए, नहीं तो ये आग से हम सभी के घर जलकर नष्ट हो जायेंगे।

खरगोश की बात को सुन सभी जानवर अपने–अपने घरों से बरतन लेकर आए और नदी से पानी भरकर आग बुझाने लगे। हाथी भी अपनी सूँड़ में पानी भर–भरकर आग पर डालने लगा। थोड़ी ही देर में आग बुझ गई। ''सभी जानवर खुशी से झूमने लगे।''

थीम – 35

एक जंगल में एक शेर था। उसके पैर में काँटा गड़ गया जिसके कारण वह चल नहीं पा रहा था। हाथी ने उसको देखकर पूछा– शेर भाई तुमको क्या हुआ है? तब वह बताता है कि उसके पैर में काँटा गड़ा हुआ है, तब हाथी अपने सूड़ से पानी भरकर उसके पैर को साफ करता है, और बंदर मामा से कहता है। शेर दुखी है। उसके पैर में काँटा लगा है। तब बंदर कहता है, लाओ मैं काँटा निकाल देता हूँ। फिर तीनों में दोस्ती हो जाती है।

थीम – 36

गर्मियों में राजू अपने दादाजी के यहाँ छुट्टियाँ मनाने आया था। एक दिन राजू को नदी के किनारे एक मछली तड़पती हुई दिखाई दी। राजू को मछली पर दया आ गई। उसने मछली को उठाकर नदी में डाल दिया। मछली बहुत खुश हो गई। राजू और मछली दोनों दोस्त बन गये।

थीम – 38

सोन नाम का एक गांव था। गांव के पास एक जंगल था। वहाँ बहुत सारे पक्षी रहते थे।

जंगल में चिड़िया चह चहाती थी। कोयल कूहू कूहू करती थी। तोता टें टें करता था।

एक दिन शिकारी आया। पक्षियों को पकड़ने के लिये एक जाल बिछाया। उसी समय एक महात्मा पधारे। उन्होंने शिकारी को समझाया। हरे पेड़ में पक्षी रहते हैं। सभी पक्षियों के

एक साथ रहने के कारण उनमें बहुत प्यार होता है। शिकारी को बात समझ में आई। उसने कहा अब मैं पक्षी नहीं पकडूँगा। उसके बाद सभी एक साथ बैठकर गाना–गाने लगे। तभी बारिश शुरू हो गई। सभी लोग झूमकर नाचने लगे।

2

एक बार सोनू मोनू तालाब में नहाने गये। उनके साथ शेरू भी गया। शेरू उनके कुत्ते का नाम था। शेरू बहुत ही शरारती था। उसने सोनू मोनू के गेंद को पानी में डाल दिया। जैसे ही गेंद को पानी में गिरते देखा, सोनू मोनू ने पानी में छलांग लगाई। सोनू मोनू तैर कर गेंद को पकड़ लाए। गेंद पकड़ सोनू मोन खुश हो गये।

थीम – 39

राजा अपनी पलंग में सो रहा था। तभी वह आकाश में उड़ने लगा।आकाश में वह चंदा मामा से मिला।

चंदा मामा राजा को पूरा आकाश घुमाने ले गए। घूमते–घूमते अचानक उसकी आँख खुल गई। देखा कि सुबह हो गई है।

थीम – 40

पत्ती और ढेला दोनों दोस्त थे। एक दिन तेज हवा चलने लगती है। पत्ती ढेला से कहती है कि तेज हवा चल रही है, अब आंधी आयेगी और मैं उड़ जाऊँगी। अब मेरा साथ छूट जाएगा। ढेला पत्ती के ऊपर बैठ गया। पत्ती नहीं उड़ी, दोनों बहुत खुश हुए। एक दिन घने बादल छा गये। पत्ती ने ढेला से पूछा– क्यों उदास हो ? ढेला ने कहा– पानी गिरने वाला है, मैं पानी में घुल जाऊँगा। पत्ती कहती है कि– मैं तुम्हारे ऊपर ढक जाऊँगी। धीरे–धीरे पानी गिरने लगा। पत्ती ने ढेला को ढक लिया पानी बंद होने पर ढेला मुस्कुराने लगा। दोनों बहुत खुश हो जाते हैं।

थीम – 41

रानी मछली तालाब में रहती थी। गोपी रोज आटे की गोलियाँ उसे खिलाता था। रानी मछली गोपी को देखकर तालाब के किनारे आ जाती थी। वह गोपी के पैर के आस–पास घूमती थी। गोपी उपके लिए आटे की गालियाँ पानी में डालता था। उन्हें खाने के बाद गोपी को वह प्यार देखती थी। थोड़ी देर गोपी के पैर के आस पास घूमती थी। उसके बाद वह चली जाती थी। तालाब के कीचड़ में बहुत से कमल के पौधे थे। उसके जड़ों के बीच में मछली रहती थी। मछली और गोपी में बहुत प्यार था।

थीम – 42

रधिया धोबन प्रतिदिन कपड़े धोने तालाब जाती थी। एक बार एक बंदर उसके बहुत सारे कपड़े लेकर पेड़ के ऊपर चढ़ गया। रधिया ने देखा कि बंदर उसके बहुत सारे कपड़े ले गये हैं। उसने एक उपाय सोचा। रधिया ने बचे

कपड़े फेंकना शुरू कर दिया। उसे देखकर बंदर ने भी ऊपर रखे कपड़े फेंकना शुरू कर दिया। इस तरह उसके सारे कपड़े मिल गये। वह चुपचाप कपड़े उठाकर ले गयी और खुश हो गयी।

2

रामू और उसकी माँ बाजार जाते हैं। बाजार में रामू को एक पेंट– शर्ट बहुत पसंद आता है। उसकी माँ कहती है कि यह बहुत महँगा है। अभी इसे नहीं खरीद सकते। रामू रात को कुछ सोचते हुए सो गया। दूसरे दिन रामू अपने बाड़ी में बहुत से आम तोड़े। स्कूल से आने के बाद उसे गाँव में ही बेच दिया। उसने शाम को माँ को पैसा दिया और कहा – इतने पैसे में तो मेरा कपड़ा आ जायेगा न। माँ कहती है पैसे कहाँ से आये। रामू बताता है कि उसने अपनी बाड़ी के आम तोड़ कर बेच दिये हैं। माँ रामू को बहुत प्यार करती है। दोनों शाम को कपड़े खरीद कर ले आते हैं।

थीम – 43

एक ढेला व एक पत्ता था। दोनों की बहुत दोस्ती थी। एक दिन आँधी आने वाली थी, तो पत्ता कहने लगा कि जब आँधी आयेगी, तो मैं उड़ जाऊँगा। ढेले ने कहा–भाई पत्ता जब आँधी आयेगी, तो मैं तुम्हारे ऊपर बैठ जाऊँगा। हवा तुम्हें नहीं उड़ा सकेगी। आँधी आई और चली गई, लेकिन पत्ता बच गया। एक दिन आकाश में बादल छाये। ढेला बोला– बारिश होगी और मैं घुल जाऊँगा। तब पत्ते ने कहा– डरो मत, जब बारिश होगी, तो मैं ढँक लूँगा। थोड़ी देर में बारिश हुई, लेकिन ढेला नहीं भींगा। दोनों बहुत खुश हुए। अब दोनों साथ–साथ रहने लगे।

थीम – 44

रवि, ओमी, रिंकी और यशी चारों दोस्त मिलकर खेल रहे थे। खेलते–खेलते वे घर से दूर निकल आए। अचानक बारिश होने लगी। ओमी जो इनमें सबसे छोटा था, रोने लगा। तब रवि और यशी ने उसे चुप कराया। रिंकी समझाते हुए बोली, जब बारिश बंद हो जायेगी, तब हम घर चले जायेंगे। उनकी बातें पड़ोस के दादाजी सुन रहे थे।

वे बच्चों के पास छाता लेकर आए और उनसे कहा, चलो मेरे घर चलो। जब बारिश बंद होगी, तब तुम अपने–अपने घर चले जाना। बच्चे दादाजी के घर गये। दादाजी ने बच्चों को मिठाई खिलाई। थोड़ी देर बाद बारिश बंद हो गई। बच्चे खुशी–खुशी अपने घर चले गए।

थीम – 45

राजू और मीना बैलगाड़ी में बैठकर राजिम मेला देखने गये। दोनों मेले में पहुँचकर नदी में, नहाये व मंदिर के दर्शन किये। राजू और मीना साथ–साथ झूला–झूले, फिर लड्डू और जलेबी खाये।

राजू ने गुब्बारे,, खिलौने, चश्मे और डमरू खरीदा। मीना ने अपने पैसे से फीता और चूड़ी खरीदी। साथ में गुड़िया भी ली। दोनों खुशी–खुशी घर वापस आ गए।

थीम – 46

राखी का दिन था। रेशमा दरवाज़े पर बैठी थी। वह उदास थी। उसका कोई भाई नहीं था। रवि साईकिल से आ रहा था। रेशमा को रोता देखकर वह रुक गया। उसने कहा– बहन, तुम क्यों रो रही हो? रेशमा ने रवि को सारी बातें

बताई। रवि ने कहा– मेरी भी कोई बहन नहीं है। क्या तुम मुझे राखी बाँधोगी? तब रेशमा ने रवि को राखी बाँधी। रवि ने रेशमा को उपहार दिया। दोनों बहुत खुश हो गये।

थीम – 47

रामू ने कहा – आज सब गाँव की चौपाल पर नृत्य करेंगे। मीना ने रात को अपनी सहेलियों के साथ सुआ नृत्य किया। रानी ने पंडवानी में बकासुर वध की कथा सुनाई। रामू ने कालू के साथ मिलकर गेड़ी नाच दिखाया। सीता ने पर्रा लेकर बिहाव नृत्य किया। गाँव के लोगों ने खूब ताली बजाई।

थीम – 48

राधा के स्कूल में फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता थी। राधा बहुत परेशान थी। उसके पड़ोस में दादी रहती थी। दादी ने कहा– तुम साड़ी पहनो। दादी उसे साथ लेकर जेवर की दुकान गई। सांटी, ढरकऊवा, पुतरी, झुमका लेकर आई। राधा की माँ ने छोटा सा करधन खरीदा। राधा ने सीधे पल्ले की साड़ी पहनी। सभी जेवर पहनकर फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में गई। राधा फैंसी ड्रेस प्रतियोगिता में प्रथम आई। दादी, राधा और उसकी माँ बहुत खुश हुईं।

थीम – 50

एक दिन रामू को एक कुल्हाड़ी मिली। वह बहुत खुश हुआ। उसने कुल्हाड़ी से बहुत सारी डालियाँ और पत्तियाँ काट डाली। तभी अचानक कराहने की आवाज आई। पेड़ कह रहा था, मुझे काटने से तुम्हें ही तकलीफ होगी। मैं तुम्हें शुद्ध हवा, फल, छाया देता हूँ। रामू को इस बात का पता ही नहीं था। वह कुल्हाड़ी लेकर अपने घर वापस चला गया। पेड़ बहुत खुश हुआ और उसके पत्ते हवा में झूमने लगे।

2

पेड़ों के रक्षक

माधव और मुकुंद दो भाई थे। उन्होंने पिछली होली पर हरे पेड़ों को काटते देखा था। दोनों ने इस बार तय किया कि वे इस होली पर हरे पेड़ों को जलाने नहीं देंगे। यदि किसी भी बच्चे को पेड़ काटते देखेंगे,उसे पुलिस को बता देंगे। जब कुछ बड़े लड़के बबूल के पेड़ को काट रहे थे, तब उन्होंने पुलिस को बताया। पुलिस ने उन लड़कों को पकड़ लिया। इस डर से दूसरे बच्चों ने भी पेड़ नहीं काटे। कलेक्टर महोदय ने दोनों को पुरस्कार दिया और दोनों के पर्यावरण प्रेम को देखकर खुश हो गये।

000–00

गीत

आओ मिलकर सृजन करें,
जीवन में आंनद भरें।
सपनों के इस आसमान में,
पंखो से उड़ान भरें।
ऊँचे सपने हम सब चुनें,
आसमान को मंजिल चुनें।
विश्वासो के इस डगर पर,
जग से आगे हम चलें।

शिशुओं के इस अंर्तमन में,
नवसृजन की है तरंगे।
ऊर्जा के ये गहरे सागर
इनमें ज्ञान–विज्ञान भरें।
असीमित क्षमता है इनमें,
दिल से हम स्वीकार करें।
जमी के इन तारों के संग,
ऊँची एक उड़ान भरें।

योगिता रानी साहू

राज्य स्त्रोत समूह के सदस्यों के संपर्क नम्बर

1. श्रीमती मधुदानी	9827949517
2. कु. योगिता साहू	9098755362
3. कु. शीतल वर्मा	9993247309
4. श्रीमती सरिता सिंह	9425228133
5. श्रीमती लता टिक्कस	9826186146
6. श्री तारकेश्वर देवांगन	9977800142
7. श्री चमन लाल साहू	9981553854
8. श्री सुमीत गुप्ता	9302305077
9. श्री देवेन्द्र तिवारी	9685870391
10. श्री शिवलाल पाण्डे	9407702348
11. श्री बृजभूषण सोनी	9301024478
12. पुरूषोत्तम सोनी	9993248086
13. अनुपमा नलगंडवार	9893680187
14. सुनील मिश्रा	9407733979

गीत

आओ हम, सृजन करें, इस जीवन का, आनंद का, नौनिहालों का।

1. ऊँचे सपनों के पथ पर,
विश्वासों की डगर पर,
अरमानों की दुनिया में,
करना है हमें लंबा सफर,
हास मिले या त्रास मिले,
सामने सबके मुस्कायें,
सागर की लहरों से,
ऊँचे उठते जायें,

आओ हम, उड़ान भरें, इन बातों का, कल्पनाओं का, इन सपनों का।
आओ हम, सृजन.....

2. शिशु मन जो गढ़ता है,
हर पल उड़ान भरता है,
छोटी सी ऐ जान,
बनोगे अब पहचान,
तुममें है सब ज्ञान,
तुम्हीं भरोगे उड़ान,
तुम्हीं हो विज्ञान,
बनोगे नई पहचान,

आओ हम, सम्मान करें, इस प्यार का, विश्वास का, पहचान का।
आओ हम, सृजन.....

3. चाहत की इस मंजिल पर,
आसमां के तल पर,
चुनौतियों को स्वीकारें हम,
क्षमताओं को पहचाने हम,
आसमान को छू लो,
तुम ओ ज़मीं के तारों,
शिशु मन ये समझो,
क्रान्ति हो जाए बढ़ लो,

आओ हम, कल्याण करें, उल्लासों का, मुस्कानों का, इस बचपन का।
आओ हम, सृजन करें, इस जीवन का, आनंद का, नौनिहालों का।

मधु विवेक दानी